राजस्थान का इतिहास

मध्यकालीन राजस्थान का इतिहास

गंगानगर, हनु, चुरू - बाग
डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़ → वागड़

मेवाड़ का इतिहास

मेवाड़ के प्राचीन नाम :-

मेदपाट, प्राग्वाट, शिवी जनपद

गुहिल वंश

- गुहिल वंश की स्थापना गुहिल ने 566 ई. में की थी।
- गुहिल वंश की 24 शाखाएं थी इनमें मेवाड़ के गुहिल सबसे प्रमुख थे।
- गुहिल शासक सूर्यवंशी हिन्दु थे।

1. बापा रावल

वास्तविक नाम - कालभोज

- यह हारित ऋषि का शिष्य था।
- 734 ई. में मान मोर्य को हराकर चित्तौड़ पर अधिकार कर लेता है।
- राजधानी - नागदा (उदयपुर)
- नागदा में एकलिंग मन्दिर का निर्माण करवाया।

* मेवाड़ के शासक स्वयं को एकलिंग जी का दीवान मानते थे।

- बापा रावल मुस्लिम सेना को हराते हुए गजनी तक चला गया था। तथा वहां के राजा सलीम को हरा दिया तथा अपने भांजे को राजा बनाया।
- रावलपिंडी (Pak) शहर का नाम बापा रावल के कारण पड़ा।

फ्रांस का कमांडर

- सी. वी. वैद्य ने बापा रावल की तुलना चार्ल्स मार्टेल से की है।
- मेवाड़ में सोने के सिक्के प्रारम्भ किये। (115 ग्रेन का सिक्का)

उपाधियां - हिन्दू सूरज
राजगुरु
चक्रवै (चारों दिशाओं को जीतने वाला)

2. अल्लट

अन्य नाम - आलु रावल

- आहड़ को दूसरी राजधानी बनाया।
- आहड़ में वराह मन्दिर का निर्माण करवाया। (विष्णु जी का)
- मेवाड़ में नौकरशाही की स्थापना की।
- अल्लट ने हूण राजकुमारी हरिया देवी से शादी की।

3. जैत्र सिंह (1213-50)

भूताला का युद्ध :- जैत्र सिंह V/S इल्तुतमिश
- जैत्रसिंह जीत गया।

- इल्तुतमिश की भागती हुई सेना ने नागदा को लूट लिया था।
- जैत्रसिंह ने चित्तौड़ को नई राजधानी बनाया।
- जयसिंह सूरी की पुस्तक 'हम्मीर मदमर्दन' भूताला युद्ध की जानकारी देती है।
- जैत्र सिंह का शासन काल मध्यकालीन मेवाड़ का स्वर्णकाल था।

4. रतनसिंह (1302-03)

- इसका छोटा भाई कुम्भकरण नेपाल चला गया तथा वहाँ गुहिल वंश की राणा शाखा का शासन स्थापित किया।

अलाउद्दीन खिलजी का चित्तौड़ पर आक्रमण (1303) :-

कारण :- 1. अलाउद्दीन खिलजी की साम्राज्यवादी नीति
2. चित्तौड़ का व्यापारिक तथा सामरिक महत्व
3. सुल्तान के लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न (समरसिंह – Tax)
4. मेवाड़ का बढ़ता हुआ प्रभाव
5. पद्मिनी की सुन्दरता

पद्मिनी – सिंहल द्वीप (श्रीलंका) की राजकुमारी थी।

पिता - गन्धर्व सेन
माता – चम्पावती

- राघव चेतन नामक ब्राह्मण ने अलाउद्दीन खिलजी को पद्मिनी के बारे में बताया।
- 1303 में चित्तौड़ का पहला साका हुआ। (पद्मिनी ने 1700 स्त्रियों के साथ जौहर कर आत्मोत्सर्ग किया।)

साका = जौहर + केसरिया (पहले जौहर होता था)

- अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया तथा नाम बदलकर खिज्राबाद कर दिया।
- चित्तौड़ अपने बेटे खिज्र खाँ को दे दिया।
- खिज्र खाँ ने गंभिरी नदी पर पुल बनवाया था।
- खिज्र खाँ ने यहाँ पर मकबरे का निर्माण करवाया। इस मकबरे के फारसी लेख में ~~अलाउद्दीन खिलजी को 'धर्म एवं पवित्रता का अवतार' बताया गया है।~~ ईश्वर की छाया तथा संसार का रक्षक बताया गया।
- थोड़े दिनों बाद चित्तौड़ मालदेव सोनगरा को दे दिया गया। मालदेव सोनगरा को मुँहला मालदेव कहा जाता था।

- गौरा और बादल इस साके में लड़ते हुए मारे गये।
- अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ में 30000 लोगो का कत्लेआम करवाया।
- मलिक मुहम्मद जायसी → पुस्तक → पद्मावत (अवधी भाषा, 1540 में लिखी गई)
- जेम्स टॉड तथा मुहणोत नैणसी ने भी इस कहानी को स्वीकार किया।
- सूर्यमल्ल मीसण ने इस कहानी को अस्वीकार किया।
- अमीर खुसरो की पुस्तक 'खजाइन उल फुतुह' (तारीख ए अलाई) में चित्तौड़ आक्रमण का वर्णन किया गया है।
- रावल उपाधि का प्रयोग करने वाला अन्तिम राजा।
- गौरा - बादल का बलिदान हमें यह सिखाता है कि जब देश पर आपत्ति आये तो प्रत्येक व्यक्ति को अपना सर्वस्व न्योछावर कर देश - रक्षा में लग जाना चाहिए

5. राणा हम्मीर (1326-64)

- मालदेव सोनगरा के बेटे बनवीर सोनगरा को हराकर मेवाड़ का शासक बना।
- हम्मीर सिसोदा गाँव का था इसलिए यहाँ से गुहिल वंश की सिसोदिया शाखा का राज्य (शासन) प्रारम्भ हुआ।
- सिसोदा गाँव की स्थापना राहप ने की थी।
- हम्मीर ने राणा उपाधि का प्रयोग किया।
- हम्मीर को 'मेवाड़ का उद्धारक' कहा जाता है।
- कुम्भलगढ़ प्रशस्ति में हम्मीर को 'विषम घाटी पंचानन' कहा गया है।

- रसिक प्रिया में हम्मीर को 'वीर राजा' कहा गया है।
- हम्मीर ने चित्तौड़ में बरबड़ी माता का मन्दिर बनवाया। बरबड़ी माता मेवाड़ के गुहिल वंश की इष्ट देवी है।
(बाण माता मेवाड़ के गुहिल वंश की कुलदेवी है।)

(लक्ष सिंह) 6. लाखा (1382 - 1421)

- जावर (उदयपुर) में चांदी की खान प्राप्त हुई।
- एक बन्जारे ने पिछोला झील (उदयपुर) का निर्माण करवाया।
  ↳ घुमक्कड़ व्यापारी
- पिछोला झील के पास 'नटनी का चबूतरा' है
- कुम्भा हाड़ा नकली बूंदी की रक्षा करते हुए मारा गया।

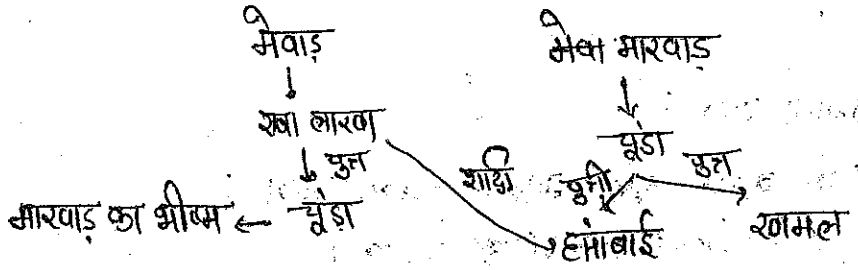

- मारवाड़ के राजा चूंडा की बेटी हंसाबाई की शादी मेवाड़ के राणा लाखा के साथ हुई।
- इस समय लाखा के बेटे चून्डा ने प्रतिज्ञा की कि वह मेवाड़ का अगला राजा नहीं बनेगा। हंसाबाई के बेटे को मेवाड़ का अगला राजा बनाया जाएगा।

☆ चूंडा को 'मेवाड़ का भीष्म' कहा जाता है।
- चूंडा को इस बलिदान के कारण कई विशेषाधिकार दिए गए -

1. मेवाड़ के 16 प्रथम श्रेणी ठिकानों में से चार चूंडा को दिये गये इनमें सलूम्बर (उदयपुर) भी शामिल था।

2. सलूम्बर का सामन्त मेवाड़ का सेनापति होगा।

3. सलूम्बर का सामन्त मेवाड़ के राजा का राजतिलक करेगा।

4. राणा की अनुपस्थिति में सलूम्बर का सामन्त राजधानी संभालेगा।

5. मेवाड़ के सभी कागज-पत्रों पर राणा के साथ सलूम्बर का सामंत भी हस्ताक्षर करेगा।

Q. मेवाड़ के प्रशासन में सलूम्बर का क्या महत्व था – 50 words

* हरावल :- सेना की सबसे अगली टुकड़ी
  चन्दावल :- सेना की पीछे की टुकड़ी

7. मोकल (1421-33)

- हंसाबाई का पुत्र था।
- चूंडा को संरक्षक बनाया गया।
- हंसाबाई के अविश्वास के कारण चूंडा मालवा चला गया।
  (होशंगशाह मालवा का शासक)
- हंसाबाई का भाई रणमल मोकल का संरक्षक बना।
- मोकल ने एकलिंग मन्दिर की चारदीवारी का निर्माण करवाया।
- समिद्धेश्वर मन्दिर (चित्तौड़) का पुनर्निर्माण करवाया।
  पहले इस मन्दिर का नाम त्रिभुवन नारायण मन्दिर था तथा भोज परमार ने इसका निर्माण करवाया था।

- 1433 में जीलवाड़ा (राजसमंद) नामक स्थान पर चाचा, मेरा, महपा पंवार ने मोकल की हत्या कर दी।

  (अहमदशाह – गुजरात)

8. कुंभा (1433-68)

- रणमल कुम्भा का संरक्षक था।
- कुम्भा ने रणमल की सहायता से अपने पिता की हत्या का बदला लिया
- मेवाड़ दरबार में रणमल का प्रभाव बढ़ गया तथा उसने सिसोदियों के नेता राघवदेव की हत्या करवा दी।
  ↳ चूंडा का भाई
- हंसाबाई ने मालवा से चूंडा को वापस बुलाया।
- भारमली की सहायता से रणमल को मार दिया गया।
- रणमल का बेटा जोधा भाग गया तथा बीकानेर के पास काहुनी गाँव में शरण ली।
- चूंडा ने मण्डोर (मारवाड़ की राजधानी) पर अधिकार कर लिया।

आंवल-बांवल की संधि (1453) :- कुम्भा व जोधा

- इस संधि द्वारा मारवाड़ जोधा को वापस दिया गया।
- सोजत (पाली) को मारवाड़ व मेवाड़ की सीमा बनाया गया
- जोधा की बेटी शृंगार कंवर की शादी कुम्भा के बेटे रायमल के साथ की।

सारंगपुर का युद्ध (1437) :- कुम्भा v/s महमूद खिलजी (मालवा)

कारण - महमूद खिलजी ने मोकल के हत्यारों को शरण दी थी।

- कुम्भा जीत गया तथा जीत की याद में चित्तौड़ में विजयस्तम्भ बनवाया।

चम्पानेर की संधि :- (1456) :- कुतुबुद्दीन शाह + महमूद खिलजी
(गुजरात) (मालवा)

उद्देश्य - कुम्भा को हराना।

→ भीलवाड़ा

बदनौर का युद्ध (1457) :- कुम्भा ने दोनों को एक साथ हरा दिया।

- कुम्भा ने सिरोही के सहसमल देवड़ा को हराया।

नागौर

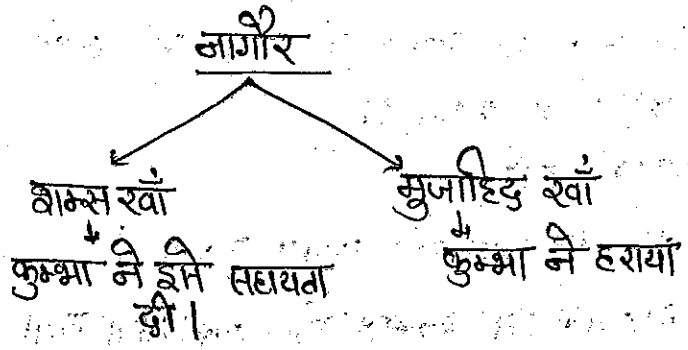

शम्स खाँ → कुम्भा ने इसे सहायता दी।

मुजाहिद खाँ → कुम्भा ने हराया

सांस्कृतिक उपलब्धियां

स्थापत्य कला :-

कुम्भा को राजस्थान की स्थापत्य कला का जनक कहा जाता है।

विजयस्तम्भ :-

अन्य नाम - कीर्ति स्तम्भ
विष्णु ध्वज
गरुड़ ध्वज
मूर्तियों का अजायबघर
भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोष

- यह 9 मंजिला इमारत है।
- लम्बाई - 122 फीट , - चौड़ाई - 30 फीट
- वास्तुकार - जैता , पूंजा , पोमा , नापा
- राजस्थान पुलिस तथा राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का प्रतीक चिह्न है।
- वीर सावरकर के संगठन, 'अभिनव भारत' का प्रतीक चिह्न था।
- राजस्थान की पहली इमारत जिस पर डाक टिकट जारी किया गया।

- जेम्स टॉड ने विजयस्तम्भ की तुलना कुतुबमीनार से की है।
- फर्ग्यूसन ने विजयस्तम्भ की तुलना रोम के टार्जन टावर से की है।
- स्वरूपसिंह ने इसका पुनर्निर्माण करवाया।
- विजयस्तम्भ की 8वीं मंजिल पर कोई मूर्ति नहीं है।
- 3 मंजिल में 9 बार अरबी भाषा में अल्लाह लिखा हुआ।

कीर्तिस्तम्भ प्रशस्ति के लेखक – अत्रि , महेश

किले :-

कवि राजा श्यामलदास जी की पुस्तक 'वीर विनोद' के अनुसार कुम्भा ने मेवाड़ के 84 किलो में से 32 किलो का निर्माण करवाया।

(i) कुम्भलगढ़ : (राजसमंद)

वास्तुकार – मण्डन

- इस किले को 'मेवाड़ - मारवाड़ का सीमा प्रहरी' कहा जाता है।
- इसका सबसे ऊँचा महल कटारगढ़ है जो कुम्भा का निजी आवास था

↓ इसे 'मेवाड़ की आँख' कहा जाता है।

कुम्भलगढ़ प्रशस्ति का लेखक – महेश

- इस प्रशस्ति में कुम्भा को 'धर्म एवं पवित्रता का अवतार' कहा गया है

(ii) अचलगढ़ (सिरोही)

- 1452 में कुम्भा ने इसका पुनर्निर्माण करवाया।

(iii) बासन्ती दुर्ग ⎤→ सिरोही
(iv) मचान दुर्ग ⎦→ मेरो पर नियंत्रण के लिए।
(v) भोमट दुर्ग – भील जनजाति पर नियंत्रण हेतु।

- चित्तौड़गढ़, अचलगढ़ व कुम्भलगढ़ में कुम्भ स्वामी (विष्णु जी) के मन्दिर बनवाये।
- चित्तौड़ में शृंगार-चंवरी मन्दिर बनवाया।
- रणकपुर जैन मन्दिरों का निर्माण 1439 में धरणकशाह ने करवाया।
  ↓
  इनमें - चौमुखा मन्दिर सबसे प्रमुख है।
  ↓
  वास्तुकार - देपाक
  इसमें भगवान आदिनाथ की मूर्ति है।
  इसमें 1444 स्तम्भ है इसलिए इसे स्तम्भों का अजायबघर कहा जाता है।

जैन कीर्तिस्तम्भ :-
- 12 वीं शताब्दी में जीजाशाह (जैन व्यापारी) बघेरवाल ने बनवाया।
- चित्तौड़ के किले में - 7 मंजिला इमारत है।
- इसे आदिनाथ स्मारक भी कहा जाता है। (आदिनाथ को समर्पित)

कुम्भा का साहित्य
- कुम्भा एक अच्छा संगीतज्ञ था। वह वीणा बजाता था।
  संगीत गुरु - सारंग व्यास

पुस्तक -1. सुधा प्रबंध
2. कामराज रतिसार - 7 भाग है
3. संगीतसुधा
4. संगीत मीमांसा
5. संगीत राज - 5 भाग है - पाठ्य रत्न कोष
गीत रत्न कोष
नृत्य रत्न कोष
वाद्य रत्न कोष
रस रत्न कोष

- जयदेव की गीत गोविन्द पर रसिक प्रिया नाम से टीका लिखी।
- कुम्भा ने सारंगदेव की संगीत रत्नाकर पर टीका लिखी।
- कुम्भा - चण्डी शतक पर टीका लिखी।
  ↳ बाणभट्ट
- कुम्भा मेवाड़ी, कन्नड़ व मराठी भाषाएं जानता था।
- कुम्भा ने चार नाटकों की रचना की।

कुम्भा के दरबारी विद्वान :-

1. कान्ह व्यास — पुस्तक → एकलिंग महात्म्य → इससे ज्ञात होता है कि कुंभा वेद, स्मृति, मीमांसा, उपनिषद व्याकरण, साहित्य एवं राजनीति में बड़ा निपुण था।
2. मेहा — Book → तीर्थमाला
3. मण्डन — Books → वास्तुसार
   देवमूर्ति प्रकरण
   राजवल्लभ
   रूपमण्डन - मूर्तिकला के बारे में
   कोदण्डमण्डन - धनुष निर्माण के बारे में
4. नाथा - मण्डन का भाई
   Book - वास्तुमंजरी
5. गोविन्द - मण्डन का बेटा
   Books - द्वार दीपिका
   उद्धार धोरिणी
   कला निधि - मंदिर के शिखर निर्माण की जानकारी
   सार समुच्चय - आयुर्वेद के बारे में जानकारी
6. रमा बाई - कुम्भा की बेटी
   - अपने पिता की तरह संगीत में रूचि रखती थी।
   उपाधि - वागीश्वरी
   - इसे जावर क्षेत्र दिया गया।

7. तिला भट्ट
8. हीरानन्द मुनि - कुम्भा के गुरू, कविराजा की उपाधि कुम्भा ने दी।

9. सोमदेव
10. सोम सुन्दर
11. जयशेखर
12. भुवन कीर्ति
} जैन मुनि

- कुम्भा ने जैनों का तीर्थयात्रा कर हटा दिया था।

उपाधियां :- 1. हिन्दू सुरताण - मुस्लिम सेना को हराने के कारण
2. अभिनव भरताचार्य - संगीत के कारण
3. राणा रासौ - साहित्य के कारण
4. हाल गुरू - पहाड़ी किले जीतने वाला
5. छाप गुरू - धनुष कला के कारण
6. परम भागवत - विष्णु, गुप्त
7. आदि वराह - गुर्जर प्रतिहार

- कुम्भा की हत्या उसके बेटे ऊदा ने कुंभलगढ़ के किले में कर दी थी।

9. रायमल (1473–1509)

- एकलिंग मन्दिर का वर्तमान स्वरूप बनवाया।
- रानी शृंगार कंवर ने घोसुण्डी में बावड़ी का निर्माण करवाया।

घोसुण्डी अभिलेख :- → संस्कृत भाषा, ब्राह्मी लिपि, डी. आर. भण्डारकर ने पढ़ा
2री शताब्दी ईसा पूर्व का अभिलेख।
- राजस्थान में वैष्णव धर्म की जानकारी देने वाला सबसे प्राचीन अभिलेख → भागवत धर्म, संस्कृत भाषा

पृथ्वीराज :-

- रायमल का सबसे बड़ा बेटा
- इसे उड़ना राजकुमार कहा जाता है।
- अपनी रानी तारा के नाम पर अजमेर किले का नाम बदलकर तारागढ़ कर दिया।
- कुम्भलगढ़ के किले में पृथ्वीराज की 12 खम्भों की छतरी है।

जयमल

- यह सोलंकियों के खिलाफ लड़ता हुआ मारा गया।

(संग्रामसिंह) 10. राणा सांगा (1509 – 28) **

- रायमल का पुत्र था।
- अपने भाईयों के साथ विवाद होने पर श्रीनगर (अजमेर) के कर्मचन्द पंवार के पास शरण ली थी।
- रायमल की मृत्यु के बाद सांगा मेवाड़ का शासक बना।

इब्राहिम लोदी (दिल्ली) → खातोली (कोटा) का युद्ध – 1517
इब्राहिम लोदी (दिल्ली) → बाड़ी (धौलपुर) का युद्ध – 1518
महमूद खिलजी II (मालवा) → गागरौन (झालावाड़) का युद्ध – 1519
] सांगा की जीत

* गागरौन का किला उस समय चन्देरी के मेदिनीराय के पास था।

ईडर रियासत (गुजरात)
- भारमल → मुजफ्फरशाह (गुजरात)
- रायमल → सांगा (मेवाड़)

बयाना का युद्ध (16 feb. 1527) :- बाबर v/s सांगा

- सांगा जीत गया
- इस समय किले का रक्षक मेहदी ख्वाजा (→ बाबर का) था।
- बाबर ने मोहम्मद सुल्तान मिर्जा के नेतृत्व मे सेना भेजी।

खानवा का युद्ध* (17 March 1527) :- (वीर विनोद (→ श्यामलदास) के अनुसार 16 March)

- बाबर ने जिहाद की घोषणा की। (धर्मयुद्ध)
- बाबर ने शराब न पीने की कसम खाई।
- बाबर ने मुस्लिम व्यापारियों से तमगा कर हटा दिया।
- सांगा ने राजस्थान के सभी राजाओं को पत्र लिखकर युद्ध में सहायता के लिए बुलाया। (पाती परवन)

आमेर - पृथ्वीराज
मारवाड़ - मालदेव (गांगा (→ राजा) का बेटा)
बीकानेर - कल्याणमल (राजा - जैतसी)
मेड़ता - वीरमदेव
चन्देरी - मेदिनीराय — सलूम्बर - रतनसिंह चूण्डावत
वागड़ - उदयसिंह
देवलिया - बाघसिंह
(चित्तौड़) प्रतापगढ़ ← सादड़ी - झाला अज्जा
मेवात - हसन खाँ मेवाती*
ईडर - भारमल
इब्राहिम लोदी का छोटा भाई महमूद लोदी*

- सांगा युद्ध में घायल हो गया → सादड़ी के झाला अज्जा ने युद्ध का नेतृत्व किया।
- बाबर युद्ध जीत गया तथा उसने गाजी की उपाधि धारण की।

बसवा (दौसा) – यहाँ पर सांगा का इलाज किया गया।

ऐरिच (m.p.) – यहाँ पर सांगा को जहर दे दिया गया।

कालपी (m.p) – यहाँ पर सांगा की मृत्यु हो गई।

माण्डलगढ (भीलवाड़ा) – यहाँ पर सांगा की छतरी है।

खानवा युद्ध के कारण

1. बाबर ने सांगा पर वचन भंग का आरोप लगाया।
2. महत्वाकांक्षाओं का टकराव।
3. राजपूत - अफगान मैत्री। (हसन खाँ मेवाती, महमूद लोदी)
4. सांगा ने सल्तनत के क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया।

सांगा की हार के कारण

1. सांगा की सेना में एकता नहीं थी। सांगा की सेना अलग-2 सेनापतियों
2. के नेतृत्व में लड़ रही थी।
2. बाबर का तोपखाना।
3. बाबर की तुलगुमा युद्ध पद्धति।
4. सांगा ने बाबर को बयाना के बाद युद्ध की तैयारी का समय दे दिया।
5. सांगा स्वयं युद्ध के मैदान में उतर गया।
6. मुगल सेना घोड़ों का प्रयोग करती थी जबकी राजपूत हाथियों का प्रयोग करते थे।
7. मुगल सेना के पास राजपूतों की तुलना में हल्के हथियार थे।
8. सांगा के साथ उसके साथियों ने विश्वास घात किया था तथा बाबर से मिल गये थे। जैसे रायसीन (m.p) का सलहदी तंवर तथा नागौर के खानजादे मुसलमान।

खानवा युद्ध का महत्व / परिणाम :-

1. अफगानों तथा राजपूतों को हराने के बाद बाबर का भारत पर शासन करना आसान हो गया।
2. यह अन्तिम युद्ध था जिसमें राजस्थान के राजाओं में एकता देखी गई।
3. सांगा अन्तिम राजपूत राजा था जिसने दिल्ली को चुनौती देने का प्रयास किया।
4. सांगा के बाद बड़े हिन्दु राजा नहीं रहे जिससे हिन्दु संस्कृति को नुकसान हुआ।
5. राजपूतों की सामरिक कमजोरियां उजागर हो गई थी।
6. इस युद्ध के बाद मुगलों की राजपूतों के प्रति भविष्य की नीति निर्धारित हो गई थी। तथा अकबर ने युद्ध के स्थान पर मित्रता की नीति अपनाई।

उपाधियां :- हिन्दू पत
सैनिकों का भग्नावशेष (80 घाव)

- बाबरनामा के अनुसार सांगा के अधीन 7 राजा, 9 राव और 104 सरदार थे।
- महमूद खिलजी-II को पकड़ने के कारण सांगा ने हरिदास-चारण को 12 गाँव दिये।
- सांगा के बड़े बेटे भोजराज की शादी मीराबाई के साथ हुई थी।
- सांगा के बाद रतनसिंह मेवाड़ का राजा बना। उसकी मृत्यु के बाद विक्रमादित्य को शासक बनाया गया।

11. विक्रमादित्य (1531-36)

- इसकी माता कर्मावती इसकी संरक्षिका बनी।
- 1533 में गुजरात के बहादुरशाह ने मेवाड़ पर आक्रमण किया, रानी कर्मावती ने रणथम्भौर किला दिया तथा संधि कर ली।
- 1534-35 में बहादुरशाह ने पुनः आक्रमण कर दिया।
- कर्मावती ने हुमायूँ को राखी भेजकर सहायता मांगी।
- इससमय चित्तौड़ का दूसरा साका हुआ।
- रानी कर्मावती ने जौहर किया।
- देवलिया के बाघसिंह के नेतृत्व में केसरिया किया गया।
- बनवीर को चित्तौड़ का प्रशासक बनाया गया। बनवीर उदना राजकुमार पृथ्वीराज की दासी का बेटा था।
- बनवीर ने विक्रमादित्य की हत्या कर दी।
- पन्नाधाय ने अपने बेटे—चंदन का बलिदान देकर उदयसिंह को बचा लिया वह उदयसिंह को लेकर कुम्भलगढ़ के आशादेवपुरा के पास—चली गई।

12. उदयसिंह (1537-72)

- 1540 में मावली (उदयपुर) के युद्ध में बनवीर को हराकर शासक बना।
- 1559 में उदयपुर की स्थापना की। यहाँ पर उदयसागर झील का निर्माण करवाया।
- 1567-68 में अकबर का मेवाड़ पर आक्रमण।
- उदयसिंह गिरवा की पहाड़ियों में—चला गया।
- जयमल व पत्ता ने किले का मोर्चा संभाला।
- इस समय चित्तौड़ का तीसरा साका हुआ।
- जयमल ने कल्ला राठौड़ के कंधों पर बैठकर युद्ध किया था।
- कल्ला राठौड़ को—चार हाथों वाला देवता कहा जाता है।

- अकबर की बंदूक का नाम – संग्राम
- अकबर ने चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया तथा ३०००० लोगों का कत्ले आम करवाया।
- फूलकंवर (पत्ता की पत्नी) के नेतृत्व में जौहर किया गया।
- अकबर जयमल तथा पत्ता की वीरता से प्रभावित हुआ तथा इन दोनों की मूर्तियां आगरा के किले में लगवाई।
- फ्रांसीसी यात्री बर्नियर (ट्रेवल्स इन द मुगल एम्पायर) ने इसका उल्लेख किया है।
- बीकानेर के जूनागढ़ किले में भी इन दोनों की मूर्तियां है।
- 1572 में होली के दिन गोगून्दा में मृत्यु हो गई। वहीं पर इसकी छतरी बनी हुई है।
- उदयसिंह ने अपने बड़े बेटे प्रताप को राजा नहीं बनाया बल्कि छोटे बेटे जगमाल को राजा बनाया।

13. महाराणा प्रताप (1572-97) (25 वर्ष)

जन्म – 9 मई 1540 (कुम्भलगढ़ के किले में)
माता – जयवन्ता बाई सोनगरा
रानी – अजब दे पंवार
बचपन का नाम – कीका

- प्रताप का पहला राजतिलक 28 Feb 1572 को गोगून्दा में हुआ था (होली)
- सलूम्बर के कृष्णदास चूण्डावत ने प्रताप का राजतिलक किया था।
- प्रताप ने कुम्भलगढ़ में अपना विधिवत राजतिलक करवाया।
- इस समारोह में मारवाड़ का चन्द्रसेन उपस्थित था।
- अकबर ने प्रताप को समझाने के लिए चार दूत भेजे थे –

1. जलाल खां कोरची – 1572

1573 ←
2. मानसिंह
3. भगवन्तदास – आमेर का राजा
4. टोडरमल

मोलेला लोसिंग

हल्दीघाटी (→ राजसमंद) का युद्ध (18 June 1576) :-

अकबर के सेनापति – मानसिंह
आसफ खाँ

प्रताप की तरफ से – रामशाह तोमर (ग्वालियर)
कृष्णदास चूण्डावत
* हाकिम खाँ सूर
** पूंजा भील

- युद्ध में चेतक के घायल होने पर प्रताप युद्ध से बाहर चला गया। झालामान (बीदा) ने युद्ध का नेतृत्व किया।
- मिहतर खाँ ने युद्ध में अकबर के आने की गलत सूचना दी थी।
- मानसिंह प्रताप को अधीनता स्वीकार नहीं करवा पाता है।
- अकबर ने मानसिंह तथा आसफ खाँ का दरबार में आना बन्द कर दिया
- चेतक छतरी - बलीचा (राजसमंद)

- अबुल - फजल → खमनौर का युद्ध] बताया
बदायूंनी — गोगून्दा का युद्ध
↳ इस युद्ध में उपस्थित था

जेम्स टॉड — मेवाड़ की थर्मोपोली

आदर्शी लाल श्रीवास्तव – बादशाह - बाग का युद्ध

- 1577 में अकबर ने उदयपुर पर आक्रमण किया तथा नाम बदलकर मुहम्मदाबाद कर दिया।

कुम्भलगढ़ का युद्ध :-

मुगल सेनापति शाहबाज खान ने कुम्भलगढ़ पर तीन आक्रमण किये थे (1577, 78, 79)

शेरपुर घटना :-

1580 में अमरसिंह मुगल सेनापति रहीम जी की बेगमों को गिरफ्तार कर लेता है लेकिन प्रताप ने उन्हें ससम्मान वापस भेजा।

दिवेर (→ राजसमंद) का युद्ध (1582) :-

- इस युद्ध में प्रताप की विजय हुई।
- अमरसिंह ने मुगल सेनापति सुल्तान खान को मार दिया।
- इस युद्ध में प्रताप के साथ डूंगरपुर, बांसवाड़ा तथा ईडर रियासत भी थी।
- जेम्स टॉड ने इस युद्ध को मेवाड़ का मैराथन कहा है

- 1585 में जगन्नाथ कछवाह ने प्रताप पर अन्तिम आक्रमण किया था।
- प्रताप ने चावण्ड (→ उदयपुर) को अपनी नई राजधानी बनाया।
- प्रताप ने चित्तौड़गढ़ व माण्डलगढ़ को छोड़कर शेष मेवाड़ जीत लिया।
- चावण्ड में चामुण्डा माता का मन्दिर तथा महल का निर्माण करवाया।

** मेवाड़ की चित्रकला का प्रारम्भ चावण्ड से हुआ था।

मुख्य चित्रकार - नासिरुद्दीन

दरबारी विद्वान :-

1. चक्रपाणि मिश्र —पुस्तक→ राज्याभिषेक
   मुहूर्तमाला
   विश्व वल्लभ – बगीचों (उद्यान विज्ञान) की जानकारी
2. हेमरत्न सूरि – गौरा - बादल री चौपाई
3. रामा सांदू
4. माला सांदू

(चूलिया गाव में)

- भामाशाह तथा ताराचन्द नामक दो भाइयों ने प्रताप की आर्थिक सहायता की। 25 लाख रुपये तथा 12 हजार अशर्फी दिये थे।
  ↳ सोने के सिक्के
- भामाशाह को प्रताप ने प्रधानमंत्री बनाया।
- प्रताप ने साडुलनाथ त्रिवेदी को मंडेर (मेवाड़) की जागीर दी थी।
  (1588 के उदयपुर शिलालेख के अनुसार)
- 19 जनवरी 1597 को चावण्ड में प्रताप की मृत्यु हो गई।
- बांडोली में प्रताप की 8 खम्भों की छतरी है।

हल्दीघाटी युद्ध का महत्व :-

1. यह युद्ध साम्राज्यवादी शक्ति के खिलाफ प्रादेशिक स्वतन्त्रता का युद्ध था।
2. प्रताप कम संसाधनों के बावजूद अकबर से लड़ा इससे जनता में आशा व नैतिकता का संचार हुआ।
3. प्रताप ने मेवाड़ की साधारण जनता व जनजातियों में राष्ट्रवादी की भावनाओं का संचार किया।
4. हल्दीघाटी आज भी राष्ट्रवाद का प्रेरणा स्रोत है।
5. राष्ट्रीय आन्दोलन में युद्ध ने प्रेरणा स्रोत का कार्य किया।

हाथी

प्रताप	अकबर
↓	↓
लूणा	मरदाना (मानसिंह)
रामप्रसाद (पीरप्रसाद)	गजमुक्ता

Q प्रताप के व्यक्तित्व की मुख्य विशेषताएँ बताइये ?

14. अमरसिंह प्रथम (1597-1620)

मुगल - मेवाड़ संधि (5 Feb 1615)

- मुगल बादशाह जहाँगीर तथा मेवाड़ के शासक अमरसिंह प्रथम के मध्य हुई।
- युवराज कर्णसिंह के दबाव के कारण अमरसिंह ने संधि की थी।
- शुभकरण व हरिदास संधि का प्रस्ताव लेकर गये थे।
- मुगलों की तरफ से खुर्रम ने संधि की थी।

शर्तें :-

1. मेवाड़ का राणा मुगल दरबार में नहीं जाएगा। मेवाड़ का युवराज मुगल दरबार में जाएगा।
2. मेवाड़ मुगलों को 1000 घुड़सवारों सैनिकों की सहायता देगा।
3. चित्तौड़ का किला मेवाड़ को वापस दिया जाएगा लेकिन मेवाड़ उसका पुनर्निर्माण नहीं करवायेगा।
4. मेवाड़ के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित नहीं किये जाएँ।

संधि का महत्व :-

1. सांगा व प्रताप के समय से चली आ रही स्वतंत्रता की भावना का पतन हुआ।
2. संधि के कारण शांति व्यवस्था स्थापित हुई तथा कलात्मक (सांस्कृतिक) गतिविधियों को बढ़ावा मिला।

- युवराज कर्णसिंह मुगल दरबार में गया था जहाँगीर ने उसे 5000 का मनसबदार बनाया।
- जहाँगीर ने अमरसिंह तथा कर्णसिंह की मूर्तियां आगरा के किले में लगवाई।
- अमरसिंह इस संधि से निराश था तथा नौ-चौकी नामक स्थान पर जाकर रहने लग गया

- इसी स्थान पर राजसमंद झील बनाई गई थी।

15. कर्णसिंह

- उदयपुर में जगमंदिर महल (पिछोला झील) का निर्माण शुरू करवाया।
- खुर्रम विद्रोह के दौरान इन्हीं महलों में रुका था।
- उदयपुर में कर्णविलास व दिलखुश महल बनवाये।

16. जगतसिंह प्रथम

- उदयपुर में जगमन्दिर महलों का निर्माण पूरा करवाया।
- उदयपुर में जगदीश मन्दिर (जगन्नाथ राय मन्दिर) का निर्माण करवाया।
- इसे सपने में बना मन्दिर कहा जाता है।
- जगन्नाथ राय प्रशस्ति का लेखक - कृष्णभट्ट
- उदयपुर में नौजू बाई का मन्दिर बनवाया। (नौजू बाई - धाय माँ)
- जगतसिंह दानवीरता के लिए प्रसिद्ध था।

17. राजसिंह (1652 - 80)

- चित्तौड़ का पुनर्निर्माण शुरू करवा दिया। इस प्रकार शाहजहाँ के खिलाफ आक्रामक नीति अपनाई।
- मुगल उत्तराधिकार संघर्ष में औरंगजेब का समर्थन किया था।
- इस समय इसने कई मुगल क्षेत्र जीत लिये थे। (टीका दौड़)
- औरंगजेब के जीजया कर का विरोध किया।
- औरंगजेब के खिलाफ हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियों की रक्षा की।
- जोधपुर के अजीतसिंह को औरंगजेब के खिलाफ समर्थन दिया था। इसे 'राठौड़ - सिसोदिया गठबंधन' कहा जाता है।
- औरंगजेब के खिलाफ हिन्दू राजकुमारियों की रक्षा की।

उदा. रूपनगढ़ (किशनगढ़) की राजकुमारी चारुमती से शादी की थी।

हाड़ी रानी सहल कंवर :-

- सलुम्बर के सामन्त रतन सिंह चूण्डावत की रानी थी।
- अपने पति के निशानी मांगने पर सिर काट कर दे दिया।

मेघराज मुकुल की कविता — सैनाणी

राजसिंह की सांस्कृतिक उपलब्धियां :-

मंदिर - 1. श्रीनाथ मन्दिर - सिहाड़ (नाथद्वारा)
2. द्वारिकाधीश मन्दिर - कांकरोली
3. अम्बा माता मन्दिर - उदयपुर

- श्री नाथ जी की मूर्ति 1672 में गोविन्द दास व दामोदर दास मथुरा से लाये थे।

झील :- 1. राजसमन्द झील
2. जाना सागर तालाब ⎫
3. त्रिमुखी बावड़ी ⎭ ⇒ उदयपुर

राजनगर + कांकरोली

दरबारी विद्वान :-

1. रणछोड़ भट्ट तैलंग — राज प्रशस्ति
- अमर काव्य वंशावली
↓
इन दोनों में प्रताप के भाई शक्तिसिंह का वर्णन है।

- अमर काव्य वंशावली में चेतक का भी वर्णन है।

2. किशोर दास — राज प्रकाश
3. सदाशिव भट्ट — राज रत्नाकर

उपाधियां - हाइड्रोलिक रूलर - पेयजल व्यवस्था के कारण
- विजयकटकातु - सेना जीतने के कारण

राज प्रशस्ति :-

- 25 पत्थरों पर लिखी गई है।
- संस्कृत का सबसे बड़ा शिलालेख है (भारत का)
- अकाल राहत कार्यों की जानकारी देती है।
- बापा रावल से लेकर राजसिंह तक के राजाओं के नाम मिलते है
- मुगल - मेवाड़ संधि की जानकारी मिलती है।

Q राज - प्रशस्ति — 50 words

18. अमरसिंह II

उदयपुर
देबारी समझौता (1708)

अमरसिंह II (मेवाड़) | अजीतसिंह (मारवाड़) | सवाई जयसिंह (आमेर)

- यह समझौता मुगल बादशाह बहादुरशाह प्रथम के खिलाफ था।

समझौते की शर्तें :-

- अजीतसिंह को मारवाड़ तथा सवाई जयसिंह को आमेर का राजा बनाने में सहायता की जाएगी।
- अमरसिंह II की बेटी चन्द कंवर की शादी सवाई जयसिंह से की जाएगी तथा उनके बेटे को आमेर का अगला राजा बनाया जाएगा

19. संग्रामसिंह -II

- उदयपुर में सहेलियों की बाड़ी का निर्माण करवाया।
- सीसारमा में वैद्यनाथ मन्दिर का निर्माण करवाया

वैद्यनाथ प्रशस्ति का लेखक - रूप भट्ट

20. जगतसिंह -II

हुरड़ा (→ भीलवाड़ा) सम्मेलन - 17 July 1734

- यह मराठों के खिलाफ राजस्थान के राजाओं का सम्मेलन था।
- वर्षा ऋतु समाप्त होने के बाद रामपुरा (कोटा) में मराठों के खिलाफ युद्ध की बात की गई।
- आपसी मतभेदों के कारण सम्मेलन असफल रहा।
- खानवा युद्ध के बाद राजपूतों ने पहली बार किसी दूसरी शक्ति के खिलाफ संगठित होने की कोशिश की।

भाग लेने वाले -

जगतसिंह ~~प्रथम~~ II - अध्यक्ष
सवाई जयसिंह - आमेर
अभयसिंह - जोधपुर
बख्तसिंह - नागौर
दलेल सिंह - बूंदी
दुर्जन साल - कोटा
जोरावर सिंह - बीकानेर
गोपाल पाल - करौली
राजसिंह - किशनगढ़

- उदयपुर में जगतनिवास महल (पिछोला) का निर्माण करवाया।

नेकराम —BOOK→ जगतविलास

21. भीमसिंह

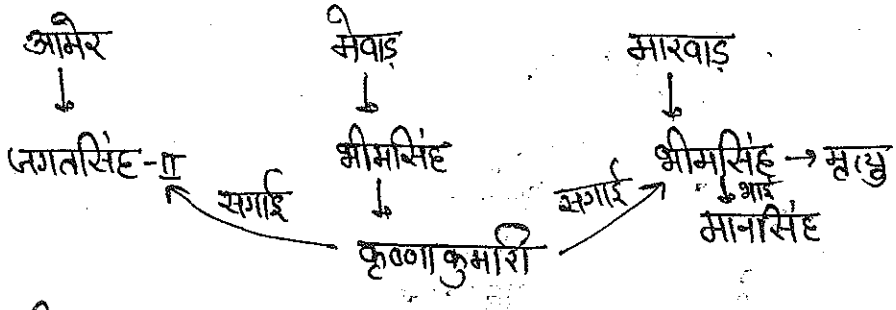

गिंगोली / परबतसर का युद्ध (1807) :- जगतसिंह-II v/s मानसिंह

- अजीत सिंह चूण्डावत व अमीर खाँ पिंडारी (टोंक) के कहने पर कृष्णा कुमारी को जहर दे दिया गया।

Q. कृष्णाकुमारी विवाद – 50 words

- भीमसिंह ने 13 Jan 1818 को अंग्रेजो से संधि कर ली।

मारवाड़ के राठौड़ वंश का इतिहास

↳ सूर्यवंशी हिन्दू

राठौड़ों की उत्पत्ति

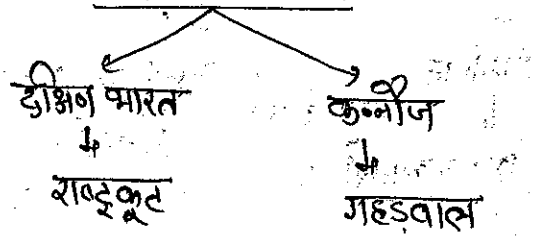

1. राव सीहा

- संस्थापक
- पालीवाल ब्राह्मणों की सहायता के लिए 1240 में कन्नौज से मारवाड़ आया।

राजधानी - खेड़ (बाड़मेर)

छतरी - बीठू (पाली)

2. धूहड़

- अपनी कुल देवी नागणेची माता की मूर्ति कर्नाटक से लेकर आया।

मन्दिर - नागाणा (बाड़मेर)

3. मल्लीनाथ

राजधानी - मेवानगर (बाड़मेर) (नाकोड़ा)

- मल्लीनाथ जी राजस्थान के लोक देवता है।
- मल्लीनाथ जी के कारण बाड़मेर क्षेत्र को मालाणी कहा जाता है।
- गणगौर पर गीदोली का गीत गाया जाता है।

4. चूंडा

- प्रतिहार (इन्दा शाखा) शासकों ने चूंडा से अपनी राजकुमारी की शादी की तथा मण्डोर दहेज में दिया।
- इसके बाद राजधानी मण्डोर को बनाया।

5. जोधा

- 1459 में जोधपुर की स्थापना की।
- यहां मेहरानगढ़ किले का निर्माण करवाया।
- इस किले की नींव करणी माता ने लगायी।
- जोधा के बेटे बीका ने बीकानेर की स्थापना की।

6. मालदेव (1531 – 62)

- अपने पिता गांगा की हत्या करके राजा बना था।
- मालदेव जब राजा बना तब उसके पास दो परगने – सोजत, जोधपुर।
- बाद में मालदेव ने 52 युद्धों से 58 परगने जीते थे।

पाहेबा / साहेबा का युद्ध – 1541 :- जैतसी (बीकानेर) v/s मालदेव

- मालदेव युद्ध जीत गया।
- जैतसी लड़ता हुआ मारा गया।

- जैतसी का बेटा कल्याणमल शेरशाह सूरी के पास दिल्ली चला गया।
- मालदेव ने मेड़ता पर अधिकार कर लिया। मेड़ता का राजा वीरमदेव शेरशाह सूरि के पास दिल्ली चला गया।

हुमायूँ - मालदेव संबंध

शेरशाह सूरि से हारने के बाद जब हुमायूँ राजस्थान से होकर जा रहा था तब उसने जोगीतीर्थ नामक स्थान से मालदेव के पास सहायता के लिए तीन दूत भेजे - अतका खाँ
मीर समंद
रायमल सोनी

मालदेव ने सकारात्मक उत्तर दिया तथा हुमायूँ को बीकानेर देने का वादा किया लेकिन हुमायूँ मालदेव पर विश्वास नहीं करता तथा अपने पुस्तकालय अध्यक्ष मुल्ला सुर्ख के कहने पर सिंध की तरफ चला जाता है।

यदि हुमायूँ व मालदेव थोड़ी समझदारी दिखाते तो शेरशाह सूरि के खिलाफ मुगल - राजपूत सम्बन्ध बना सकते थे तथा भारत से अफगान सत्ता को समाप्त कर सकते थे। कालान्तर में अकबर ने मुगल - राजपूत सम्बन्ध स्थापित किये थे, वे इसी समय शुरू हो जाते है।

गिरी - सुमेल का युद्ध (1544) :- मालदेव v/s शेरशाह सूरि
जैतारण
कल्याणमल (बीकानेर)
वीरमदेव (मेड़ता)

- जलाल खाँ जलवानी की सहायता से शेरशाह ने युद्ध जीत लिया।
- शेरशाह की चालाकी के कारण मालदेव युद्ध से हट गया।
- जैता तथा कुम्पा (मालदेव के सेनापति) ने शेरशाह के साथ लड़ाई की।
- जीतने के बाद शेरशाह ने कहा था - मुट्ठी भर बाजरे के लिए हिन्दुस्तान की बादशाहत खो देता
- शेरशाह ने जोधपुर पर अधिकार कर लिया तथा खवास खाँ

- मालदेव सिवाणा चला गया।
  ↳ सिवाणा को मारवाड़ के राठौड़ो की शरणस्थली कहा जाता है।
- थोड़े दिनों बाद मालदेव ने जोधपुर पर वापस अधिकार कर लिया।

- शेरशाह के साथ सम्बन्धों में मालदेव कुटनीतिक गलतियां करता है। उसने कल्याणमल व वीरमदेव को शेरशाह के पास जाने का अवसर दिया अन्यथा वह शेरशाह के खिलाफ राठौड़ों का गठबन्धन बना सकता था।

यदि वह शेरशाह की चालाकी में नहीं आता तो गिरी-सुमेल का युद्ध जीत सकता था।

Q मालदेव के हुमायूं व शेरशाह के साथ सम्बन्धों की व्याख्या कीजिए — 100 words

उमादे

- जैसलमेर के राजा लूणकरण भाटी की बेटी थी
- मालदेव की रानी थी।
- भारमली नामक दासी के कारण मालदेव से नाराज हो गई थी इसलिए इसे रूठी रानी कहा जाता है।

{जला - बारात का डेरा देखने जाते समय महिलाओं द्वारा गाया जाने वाला गीत}

मालदेव के दरबारी विद्वान

1. ईश्वरदास — Books → हाला झाला री कुण्डलियां (दोहे) (सूर सतसई) — 700
   ईवीयाण
   हरिरस

2. आशानन्द जी ⟶ 1. उमादे भटियाणी रा कवित
↓ 2. बाघा भारमली रा दूहा
पाहेबा युद्ध मे
भाग लिया

- मालदेव ने जोधपुर में चार दीवारी का निर्माण करवाया।

- मेड़ता
  रीयां (नागौर)
  सोजत
  पोकरण
  } इनमें किलो का निर्माण करवाया।

उपाधियां :- हिन्दु बादशाह
हशमत वाला राजा (वैभव शाली राजा)

- मालदेव ने अपने बड़े बेटे राम व उदयसिंह को राजा नही बनाया बल्कि छोटे बेटे चन्द्रसेन को राजा बनाया इसलिए राम व उदयसिंह अकबर के पास चले गये।

7. चन्द्रसेन

- अकबर ने राम की सहायता के लिए जोधपुर पर आक्रमण किया तो चन्द्रसेन भाद्राजूण (जालौर) चला गया।
- चन्द्रसेन ने अकबर के नागौर दरबार (1570) में भाग लिया लेकिन वहाँ अकबर को अपने भाई उदयसिंह के पक्ष मे देखकर अकबर से बिना मिले ही चला गया था।
- अकबर ने भाद्राजूण पर आक्रमण किया तो चन्द्रसेन सिवाणा चला जाता है।
- चन्द्रसेन ने आजीवन संघर्ष किया एवं अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की।
- 1581 में सारण की पहाड़ियों में सिंचियाई (पाली) नामक स्थान पर चन्द्रसेन की मृत्यु हो गई।

- अकबर ने बीकानेर के रायसिंह को 1572-74 तक जोधपुर का प्रशासक नियुक्त किया था।

उपाधियां - 1. मारवाड़ प्रताप
2. प्रताप का अग्रगामी
3. मारवाड़ का भूला बिसरा राजा

चन्द्रसेन व प्रताप में समानताएं

1. दोनों ने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की।
2. दोनों ने छापामार युद्ध प्रणाली से संघर्ष किया।
3. दोनों को अपने भाइयों के विरोध का सामना करना पड़ा।
   जैसे प्रताप को जगमाल का तथा चन्द्रसेन को राम व उदयसिंह का
4. दोनों के अधिकांश राज्य पर अकबर ने कब्जा कर लिया था।
5. केवल थोड़ी सी भूमि के बल पर उन्होंने अकबर से संघर्ष किया
6. दोनों को अपने राज्य के बाहर शरण लेनी पड़ी।
   जैसे प्रताप को कुम्भलगढ़ के मैदान में (बांसवाड़ा) तथा चन्द्रसेन को डूँगरपुर के महारावल आसकरण के पास।

असमानताएं :-

1. प्रताप का मुगल विरोध उसके राज तिलक के साथ शुरू हो गया था जबकि चन्द्रसेन का मुगल विरोध नागौर दरबार के बाद शुरू हुआ था।
2. प्रताप का मुगल विरोध उसकी मृत्यु के बाद उसके बेटे अमरसिंह ने जारी रखा जबकि चन्द्रसेन का मुगल विरोध उसकी मृत्यु के साथ समाप्त हो गया।
3. प्रताप ने हल्दीघाटी व दिवेर में स्वयं अकबर से आमने-सामने की लड़ाई लड़ी जबकि चन्द्रसेन ऐसा नहीं कर पाया था।
4. प्रताप ने चावण्ड में स्थायी केन्द्र स्थापित किया जबकि चन्द्रसेन ऐसा कोई केन्द्र नहीं बना पाया।
5. प्रताप ने मेवाड़ में राष्ट्रवाद की भावना का संचार किया जबकि चन्द्रसेन मारवाड़ में ऐसा नहीं कर पाया।

इन असमानताओं के बावजूद चन्द्रसेन मारवाड़ का प्रताप है क्योंकि - 1. चन्द्रसेन की भौगोलिक परिस्थितियां प्रताप की तुलना में प्रतिकूल थी।

2. प्रताप को भामाशाह व ताराचन्द जैसे दानवीर साथी मिल गये थे जबकि चन्द्रसेन को शुरू से अन्त तक जन-धन की कमी थी।

Q चन्द्रसेन को मारवाड़ का प्रताप कहा जाता है, इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं?

8. मोटा राजा उदयसिंह

नागौर दरबार (1570)

अकबर ने अकाल राहत कार्य शुरू करने के उद्देश्य से नागौर में दरबार का आयोजन किया लेकिन उसका वास्तविक उद्देश्य राजस्थान के राजाओं को अधीनता स्वीकार करवाना था।

कल्याणमल (बीकानेर)
हरराज (जैसलमेर)
उदयसिंह (चन्द्रसेन का भाई)
} ⇒ इस दरबार में अकबर की अधीनता स्वीकार की थी।

नागौर दरबार का महत्व :-

1. अकबर ने कूटनीति के माध्यम से बिना लड़े ही राजस्थान के राजाओं की अधीनता स्वीकार करवाई।
2. राजस्थान के राजाओं का स्पष्ट विभाजन हो गया था
   i) मुगल सहयोगी
   ii) मुगल विरोधी
3. प्रताप व चन्द्रसेन को छोड़कर मुगल आश्रित राजाओं की श्रृंखला प्रारम्भ हुई। जैसे मानसिंह, रायसिंह (बीकानेर) (आमेर)

4. युद्ध समाप्त होने से शांति व्यवस्था स्थापित हुई जिससे कलात्मक गतिविधियों को बढ़ावा मिला।

Q नागौर दरबार - 50 words

अकबर ने इस समय नागौर में शुक्र तालाब का निर्माण करवाया।

- मोटा राजा उदयसिंह ने अपनी बेटी मानी बाई (जोधा बाई) की शादी जहांगीर से की। जहांगीर ने इसे जगत गोंसाई की उपाधि दी। खुर्रम (शाहजहाँ) इसका बेटा था।

कल्ला रायमलोत

- मोटा राजा उदयसिंह के भाई रायमल का बेटा था।
- सिवाणा का सामन्त था।
- 1590 में अकबर के खिलाफ सिवाणा में इसरा साका किया।
- पृथ्वीराज राठौड़ (बीकानेर) ने इसके मरसिये लिखे थे।

9. गजसिंह

- अनारां बेगम के कहने पर अपने छोटे बेटे जसवंत सिंह को जोधपुर का राजा बनाया तथा बड़े बेटे अमरसिंह को नागौर का राजा बनाया गया।

अमरसिंह राठौड़ :- नागौर का राजा

मतीरे री राड़ (1644) :- अमरसिंह (नागौर) v/s कर्णसिंह (बीकानेर)

- अमरसिंह राठौड़ ने शाहजहाँ के दरबार में उसके मीरबख्शी सलावत खां को मार दिया था।
- अमरसिंह राठौड़ को कटार का स्वामी कहा जाता है।
- नागौर में इसकी 16 खम्भों की छतरी है।

मरसिये :- युद्ध में बहादुरी पूर्वक लड़ते हुए मारे जाने पर उसकी वीरता पर लिखे जाने वाले दोहे

आमेला - दुल्हन पक्ष द्वारा बारात का स्वागत करना

- अमरसिंह की हत्या उसके साले अर्जुनसिंह गौड़ ने की थी।
- आगरा किले में अमरसिंह दरवाजा है जिसे शाहजहां ने बंद करवा दिया था। कालान्तर में अंग्रेज अवसर जॉर्ज स्टील ने इसे खुलवाया।

यवन - गैर हिन्दु
काफिर - गैर मुस्लिम

10. जसवन्तसिंह

- धरमत के युद्ध से वापस आने पर इनकी हाडी रानी जसवन्त दे ने किले के दरवाजे बंद कर दिये थे।
- इसने खजुआ के युद्ध में भी भाग लिया था।
- औरंगजेब ने इसे काबुल का गवर्नर बना दिया था।
- काबुल में जमरूद का थाना नामक स्थान पर मृत्यु हो गई। (1678)
- इसकी मृत्यु पर औरंगजेब ने कहा था "आज कुफ्र का दरवाजा टूट गया"।
  ↳ धर्म का विरोध
- जसवन्तसिंह के बेटे पृथ्वीसिंह ने वीर के साथ लड़ाई की थी। औरंगजेब ने उसे जहरीली ड्रेस देकर मरवा दिया।
- जसवन्तसिंह — Books → * आनन्द विलास
  * भाषा भूषण
  प्रबोध-चन्द्रोदय
  अपरोक्ष सिद्धान्तसार
- जोधपुर में राई का बाग महल का निर्माण करवाया

दरबारी विद्वान :-

1). मुहणोत नैणसी — Books → 1. नैणसी री ख्यात
↳ यह राजस्थान का पहला ख्यात ग्रंथ है।
2. मारवाड़ रा परगना री विगत — राजपत्र
↳ इस पुस्तक को मारवाड़ का गजट कहा जाता है।
→ इसमें जनगणना का उल्लेख है।

- मैणसी ने अपने भाई सुन्दरदास के साथ आत्महत्या कर ली थी। (कर्जे के कारण)
- मुंशी देवी प्रसाद ने मैणसी को राजपूताने का अबुल-फजल कहा है।

- औरंगजेब ने जसवन्तसिंह के बेटे अजीतसिंह व दलथम्भन को दिल्ली में रूपसिंह राठौड़ की हवेली में नजरबंद कर दिया।
- इन्द्रसिंह राठौड़ (नागौर) को 36 लाख रुपये लेकर जोधपुर का शासक बना दिया।

11. अजीतसिंह

- दुर्गादास राठौड़, मुकुन्द दास खींची व गौरा की सहायता से अजीतसिंह को लेकर जोधपुर आ जाता है।
- गौरा को मारवाड़ की पन्नाधाय कहा जाता है।
- मारवाड़ के राष्ट्रगीत घूंसो में गौरा का नाम लिया जाता था।
- जोधपुर में गौरा की छतरी है।
- औरंगजेब ने नकली अजीतसिंह का नाम मोहम्मदीराज रखा तथा उसे अपनी बेटी जेबुन्निसा को दे दिया।
- दुर्गादास राठौड़ ने अजीतसिंह को कालिन्द्री (सिरोही) में जयदेव पुरोहित के पास रखा।
- दुर्गादास राठौड़ ने मेवाड़ के राजसिंह के साथ मिलकर औरंगजेब के बेटे अकबर से विद्रोह करवा दिया। औरंगजेब की चालाकी के कारण अकबर को शम्भाजी के पास दक्षिण भारत में जाना पड़ा।
- अकबर के बेटे-बेटी बुलन्द अख्तर व सफीयतुनिशा को दुर्गादास ने अपने पास रखा। कालान्तर में ईश्वर दास नागर के कहने पर दुर्गादास ने इन्हें औरंगजेब को सौंप दिया था।

- 1708 में अजीतसिंह जोधपुर का राजा बना।
- दुर्गादास के नेतृत्व में अजीतसिंह को राजा बनाने के लिए 30 वर्ष तक ~~से~~ प्रयास किये गये इसे मारवाड़ राठौड़ो का 30 वर्षीय संघर्ष कहा जाता है।
- अजीतसिंह ने दुर्गादास को जोधपुर से निकाल दिया।
- अजीतसिंह ने अपनी बेटी इन्द्र कंवर की शादी मुगल बादशाह फर्रूखसियर के साथ की। यह अन्तिम हिन्दू राजकुमारी थी जिसकी शादी मुगल बादशाह से की थी।
- अजीतसिंह की हत्या उसके बेटे बख्तसिंह ने कर दी थी।
- अजीतसिंह के अन्तिम संस्कार में कई पशु-पक्षी जलकर मर गये थे।

दुर्गादास राठौड़

जन्म - सालवा
पिता - आसकरण
जागीर - तूणेवा पिता ने दी।

- मेवाड़ के अमरसिंह-II ने दुर्गादास को रामपुरा व विजयपुर की जागीर दी थी।
- दुर्गादास की छतरी उज्जैन में क्षिप्रा नदी के किनारे है।

उपाधियां - 1. राठौड़ो का यूलीसेज (जेम्स टॉड)
2. राजपूताने का गेरीबाल्डी
3. मारवाड़ का अणबींध्या मोती

12. अभयसिंह

खेजड़ली घटना – 1730 ई. (विक्रम सम्वत् 1787)
भाद्रपद शुक्ल दसमी

- अमृता देवी विश्नोई के नेतृत्व में 363 लोग पेड़ों को बचाने के लिए शहीद हो गये थे। इनके नाम से पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में पुरस्कार दिया जाता है।
- खेजड़ली में वृक्ष मेला लगाया जाता है।

दरबारी विद्वान :-

1. करणीदान ⟶ सूरज प्रकास (बिड़द सिणगार)
2. वीर भाण ⟶ राजरूपक

इन दोनों पुस्तकों में अभयसिंह के अहमदाबाद आक्रमण का वर्णन किया गया है।

13. मानसिंह

- मानसिंह जब जालोर में था तो देवनाथ ने उसके राजा बनने की भविष्यवाणी की थी।
- जोधपुर में नाथ सम्प्रदाय के लिए महामंदिर बनवाया।
- पुस्तक – नाथचरित्त
- जोधपुर में मान पुस्तकालय बनवाया (मान पुस्तक प्रकाश)
- 1818 में अंग्रेजो के साथ संधि की।

दरबारी विद्वान - कविराजा बांकीदास जी Books ⟶ बांकीदास री ख्यात
मान जसो मण्डन
कुकवि बतीसी
दातार बावनी

गीत - आयो अंग्रेज मुल्क रे ऊपर → इस गीत में अंग्रेजों का साथ देने वाले राजाओं की आलोचना की है।

बीकानेर के राठौड़ो का इतिहास

1. राव बीका

- 1465 में करणीमाता के आशीर्वाद से बीका ने बीकानेर जीत लिया।
- 1488 में बीकानेर नगर की स्थापना की थी।
- बीकानेर की स्थापना अक्षयतीज के दिन हुई थी इसलिए अक्षयतीज को बीकानेर में पतंगे उड़ायी जाती है।
- कोडमदेसर में भैरूजी का मन्दिर बनवाया।
- करणीमाता राठौड़ो की इष्टदेवी है।

2. लूणकरण

- बीठू सुजा ने इसे 'कलयुग का कर्ण' कहा है।

3. जैतसी

रातीघाटी का युद्ध :- जैतसी V/S कामरान (हुमायूँ का भाई)
- इस युद्ध में जैतसी जीत गया।

जानकारी का स्त्रोत — राव जैतसी रो छन्द लेखक, बीठू सुजा

- कामरान ने पहले भटनेर पर अधिकार कर लिया था।

4. रायसिंह

- अकबर व जहाँगीर का मनसबदार था।
- पहले 4000 का मनसब दिया गया जिसे बढ़ाकर 5000 कर दिया गया।
- 1577 में अकबर ने 5 परगने दिये थे।
- जहाँगीर ने खुसरो के विद्रोह के समय आगरा की जिम्मेदारी रायसिंह को दी थी।

- रायसिंह ने बीकानेर में जूनागढ़ किले का निर्माण करवाया। (1589-94)
- जूनागढ़ का निर्माण कर्मचंद की देख-रेख में हुआ था।

रायसिंह की पुस्तके :- रायसिंह महोत्सव
वैद्यक वंशावली
ज्योतिष रत्नमाला
बालबोधिनी (ज्योतिष ग्रंथो पर टीका)

दरबारी विद्वान :-

1. जइता ⟶ रायसिंह प्रशस्ति (जूनागढ़ किले में)
2. जयसोम ⟶ कर्मचन्द्र वंशोत्कीर्णककाव्यम्
इस पुस्तक में रायसिंह को राजेन्द्र कहा गया है।

- मुंशी देवी प्रसाद ने रायसिंह को 'राजपूताने का कर्ण' कहा है

पृथ्वीराज राठौड़

- रायसिंह का छोटा भाई था।
- अकबर के दरबार में रहता था।
- अकबर ने इसे गागरोन का किला दिया था।

पुस्तक :- वेलि किसन रूक्मणी री
भाषा - डिंगल या उत्तरी राजस्थानी
- दुरसा आढ़ा ने इस पुस्तक को 5वां वेद तथा 19वां पुराण बताया है।
- जेम्स टॉड इस पुस्तक में 'दस सहस्त्र घोड़ो का बल' बताता है।

- एल.पी. टेस्सीटोरी ने पृथ्वीराज राठौड़ को 'डिंगल का होरेस' कहा है।
इटली के उदीने गांव का रहने वाला

5. कर्णसिंह

उपाधि - जांगलधर बादशाह

पुस्तक - साहित्य कल्पद्रुम

दरबारी विद्वान

गंगाधर मैथिल ⟶ 1. कर्ण भूषण

2. काव्य डाकिनी

6. अनूपसिंह

उपाधि - माही भरातिब (औरंगजेब ने अनूपसिंह को दक्षिण भारत जीत के बाद दी थी।)

- बीकानेर में अनूप पुस्तकालय का निर्माण करवाया।
- कुम्भा के संगीत ग्रन्थों का संकलन करवाया।
- विभिन्न संस्कृत पुस्तकों का राजस्थानी में अनुवाद करवाया।

जैसे- आनन्दराम ने गीता का अनुवाद किया था।

अनूपसिंह की पुस्तके :- 1. अनूप विवेक

2. काम प्रबोध

3. श्राद्ध प्रयोग चिन्तामणि

4. अनूपोदय - गीत गोविन्द (जयदेव) पर टीका।

दरबारी विद्वान :- भावभट्ट

- बीकानेर में उस्ता कला का विकास हुआ इसके लिए अली रजा व रुकनुद्दीन को लाहौर से बुलाया।
- बीकानेर में 33 करोड़ देवी-देवताओं का मन्दिर बनवाया।

इसमें हेरम्ब गणपति की मूर्ति है।

↳ शेर पर सवार गणेश जी

दक्षिण भारत में रहते हुए अनेक मूर्तियों का संग्रह किया तथा उन्हें नष्ट होने से बचाया। [illegible]

- 33 करोड़ देवी - देवताओं की साल मंडोर में है, अभयसिंह ने बनवायी थी।

7. सूरतसिंह

- 1805 में भटनेर पर अधिकार कर लेता है। तथा भटनेर का नाम हनुमानगढ़ कर देता है।
- 1814 में चूरू पर अधिकार कर लिया था। इस समय चूरू के किले से चाँदी के गोले चलाये गये थे।
  इस समय चूरू का सामन्त स्योजी सिंह (शिवजी) था।
- 1818 में अंग्रेजो से सन्धि कर लेता है।

8. रतनसिंह

- 1836 में गया (बिहार) में कन्या वध रोकने के प्रयास किये। (सामन्तों को प्रतिज्ञा करवायी थी)

दरबारी विद्वान :-

दयालदास —Book→ बीकानेर रा राठौड़ा री ख्यात

यह पुस्तक दो भागों में है

1. बीकानेर के राठौड़ो का वर्णन → बीका से लेकर सरदारसिंह तक का वर्णन है
2. जोधपुर के राठौड़ो का वर्णन

9. गंगासिंह

- 1899 में चीन में बॉक्सर विद्रोह को दबाया। अंग्रेजो ने कैसर-ए-हिन्द (सम्राट) की उपाधि दी।
- 1913 में प्रजा प्रतिनिधि सभा की स्थापना की।
- 1916 में B.H.U. की स्थापना के लिए मदनमोहन मालवीय को सर्वाधिक आर्थिक सहायता की थी।

- 1919 के पेरिस शांति सम्मेलन में भाग लिया था।
- 1921 में चेम्स फोर्ड ने चेम्बर्स ऑफ प्रिंसेज (नरेन्द्र मण्डल) की स्थापना की। गंगासिंह को इसका अध्यक्ष बनाया।
- 1927 में गंग नहर की स्थापना की।
- इस नहर का मुख्य इंजीनियर कंवरसेन था।
- तीनों गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया। (1930, 31, 32)
- इसकी ऊँटो की सेना को, गंगा रिसाला कहा जाता था। इस सेना ने प्रथम व द्वितीय विश्व युद्ध में भाग लिया था।

रामदेवरा
देशनोक
गोगामेड़ी
} ⇒ इन मन्दिरों का वर्तमान स्वरूप बनवाया था।

- अपने सिक्कों पर 'विक्टोरिया इम्प्रेस' लिखवाया था।
- मेवाड़ के स्वरूपसिंह ने सिक्कों पर 'दोस्ती लंदन' लिखवाया।

10. सार्दुल सिंह

- भारत की आजादी के समय बीकानेर का राजा।
- भारत की संविधान सभा में शामिल होने वाला प्रथम राजा।

{ सार्दुल स्पोटर्स स्कूल — बीकानेर
एकमात्र }

चौहानों का इतिहास

चौहानों की उत्पत्ति

1. अग्निवंश का सिद्धान्त :-

यह सिद्धान्त चन्दबरदाई ने अपनी पुस्तक पृथ्वीराज रासो में दिया था। इसके अनुसार तहीव वशिष्ट के आबू पर्वत के यज्ञ से चार जातियां उत्पन्न हुई - चौहान
चालुक्य
परमार
प्रतिहार

मुहणोत नैणसी तथा सूर्यमल्ल मीसण ने भी इस सिद्धान्त का समर्थन किया है।

2. विदेशी — जेम्स टॉड, विलियम कुक
3. सूर्यवंशी — गौरी शंकर हीराचन्द ओझा
4. चन्द्रवंशी — हांसी शिलालेख (हरियाणा)
5. वत्स गौत्रीय ब्राह्मण — बिजौलिया शिलालेख

बिजौलिया शिलालेख :- (1170 ई.)

- पार्श्वनाथ मन्दिर के पास स्थित है।
- लेखक - गुणभद्र
- इसके अनुसार चौहान राजा वासुदेव ने सांभर झील का निर्माण करवाया
- राजस्थान के विभिन्न नगरों के प्राचीन नाम पता चलते हैं।

H.M.

उत्पत्ति स्थल :-

सपादलक्ष (सांभर झील के आस-पास का क्षेत्र)

राजधानी - अहिच्छत्रपुर (नागौर)

1. वासुदेव

- 551 ई. में चौहान राज्य की स्थापना की थी।

2. गूवक

- प्रथम स्वतंत्र चौहान राजा।
- चौहान पहले प्रतिहारों के सामन्त थे।
- गूवक ने प्रतिहारों की अधीनता मानने से मना कर दिया।

3. चन्दराज

रानी - आत्मप्रभा (रुद्राणी)

- पुष्कर झील में भगवान शिव की पूजा करती थी।
- यह यौगिक क्रिया में निपुण महिला थी।

4. अजयराज

- 1113 में अजमेर की स्थापना करता है तथा यहाँ पर किले का निर्माण करवाता है। (अजयमेरु गढ़)
- अपनी रानी सोमलेखा के नाम से सिक्के चलाये।

5. अर्णोराज

- अजमेर में आना सागर झील का निर्माण करवाया।
- पुष्कर में वराह मन्दिर का निर्माण करवाया।

6. विग्रहराज चतुर्थ (1153-63)

- ढिल्लिका (दिल्ली) के तोमर राजाओं को हराया।
  - इसने दिल्ली - शिवालिक स्तम्भ लगवाया।
- बीसलपुर की स्थापना की। यहाँ पर तालाब तथा शिव मन्दिर का निर्माण करवाया।
- अजमेर में संस्कृत पाठशाला का निर्माण करवाया।
- इसने हरिकेलि नामक नाटक लिखा था। इस नाटक की पंक्तियाँ संस्कृत पाठशाला की दीवारों पर लिखवायी।
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने इस संस्कृत पाठशाला को अढ़ाई दिन का झोंपड़ा (मस्जिद) में बदल दिया।

दरबारी विद्वान :-

सोमदेव ⟶ ललित विग्रहराज

उपाधियां - कवि बंधु
बीसलदेव

[नरपति नाल्ह ⟶ बीसलदेव रासो]

- यह गौडवाड़ी भाषा में है।
- गौडवाड़ी मारवाड़ी की एक उपभाषा है जो बाली (पाली) से लेकर आहोर (जालौर) तक बोली जाती है।

7. पृथ्वीराज -III (पृथ्वीराज-चौहान) 1177-92

पिता – सोमेश्वर

- 11 वर्ष की उम्र में राजा बना।
- माता कर्पूरी देवी संरक्षिका बनी।
- अपने चाचा नागार्जुन व अपरगांग्य के विद्रोह को दबाया
- गुरूग्राम व हिसार में भण्डानक जनजाति के विद्रोह को दबाया।

तुमुल का युद्ध (1182) — पृथ्वीराज V/S परमार्दिदेव-चन्देल (महोबा)
– पृथ्वीराज जीत गया।

परमार्दिदेव-चन्देल के सेनापति – आल्हा, ऊदल } ⇒ लड़ते हुए मारे गये।

- पृथ्वीराज ने पंजुनराय को महोबा का प्रशासक बनाया।
- 1184 में गुजरात के चालुक्य राजा भीम-II पर आक्रमण किया लेकिन जगदेव प्रतिहार ने सेंध लगवा दी।

कारण - पृथ्वीराज ने आबू की राजकुमारी इच्छनी देवी से शादी की थी जबकि भीम-II भी शादी करना चाहता था।

चौहान - गहड़वाल विवाद (पृथ्वीराज - जयचन्द (कन्नौज) विवाद)

कारण - 1. दिल्ली का उत्तराधिकार
2. पृथ्वीराज ने जयचन्द की बेटी संयोगिता का अपहरण कर उससे शादी कर ली।

जानकारी का स्रोत → दशरथ शर्मा की पुस्तक
द अर्ली चौहान डायनेस्टीज

तराईन का प्रथम युद्ध (1191 ई.) :- मोहम्मद गौरी v/s पृथ्वीराज चौहान

आक्रमण का कारण :- गौरी ने तबरहिन्द (भटिण्डा) पर अधिकार कर लिया
- पृथ्वीराज चौहान जीत गया।

पृथ्वीराज चौहान का सेनापति - चामुण्डराय
- दिल्ली के सामन्त गोविन्दराज ने गौरी को घायल कर दिया।

तराईन का दूसरा युद्ध (1192 ई.) :-
- पृथ्वीराज चौहान हार गया।
- पृथ्वीराज चौहान को सिरसा के पास सरस्वती में गिरफ्तार किया तथा मार दिया गया।

- हसन निजामी के अनुसार पृथ्वीराज ने कुछ दिनों मो. गौरी के अधीन शासन किया था।
- इस युद्ध में चामुण्डराय सेनापति नहीं था।

तराईन के युद्ध में हार के कारण :-

1. पृथ्वीराज के अपने पड़ोसी राज्यों से विवाद थे इसलिए किसी ने भी गौरी खिलाफ उनका साथ नहीं दिया।
2. तराईन के दूसरे युद्ध में गौरी के मुकाबले पृथ्वीराज की सेना कम थी तथा उसके अधिकतर सेनापति अन्य युद्धों में व्यस्त थे।
3. मो. गौरी एक अच्छा सेनापति था तथा उसने अपनी कूटनीति से पृथ्वीराज को हरा दिया था।
4. तराईन के पहले युद्ध के बाद पृथ्वीराज ने गौरी को युद्ध की तैयारी का समय दे दिया था।
5. पृथ्वीराज की सेना में हाथियों का प्रयोग किया जबकि तुर्क सेना घोड़ो का प्रयोग करती थी।

6. भारतीय सैनिकों की अपेक्षा तुर्क सेना ने हल्के हथियारों का प्रयोग किया।

तराईन युद्ध का परिणाम / महत्व / प्रभाव :-

1. पृथ्वीराज की हार के बाद मो. गौरी के उत्तराधिकारियों के लिए भारत में राज करना आसान हो गया।
2. राजपूतों की उभरती हुई महत्वाकांक्षाओं पर रोक लग गई तथा पृथ्वीराज के बाद कोई भी राजपूत राजा दिल्ली पर अधिकार नहीं कर पाया।
3. भारत पर विदेशी शासन की शृंखला प्रारम्भ हुई जो 1947 में जाकर समाप्त हुई।
4. भारतीय संस्कृति पर सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव पड़े।

सकारात्मक :- (i) हिन्दु-मुस्लिम साझी संस्कृति का विकास हुआ जिसके प्रभाव स्थापत्य कला व चित्रकला में दिखते हैं।

(ii) भारत में भक्ति व सूफि आन्दोलन प्रारम्भ हुआ।

नकारात्मक :- i) हिन्दु व बौद्ध संस्कृति का पतन हुआ। 1200ई. के बाद बौद्ध संस्कृति भारत से लगभग समाप्त हो गई।

पृथ्वीराज-चौहान की सांस्कृतिक उपलब्धियां

- दिल्ली के पास पिथौरागढ़ का निर्माण करवाया।
- कला एवं संस्कृति विभाग की स्थापना की। जिसका मंत्री पद्मनाभ था।

दरबारी विद्वान

1. चन्दबरदाई (पृथ्वीभट्ट) ⟶ पृथ्वीराज रासो

2. जयानक ⟶ पृथ्वीराज विजय

3. विद्यापति गौड़

4. वागीश्वर

5. जनार्दन

6. विश्वरूप

उपाधियां :- 1. राय पिथौरा

2. दल-पुंगल

प्रमुख मंत्री :- भुवनमल्ल

कैमास

पृथ्वीराज-चौहान का मूल्यांकन

पृथ्वीराज-चौहान पर अपरिपक्व सेनापति व अदूरदर्शी राजनेता होने का आरोप लगाया जाता है लेकिन ये आरोप गलत है। वह तराईन के दूसरे युद्ध से पहले किसी भी युद्ध में परीक्षित नहीं हुआ था इसलिए उसे अपरिपक्व सेनापति नहीं कहा जा सकता है।

पृथ्वीराज-चौहान अपने युग की सीमाओं में बंधा हुआ था दुश्मन की भागती हुई सेना पर हमला नहीं करना तथा माफी मांग लेने पर शत्रु को छोड़ देना उस समय की हिन्दू संस्कृति के आदर्श थे तथा पृथ्वीराज भी इन्हीं आदर्शों का पालन कर रहा था।

हालांकि उसकी हार ने भारत की गुलामी का मार्ग खोल दिया था लेकिन फिर भी मध्यकालीन इतिहास में उसके महत्व से इंकार नहीं किया जा सकता।

Q पृथ्वीराज-चौहान का एक शासक के रूप में मूल्यांकन कीजिए?

रणथम्भौर के चौहान

1. गोविन्दराज

- पृथ्वीराज चौहान का बेटा था।
- 1194 में रणथम्भौर में चौहान राज्य की स्थापना करता है।

2. हम्मीर (1282–1301)

चित्तौड़ — समरसिंह
(m.p.) धार — भोज
(u.p.) भीमरस — अर्जुन
⇒ इन्हें हम्मीर ने हराया।

- 1292 में जलालुद्दीन खिलजी के आक्रमण को विफल किया।

अलाउद्दीन खिलजी का आक्रमण (1301)

कारण :- हम्मीर ने अलाउद्दीन खिलजी के विद्रोही मुहम्मद शाह व केहब्रू को शरण दी थी।

अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति – उलुग खान
अलप खान
नुसरत खान → यह मारा गया

हम्मीर के सेनापति — धर्मसिंह
भीमसिंह

- रतिपाल व रणमल ने हम्मीर से विश्वासघात किया।
- रणथम्भौर में साका किया गया। (1301)
- रानी रंगदेवी ने जौहर किया।
- यह राजस्थान का पहला साका है।

- हम्मीर की बेटी देवलदे ने पद्मतालाब में कूदकर आत्महत्या कर ली थी। (जल जौहर)

हम्मीर की सांस्कृतिक उपलब्धियां

1. रणथम्भौर में 32 खम्भों की छतरी बनवाई।
(अपने पिता जैत्रसिंह के 32 साल शासन के कारण)

हम्मीर की पुस्तक – शृंगार हार

- हम्मीर ने कोटि यज्ञ करवाया था।
↓ पुरोहित
विश्वरूप

दरबारी विद्वान :-
राघवदेव – हम्मीर का गुरू
बीजादित्य

हम्मीर का मूल्यांकन :-

हम्मीर पर कर बढ़ाने तथा हठ के लिए युद्ध करने का आरोप लगाया जाता है लेकिन इन आरोपों से उसे मुक्त किया जा सकता है।

युद्ध के समय अधिक धन की आवश्यकता थी इसलिए कर बढ़ाये गये थे तथा ऐसा सभी राजा करते थे। युद्ध से पहले हम्मीर ने कर भी कर नहीं बढ़ाये थे।

शरणागत की रक्षा करना उस समय की हिन्दु संस्कृति का आदर्श था तथा हम्मीर भी उस आदर्श का पालन कर रहा था।

उसकी बहादुरी एवं शरणागत के लिए सब कुछ न्यौछावर कर देने की प्रवृत्ति अविस्मरणीय है तथा हम्मीर को प्रथम पंक्ति में खड़ा कर देती है।

किसी कवि ने हम्मीर के बारे में ठीक ही कहा है -

सिंह गमन , सत्पुरुष वचन , कदली फलै इक बार ।
तिरिया तेल , हम्मीर हठ , चढ़ै न दूजी बार ॥

★ * झाईन दुर्ग को रणथम्भौर की चाबी कहा जाता है।

सोमनाथ - शिवजी
मन्दिर

जालौर के चौहान

जालौर का प्राचीन नाम - जाबालिपुर

- जालौर का किला सोनगिरि पहाड़ी पर स्थित था इसलिए इसे सुवर्णगिरी का किला कहा जाता है।
- इसी कारण जालौर के चौहानो को सोनगरा चौहान कहा जाता है

[जैसलमेर के किले को स्वर्णगिरी का किला कहा जाता है।]

1. कीर्तिपाल सोनगरा

- 1182 में जालौर में सोनगरा राज्य की स्थापना करता है।
- इसने चित्तौड़ के सामन्तसिंह को हरा दिया था।

2. कान्हड़देव सोनगरा

अलाउद्दीन खिलजी का सिवाणा पर आक्रमण (1308)

- सातल व सोम के नेतृत्व में सिवाणा का पहला साका हुआ।
- भायल सैनिक ने विश्वासघात किया था।
- सिवाणा को 'जालौर की चाबी' कहा जाता है।
- अलाउद्दीन ने सिवाणा का नाम बदलकर खैराबाद कर दिया।

अलाउद्दीन खिलजी का जालौर पर आक्रमण (1311 ई.) :

- कान्हड़देव व वीरमदेव के नेतृत्व में साका किया गया।
- जालौर का नाम बदलकर जलालाबाद कर दिया।
- बीका दहिया ने विश्वासघात किया था।
- बीका दहिया को उसकी पत्नी ने मार दिया था।

फिरोजा - अलाउद्दीन की पुत्री जो वीरमदेव को पसंद करती थी।

गुल विहिश्त - फिरोजा की धाय माँ।

- कमालुद्दीन गुर्ग अलाउद्दीन का सेनापति था।

पद्मनाभ ← पुस्तक → 1. कान्हड़दे प्रबन्ध
2. वीरमदेव सोनगरा री वात

सिरोही के चौहान

- सिरोही में चौहान वंश की देवड़ा शाखा का शासन था |

1. लुम्बा

- 1311 में आबू व चन्द्रावती को जीता तथा चन्द्रावती को राजधानी बनाया |

2. सहसमल देवड़ा

- 1425 ई. में सिरोही की स्थापना की तथा इसे अपनी राजधानी बनाया |

3. सुरताण

दत्ताणी का युद्ध (1583) :- सुरताण V/S अकबर

- बीकानेर के रायसिंह तथा प्रतापका छोटा भाई जगमाल अकबर की तरफ से लड़े |

दुरसा आढ़ा —Book→ राव सुरताण रा कवित

4. शिवसिंह

- 1823 में अंग्रेजो से सन्धि कर लेता है |

(अंग्रेजो से सन्धि करने वाली अन्तिम रियासत)

बूंदी के चौहान

- बूंदी में चौहान वंश की हाड़ा शाखा का शासन था।
- पहले बूंदी पर मीणा राजाओं का अधिकार था।
- बूंदा मीणा के कारण बूंदी कहा जाता था
- रणकपुर अभिलेख में बूंदी का नाम वृन्दावती है।

1. देवा

- 1241 में जैता मीणा को हराकर बूंदी में हाड़ा राज्य की स्थापना करता है।

2. जैतसिंह

- कोटा को जीतकर बूंदी राज्य में मिला लेता है।

3. वरसिंह

- 1354 में बूंदी में तारागढ किले का निर्माण करवाया।

4. सुरजन

- 1569 में अकबर की अधीनता स्वीकार करता है।
  - ↓ आमेर के राजा भगवन्तदास की मुख्य भूमिका थी।
- हरिका में रणछोड़ मन्दिर का निर्माण करवाया।

दरबारी विद्वान

1. चन्द्रशेखर —Books→ 1. सुरजन-चरित
2. हम्मीर हठ

5. बुधसिंह
↓
पुस्तक — नेहतरंग

- इसके दो बेटों दलेलसिंह व उम्मेदसिंह में उत्तराधिकार संघर्ष हुआ।
- सवाई जयसिंह (आमेर) ने दलेलसिंह का तथा मराठों ने उम्मेदसिंह का साथ दिया।
- बूंदी पहली रियासत थी जिसकी आन्तरिक राजनीति में मराठों ने हस्तक्षेप किया था।

अमरकंवर :-
- सवाई जयसिंह की बहन तथा बुधसिंह की रानी।
- इसने उम्मेदसिंह के पक्ष में मराठों को बुलाया।
- इसने मराठा सेनापति मल्हार राव होल्कर को अपना भाई बनाया

कृष्णाकंवर :-
- सवाई जयसिंह की बेटी तथा दलेलसिंह की रानी।

6. विष्णुसिंह

- 1818 में अंग्रेजों से सन्धि कर लेता है।

कोटा के चौहान

- कोटा में भी चौहान वंश की हाड़ा शाखा का शासन था।

1. माधोसिंह

- बूंदी के राजा रतनसिंह का बेटा था।
- 1631 में मुगल बादशाह शाहजहाँ ने इसे कोटा का स्वतंत्र राजा बना दिया।

2. मुकुन्दसिंह

- कोटा में अबली मीणी का महल बनवाया।

3. भीमसिंह

- वल्लभ सम्प्रदाय का अनुयायी था।
- कोटा का नाम बदलकर नन्दगाम कर दिया।
- बांरा में सांवलिया जी का मन्दिर बनवाया।
- मुगल बादशाह फर्रूखसियर के कहने पर बूंदी पर आक्रमण किया। बूंदी के राजा बुधसिंह को हराया तथा बूंदी का नाम बदलकर फर्रूखाबाद कर दिया।

4. उम्मेदसिंह

- 1817 में अंग्रेजों से सन्धि कर लेता है

संधि की शर्तें:

1. उम्मेदसिंह व उसके वंशज कोटा के राजा बने रहेंगे।
2. जालिमसिंह झाला व उसके वंशज कोटा के दीवान बने रहेंगे। तथा कोटा की सभी शक्तियां दीवान के पास रहेंगी।
   → (प्रथक संधि)

5. किशोरसिंह -II

मांगरोल का युद्ध (1831) :- किशोरसिंह-II V/S जालिमसिंह झाला

- जेम्स टॉड ने इस युद्ध में जालिमसिंह झाला का साथ दिया

झालावाड़ का इतिहास

- झालावाड़ में झाला वंश का शासन था।

1. मदनसिंह झाला

- जालिमसिंह झाला का पोता था।
- 1837 में कोटा से अलग होकर झालावाड़ राज्य की स्थापना की।
- 1838 में अंग्रेजों ने झालावाड़ राज्य को मान्यता दे दी।

रियासत

- झालावाड़ राजस्थान की सबसे नई रियासत थी।

राजधानी – झालरापाटन → चन्द्रभागा नदी के किनारे

- झालरापाटन को 'घण्टियों का शहर' कहा जाता है।

{ शीतलेश्वर महादेव मन्दिर – झालरापाटन
- राजस्थान में सबसे प्राचीन तिथि युक्त (689 ई.) मन्दिर }

2. राजेन्द्र सिंह

- झालावाड़ में काउछ प्रासाद का निर्माण करवाया।
- इसने समाज सुधार के कार्य किये।
- इसने झालावाड़ के मन्दिर सभी जातियों के लिए खुलवा दिये।

आमेर के कछवाहा वंश का इतिहास

- कछवाहा भगवान राम के बेटे कुश के वंशज है। इसलिए इन्हें रघुवंशतिलक भी कहा जाता है।

1. दुल्हराय

वास्तविक नाम – तेजकरण

- 1137 में नरवर (m.p.) से आया था, दौसा में बड़गुजरों को हराकर अधिकार कर लेता है।
- रामगढ़ में मीणा शासकों को हराया तथा यहाँ अपनी कुल देवी जमवाय माता का मन्दिर बनवाया।

2. कांकिलदेव

- 1207 में मीणा शासकों को हराकर आमेर पर अधिकार कर लेता है।

3. भारमल

- 1562 में अकबर की अधीनता स्वीकार करता है, सांभर में अपनी बेटी हरका बाई की शादी अकबर से करता है

↓ उपाधि

मरियम उज्जमानी

↳ जहाँगीर इसका बेटा था।

4. भगवन्तदास

- सरनाल (गुजरात) में मिर्जा विद्रोह को दबाया।
- अकबर ने नगाड़ व झण्डा देकर सम्मानित किया।
- अपनी बेटी मानबाई की शादी जहाँगीर के साथ की।

मानबाई → उपाधि → शाह-ए-बेगम
मानबाई → बेटा - खुसरो

- जहाँगीर की शराब की आदतों से तंग आकर मानबाई ने आत्महत्या कर ली।

5. मानसिंह

- अकबर ने पहले इसे 5000 का मनसबदार बनाया जिसे बाद में बढ़ाकर 7000 कर दिया था।
- अकबर ने काबुल, बंगाल व बिहार का गवर्नर बनाया था।
- बंगाल में अकबरनगर (राजमहल) की स्थापना की।
- पूर्वी बंगाल के राजा केदार को हराया तथा वहां से शिलामाता की मूर्ति लाकर आमेर में मन्दिर बनवाया।
- शिलामाता आमेर के कछवाहा वंश की इष्टदेवी है।
- बिहार में मानपुर नामक नगर की स्थापना की।
- 1592 में उड़ीसा को जीता था।

सांस्कृतिक उपलब्धियां :-

- आमेर में महलों का निर्माण करवाया।
- इसकी रानी कनकावती ने अपने बेटे जगतसिंह की याद में आमेर में जगतशिरोमणी मन्दिर बनवाया।।

इस मन्दिर में भगवान श्री कृष्ण की वही मूर्ति है जिसकी मीराबाई चित्तौड़ में पूजा करती थी।

- वृंदावन में राधा-गोविन्द का मन्दिर बनवाया।

दरबारी विद्वान :

1. पुण्डरीक विट्ठल —Books→ 1. राग माला
   2. राग मंजरी
   3. राग-चन्द्रोदय
   4. नर्तन निर्णय

उपाधियां : 1. फर्जन्द → बेटा
2. मिर्जा राजा } → अकबर ने दी।

6. मिर्जा राजा जयसिंह (1621 – 67)

- आमेर के कछवाहा वंश में सबसे लम्बा शासन काल।
- जहाँगीर, शाहजहां और औरंगजेब के साथ कार्य किया।
- शाहजहाँ ने मिर्जा राजा की उपाधि दी थी।
- औरंगजेब ने इसे शिवाजी के खिलाफ भेजा था।
- शिवाजी के साथ 1665 में पुरन्दर की संन्धि की।
- जयगढ़ किले का निर्माण करवाया। पहले इस स्थान को 'चील्ह का टीला' कहा जाता है।

दरबारी विद्वान :- बिहारी जी —Book→ बिहारी सतसई

कुलपति मिश्र → इन्होंने 52 पुस्तकों की रचना की थी। इनसे हमें मिर्जा राजा जयसिंह के दक्षिण अभियानों की जानकारी मिलती है।

7. सवाई जयसिंह (1700-43) (जयसिंह-II)

- सात मुगल बादशाहों के साथ कार्य किया था।
- औरंगजेब की मृत्यु के बाद शाहजादे आजम का साथ दिया।
- बहादुरशाह प्रथम (मुअज्जम) ने आमेर पर आक्रमण किया, सवाई जयसिंह को हटाकर इसके छोटे भाई विजयसिंह को राजा बनाया, आमेर का नाम बदलकर इस्लामाबाद या मोमिनाबाद कर दिया।
- भरतपुर में मोहकमसिंह को हटाकर बदनसिंह को राजा बनाया। बदनसिंह को डीग की जागीर तथा ब्रजराज की उपाधि दी।
- मोहम्मद शाह रंगीला ने सवाई जयसिंह को राजराजेश्वर की उपाधि दी थी।
- गंगवाना के युद्ध (1741) में बीकानेर के जोरावरसिंह की जोधपुर के अभयसिंह के खिलाफ मदद की।

सवाई जयसिंह के मराठों के साथ युद्ध

1. पीलसुद (m.p.) — 1715] → जीता
2. मन्दसौर (m.p.) — 1733]
3. रामपुरा — 1735] → हारा

- पेशवा बालाजी बाजीराव के साथ 1741 में धौलपुर समझौता किया। (मुगल बादशाह मुहम्मद शाह रंगीला की तरफ से)

★ सवाई जयसिंह 3 बार मालवा का गवर्नर बना था।

- 1740 में अश्वमेध यज्ञ का आयोजन करवाया।
  ↓ पुरोहित
  पुण्डरीक रत्नाकर
- दीपसिंह कुम्भाणी ने यज्ञ के घोड़े को पकड़ लिया था।

सांस्कृतिक उपलब्धियां :-

(i) स्थापत्य कला :-

① 18 Nov 1727 को जयपुर की स्थापना
  ||
  वास्तुकार – विद्याधर भट्टाचार्य
- पुर्तगाली ज्योतिषी जेवियर डि सिल्वा की मदद ली गई थी।
- चीन के केंटोया तथा इराक के बगदाद नगर की तरह जयपुर को बसाया गया।
- जयपुर को नौ वर्गों के सिद्धान्त पर बसाया गया।
- जयपुर भारत का प्रथम आधुनिक शहर था।
- पहले इस स्थान पर शिकार होती थी।
- जयपुर के निर्माण में सबसे पहले बादल महल बनाया गया।

② नाहरगढ़ :-
- मराठा आक्रमणों से सुरक्षा के लिए यह किला बनाया गया।
- इसे 'जयपुर का पहरेदार किला' कहते है।
- पहले इस किले का नाम सुदर्शन गढ़ था।

नोट :- जयपुर में पेयजल के लिए हरमाड़ा से नहर लेकर आये थे।

③ सिटी पैलेस (चन्द्र महल)

4. गोविन्द देव जी का मन्दिर

- जयपुर के राजा स्वयं को गोविन्द देव जी का दीवान मानते थे।
- यह गौड़ीय सम्प्रदाय का प्रमुख मन्दिर है।

5. जलमहल

- मानसागर झील में बने हुए है।
- अश्वमेध यज्ञ के पुरोहितों की व्यवस्था की गई थी।

6. देश में पाँच स्थानों पर जन्तर-मन्तर बनवाये।

(i) दिल्ली - सबसे पहले
(ii) जयपुर - सबसे बड़ा
(iii) मथुरा
(iv) बनारस
(v) उज्जैन

- जयपुर के जन्तर-मन्तर को 2010 में यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल किया गया।

साहित्य

सवाई जयसिंह की पुस्तक → जयसिंह कारिका (ज्योतिष ग्रन्थ)

- जीज मुहम्मदशाही (नक्षत्र सारणी) की रचना करवायी। (1725)

दरबारी विद्वान :-

1. पुण्डरीक रत्नाकर —BOOK→ जयसिंह कल्पद्रुम

2. पण्डित जगन्नाथ —Books→ 1. सिद्धान्त सम्राट
2. सिद्धान्त कौस्तुभ
3. यूक्लिड ज्यामिति का संस्कृत में अनुवाद किया।

3. केवलराम ⟶ लागेरिथम (→ French) का संस्कृत अनुवाद किया।
(नाम – विभाग सारणी)

4. जयन चन्द्र मुखर्जी ⟶ उकर नामक अरबी ग्रन्थ का संस्कृत में अनुवाद किया।

मुहम्मद मेहरी }
मुहम्मद शरीफ } ⇒ इन दोनों को विदेशी पुस्तकें लाने के लिए भेजा

चित्रकला :-

- आमेर में सूरतखाना की स्थापना की जहाँ पर चित्र बनाये जाते थे

सामाजिक सुधार :-

- सती प्रथा को नियंत्रित करने का प्रयास किया।
- बाल विवाह को नियंत्रित करने का प्रयास किया।
- अन्तर्जातिय विवाह को प्रोत्साहित किया।
- ब्राह्मणों के आपसी भेदभाव को समाप्त किया।
- साधु-सन्तों को गृहस्थ जीवन जीने के लिए प्रेरित किया तथा इनके लिए मथुरा के पास गाँव बसाया।

Q. सवाई जयसिंह तात्कालिन भारत का आधुनिक शासक था, उनकी उपलब्धियों के आधार पर कथन का मूल्यांकन कीजिए? — 100 words

8. ईश्वरीसिंह (1743-50)

- देबारी समझौते के तहत चन्द्रकंवर के बेटे माधोसिंह को जयपुर का राजा बनाना था लेकिन सवाई जयसिंह ने अपने दूसरे बेटे ईश्वरीसिंह को राजा बनाया इसलिए इन दोनों भाइयों में उत्तराधिकार संघर्ष हुआ।

राजमहल (→टोंक) का युद्ध (1747) :- ईश्वरीसिंह v/s माधोसिंह

ईश्वरीसिंह ↓ सूरजमल (भरतपुर)

माधोसिंह ↓ जगतसिंह-II (मेवाड़), उम्मेदसिंह (बूंदी), दुर्जनसाल (कोटा), मराठा

- ईश्वरीसिंह जीत गया।
- जीत की याद में ईसरलाट (→स्तम्भ) (सरगासूली) का निर्माण करवाया।

बगरू का युद्ध (1748) : ईश्वरीसिंह v/s माधोसिंह

- माधोसिंह जीत गया।
- माधोसिंह को 5 परगने दिये गये थे। (टोंक, टोडा, मालपुरा...)
- उम्मेद सिंह को बूंदी का राजा बनाया गया।
- मराठों को युद्ध हर्जाना दिया गया।

मराठों ने युद्ध हर्जाने के लिए तंग किया जिससे ईश्वरीसिंह ने आत्महत्या कर ली।

9. माधोसिंह (1750 - 68)

- जयपुर में मराठों का कत्लेआम करवाया।
- 1759 में काकोड़ (→ टोंक) के युद्ध में मराठों को पुन: हराया।

भटवाड़ा का युद्ध (1761) :- माधोसिंह V/S शत्रुसाल (कोटा)

कारण - रणथम्भौर किले पर अधिकार

- शत्रुसाल जीत गया।
- इस युद्ध में कोटा का सेनापति जालिमसिंह झाला था।

- 1763 में सवाई माधोपुर की स्थापना की थी।
- चाकसू में शीतलामाता का मन्दिर बनवाया।
- मोती डूँगरी महलों का निर्माण करवाया।

10. सवाई प्रतापसिंह* (1778 - 1803)

(→ जयपुर) राजनीतिक उपलब्धियां :-

* तुंगा का युद्ध : (1787) :- प्रतापसिंह (जयपुर) + ~~विजय~~ विजयसिंह (जोधपुर) V/S मराठा (महादजी सिन्धिया)

- मराठे हार गये।

पाटन (→ अजमेर) का युद्ध (1789) :- प्रतापसिंह (जयपुर) + विजयसिंह V/S मराठा (सेनापति - डी बोई (फ्रांसीसी))

- मराठे जीत गये थे।

- विजयसिंह ने जयप्पा सिंधिया की हत्या कर दी। इस हत्या के बदले में मराठों को तारागढ़ किला देना पड़ा।

[विजयसिंह की प्रेमिका गुलाबराय को 'जोधपुर की नूरजहाँ' कहा जाता है]

मालपुरा (→ टोंक) का युद्ध (1800) :- प्रतापसिंह + भीमसिंह (जोधपुर) v/s मराठा
- मराठे जीत गये थे।

सांस्कृतिक उपलब्धियां :-

1. हवामहल :

- 1799 ई. में निर्माण करवाया।
- 5 मंजिला इमारत है।
- आकृति - भगवान श्री कृष्ण के मुकुट के समान।
- 953 झरोखे हैं। इन झरोखों से रानियां तीज व गणगौर की सवारी देखती थी।

वास्तुकार :- लालचन्द उस्ता

5 मंजिल :- शरद मंदिर
रतन मंदिर
विचित्र मंदिर
प्रकाश मंदिर
हवा मंदिर

⇒ बृजनिधि नाम से प्रतापसिंह कविताएं लिखता था।

काव्य गुरु : गणपति भारती

संगीत गुरु :- चाँद खाँ —Book→ स्वर सागर

⇒ जयपुर में संगीत सम्मेलन का आयोजन करवाया।
↓ अध्यक्ष
देवर्षि बृजपाल भट्ट

[illegible] — [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

⇒ जयपुर में तमाशा लोकनाट्य प्रारम्भ हुआ। इसके लिए बंशीधर भट्ट को महाराष्ट्र से लेकर आये।

⇒ प्रतापसिंह का शासनकाल जयपुर की चित्रकला का स्वर्णकाल था।

मुख्य चित्रकार – लाल-चन्दु

- प्रतापसिंह के दरबार में 22 विद्वान रहते थे इन्हें प्रताप बाईसी या गन्धर्व बाईसी कहा जाता था।
- इन विद्वानों के लिए गुणीजन खाना बनवाया था।

Q प्रतापसिंह की सांस्कृतिक उपलब्धियां बताइये ?

11. जगतसिंह -II

- इसकी प्रेमिका रस कपूर इसके प्रशासन में हस्तक्षेप करती थी।
- कालान्तर में रस कपूर को नाहरगढ़ किले में बन्द कर दिया था।
- 1818 ई. में जगतसिंह -II ने अंग्रेजों से सन्धि कर ली।

12. रामसिंह -II (1835 – 80)

- छोटी उम्र में राजा बना।

संरक्षक – जॉन लुडलो

सती प्रथा
समाधि प्रथा
कन्या वध
मानव व्यापार

⇒ इन चारों पर जॉन लुडलो ने रोक लगाई।

MAO कालेज की प्रोंसिपल – मिस लूदर

- 1857 की क्रान्ति में अंग्रेजों का साथ दिया।
- अंग्रेजो ने सितार-ए-हिन्द की उपाधि दी तथा कोटपूतली परगना दिया।
- 1857 में कला के विकास के लिए मदरसा-ए-हुनरी की स्थापना की जिसे वर्तमान में Rajasthan School of Arts and Crafts कहा जाता है।
- 1866 में कांतिचन्द्र मुखर्जी ने जयपुर में कन्या विद्यालय की स्थापना की (राजस्थान की प्रथम रियासत)
- रामसिंह-II ने जयपुर में महाराजा कॉलेज व संस्कृत कॉलेज की स्थापना की।
- 1876 में प्रिंस अल्बर्ट जयपुर आया उस समय अल्बर्ट हॉल को बनाना प्रारम्भ किया।

अल्बर्ट हॉल का वास्तुकार – स्टीवन जैकब

- रामसिंह ने जयपुर में गुलाबी रंग करवाया।
- जयपुर में ब्लू पॉटरी लोकप्रिय हुई।

13. माधोसिंह-II

- इसे बब्बर शेर कहा जाता था।
- अपनी 9 दासियों के लिए नाहरगढ़ में 9 एक जैसे महल बनवाये।
- BHU की स्थापना के लिए 5 लाख रूपये दिये थे।
- 1904 में जयपुर में डाक व्यवस्था की शुरूआत की।
(किसी भी रियासत में सबसे पहले)
- सिटी पैलेस में मुबारक महल बनवाया।

14. मानसिंह - II

- आजादी के समय जयपुर का राजा।
- राजस्थान का प्रथम एवं अन्तिम राजप्रमुख।

रानी - गायत्री देवी - राजस्थान की पहली महिला लोकसभा सदस्य

आत्मकथा - प्रिंसेज रिमेम्बर्स

अलवर का इतिहास

- अलवर में कछवाहा वंश की नरूका शाखा का शासन था।
- मिर्जा राजा जयसिंह ने कल्याणसिंह नरूका को मांचेड़ी की जागीर दी थी।
- 1734 में मुगल बादशाह शाह आलम ने मांचेड़ी के प्रतापसिंह को स्वतंत्र राजा घोषित कर दिया।
- प्रतापसिंह ने 1775 में अलवर को जीतकर उसे अपनी राजधानी बनाया।

1. बख्तावर सिंह

- 1803 में अंग्रेजो से संन्धि करता है।
- बख्तेश तथा चन्द्रसखी नाम से कविताएं लिखता था।

2. विनयसिंह

- अलवर में मूसी महारानी की छतरी बनवाई। इस छतरी में 80 खम्भें है।
- मूसी महारानी बख्तावर सिंह की दासी थी।
- अपनी रानी शीला के लिए सिलीसेढ़ झील का निर्माण करवाया। इस झील को 'राजस्थान का नन्दन कानन' कहा जाता है।

3. जयसिंह

- प्रथम गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया था।
- जयेन्द्र मण्डल का नामकरण किया था।
- हिन्दी को अलवर में राष्ट्रभाषा घोषित किया।

[10 Dec → मानवाधिकार दिवस]

{ भरतपुर के राजा किशनसिंह ने भी हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित किय

- BHU, AMU तथा सनातन धर्म कॉलेज को आर्थिक सहायता दी थी।
- 10 Dec 1903 को अलवर में बालविवाह तथा अनमेल विवाह पर रोक लगा दी।
- ड्यूक ऑफ एडिनबर्ग के अलवर आगमन पर सरिस्का महल का निर्माण करवाया।
- 1933 में तिजारा दंगो के बाद इसे हटा दिया गया। यह पेरिस चला गया तथा वहीं पर इसकी मृत्यु हो गई।

4 तेजसिंह

- आजादी के समय अलवर का राजा।
- महात्मा गांधी की हत्या में इसका नाम आया था लेकिन बाद में सुप्रीम कोर्ट ने निर्दोष करार दिया।

जैसलमेर का इतिहास

- राजस्थान में यदुवंश की 2 रियासते थी।

जैसलमेर → भाटी

करौली → जादौन

- भाटी भगवान श्री कृष्ण के वंशज होते है इसलिए इन्हें छत्राला यादवपति कहा जाता है।

1. भट्टी

- 285 ई. में भटनेर को अपनी राजधानी बनाता है।
- भाटीयों को 'उत्तर भड़ (योद्धा) किंवाड' कहा जाता था।

2. मंगलराव

राजधानी - तन्नौट

3. देवराज

राजधानी – लोद्रवा

- परमारों को हराकर लोद्रवा जीत लिया था।

[मूमल महेन्द्र की प्रेम कहानी में मूमल लोद्रवा की राजकुमारी तथा महेन्द्र अमरकोट का राजकुमार था]

4. जैसल

- 12 July 1155 को जैसलमेर की स्थापना की।
- यहां पर किले का निर्माण करवाया।

5. मूलराज

- अलाउद्दीन खिलजी ने आक्रमण किया । इस समय जैसलमेर का प्रथम साका हुआ । (1299 ई.)

6. दुर्जनसाल

- 1352 में फिरोज तुगलक ने आक्रमण किया । इस समय जैसलमेर का दूसरा साका हुआ ।

7. लूणकरण

- रूठी रानी उमादे का पिता था ।
- 1550 में कंधार के अमीर अली ने आक्रमण किया । इस समय यहाँ पर केसरिया तो किया गया लेकिन जौहर नहीं हुआ इसलिए इसे आधा साका कहा जाता है ।

8. मूलराज -II

- 1818 में अंग्रेजो से संधि कर लेता है ।

9. जवाहरसिंह

- आधुनिक जैसलमेर का निर्माता ।
- जैसलमेर में विण्डम पुस्तकालय का निर्माण करवाया ।
- क्रांतिकारी सागरमल गोपा को जेल में जिन्दा जलाकर मार दिया गया हत्या की जाँच के लिए गोपाल स्वरूप पाठक आयोग बनाया गया ।

सागरमल गोपा —Books→ 1. जैसलमेर का गुंडाराज
2. आजादी के दीवाने
3. रघुनाथ सिंह का मुकदमा

⇒ जैसलमेर व हैदराबाद रियासतों ने सागरमल गोपा के प्रवेश पर रोक लगा दी थी।

करौली का इतिहास

⇒ करौली में यदुवंश की जादौन शाखा का शासन था।

1. विजयपाल

- 1040 ई में बयाना को अपनी राजधानी बनाता है।

2. धर्मपाल

राजधानी — करौली (कल्याणपुर)

3. गोपालपाल

- करौली में मदनमोहन का मन्दिर बनवाया जो गौड़ीय सम्प्रदाय का मन्दिर है।

4. हरबक्श पाल

- 1817 में अंग्रेजों से संधि कर लेता है।

5. मदनपाल

- 1857 की क्रांति में कोटा के राजा रामसिंह-II की मदद की।
- अंग्रेजों ने इसे 17 तोपों की सलामी दी थी।
- स्वामी दयानन्द सरस्वती 1865 में राजस्थान में पहली बार करौली आये थे।

भरतपुर का इतिहास

राजस्थान में जाट राजवंश की २ रियासतें थी – भरतपुर, धौलपुर

- 1669 में गोकुला ने मथुरा के आस-पास के जाट किसानों के साथ औरंगजेब के खिलाफ विद्रोह कर दिया। औरंगजेब ने इस विद्रोह को दबा दिया।
- 1687 में सिनसिनी (भरतपुर) का जाट जमींदार राजाराम पुनः विद्रोह कर देता है तथा सिकन्दरा (आगरा) में अकबर के मकबरे को लूट लेता है।

1. चूडामन

- थून (भरतपुर) में किले का निर्माण करवाया।

2. बदनसिंह

- सवाई जयसिंह की मदद से राजा बना।
- डीग में किले का निर्माण करवाया।

3. सूरजमल (1756–63)

- इसे 'जाटो का प्लेटो / अफलातून' कहा जाता है।
- पानीपत के तीसरे युद्ध (1761) से भागते मराठा सैनिकों को भरतपुर में शरण दी थी।
- दिल्ली पर आक्रमण किया तथा वहाँ से नूरजहाँ का झूला लेकर आये तथा इसे डीग के महलों में लगवाया।

- भरतपुर में किले का निर्माण करवाया।
- डीग में जल महलों का निर्माण करवाया।
(डीग को जल महलों की नगरी कहा जाता है)
- भरतपुर में प्रशासनिक सुधार किये।
  ⇓
  - प्रशासन का आधार योग्यता को बनाया गया
- भरतपुर में आर्थिक सुधार करवाये।
- * इस समय भरतपुर राज्य की आय 17.5 लाख रुपये वार्षिक थी।

दरबारी विद्वान :-

1. मंगल सिंह पुरोहित - सुजान सम्वत विलास

4. जवाहर सिंह

- दिल्ली पर आक्रमण किया तथा वहाँ से अष्ट धातु के दरवाजे लेकर आये और उन्हें भरतपुर के किले में लगवाये।
  ये दरवाजे मूलरूप से चित्तौड़ किले के थे।
  ⇓
- जीत की याद में भरतपुर किले में जवाहर बुर्ज का निर्माण करवाया।
- जवाहर बुर्ज में भरतपुर के राजाओं का राजातिलक किया जाता था।

5. रणजीत सिंह

- दूसरे अंग्रेज-मराठा युद्ध (1803-06) के दौरान मराठा सेनापति जसवन्त राव होल्कर को शरण दी।
  अंग्रेज सेनापति लॉर्ड लेक ने भरतपुर पर 5 आक्रमण किये थे लेकिन भरतपुर को जीत नहीं पाया इसलिए भरतपुर के किले को लौहागढ़ कहा

- इस जीत की याद में भरतपुर किले में फतेह बुर्ज का निर्माण करवाया।

- 1803 में अंग्रेजो से सन्धि कर लेता है।

1857 की क्रान्ति

- 1832 में अजमेर में A.G.G. मुख्यालय बनाया गया।
- प्रथम A.G.G. — लॉकेट
- 1845 में A.G.G. मुख्यालय आबू में बनाया गया।
- 1857 की क्रान्ति के समय राजस्थान का A.G.G. – जॉर्ज पैट्रिक लॉरेन्स था।
- अंग्रेजो की राजस्थान में 6 सैनिक छावनियां थी।
  1. नसीराबाद
  2. नीमच
  3. देवली
  4. एरिनपुरा (पाली)
  5. ब्यावर
  6. खैरवाड़ा (उदयपुर)

** ब्यावर तथा खैरवाड़ा सैनिक छावनी में क्रान्ति नहीं हुई।

1. नसीराबाद

- 28 मई 15 वीं N.I. (नेटिव इन्फैन्ट्री) ने विद्रोह कर दिया।

  के. थैनी
  न्यूबरी
  स्पोर्टिसवुड
  } ⇒ इन तीन अंग्रेज अफसरों को मार दिया था।

- 30 वीं N.I. भी विद्रोह में शामिल हो गई तथा सारे विद्रोही दिल्ली चले गये।

2. नीमच

- मोहम्मद अली बेग नामक सैनिक ने कर्नल एबॉट के सामने अंग्रेजो के प्रति वफादारी की प्रतिज्ञा लेने से मना कर दिया।
- 3 June को हीरासिंह के नेतृत्व में क्रान्ति हो गई।
- शाहपुरा के राजा उम्मेदसिंह ने विद्रोहियों की मदद की।
- निम्बाहेड़ा में जनता ने विद्रोहियों का स्वागत किया
- देवली छावनी के सैनिक भी इनके साथ मिल गये तथा सारे विद्रोही दिल्ली चले गये।
- नीमच छावनी से भागे 40 अंग्रेजो ने डूंगला (चित्तौड़) गाँव में रूघाराम के पास शरण ली।
- मेवाड़ P.A. शॉवर्स इन्हें उदयपुर लेकर जाता है। महाराणा स्वरूपसिं ने इन्हें जगमन्दिर महलों में रखा था।

3. एरिनपुरा

- 1835 में जोधपुर लीजीयन का गठन किया गया जिसका मुख्यालय एरिनपुरा था।
- पूर्बिया सैनिकों की टुकड़ी ने 21 अगस्त को आबू में क्रान्ति कर दी, यहाँ से विद्रोही एरिनपुरा आये तथा अपने बाकी साथियों को लेकर दिल्ली की तरफ बढ़े।
- खैरवा गाँव में आउवा का सामन्त कुशालसिंह चाम्पावत इनसे मिलता है।

बिठौड़ा का युद्ध (8 sep) : हीथकोट + कुशालराज सिंघवी v/s कुशालसिंह चाम्पावत
(जोधपुर)
- कुशालसिंह जीत गया।
- जोधपुर का ओनाड सिंह पंवार इस युद्ध में लड़ते हुए मरा।

चेलावास का युद्ध (18 sep) :- जॉर्ज पैट्रिक लॉरेन्स + मैकमेसन v/s कुशालसिंह
(A.G.G.) (मारवाड़ का P.A.)
- कुशालसिंह जीत गया।
- मैकमेसन को मार दिया।
- इस युद्ध को काले-गोरों का युद्ध कहा जाता है।

आउवा का युद्ध (20 Jan 1858) :- कर्नल होम्स तथा हसंराज जोशी (जोधपुर) ने आक्रमण किया।
- कुशालसिंह अपने छोटे भाई पृथ्वीसिंह (लाम्बिया) को किला देकर मेवाड़ में सहायता के लिए चला गया।

कर्नल होम्स आउवा से सुगाली माता की मूर्ति उठाकर ले गया तथा इसे अजमेर के राजपूताना म्यूजियम में रखा। वर्तमान में यह मूर्ति पाली के बांगड़ म्यूजियम में है।

(राजसमंद) कोठारिया → जोधसिंह
सलूम्बर → केसरीसिंह
⇒ मेवाड़ के सामन्त जिन्होंने कुशालसिंह को शरण दी।

कुशालसिंह का साथ देने वाले अन्य सामन्त

जोधपुर ← आसोप → शिवनाथ सिंह

नागौर ← आलनियावास → अजीतसिंह
गूलर → बिशन सिंह

⇒ विद्रोहियों ने शिवनाथ सिंह के नेतृत्व में दिल्ली की तरफ जाने का भी प्रयास किया लेकिन नारनौल (हरियाणा) के पास ब्रिगेडियर गेराड से हार गये।

सुगाली माता → काले पत्थर की मूर्ति, 10 सिर, 54 हाथ

- 1860 में नीमच में कुशालसिंह ने आत्मसमर्पण कर दिया।
- कुशालसिंह की जाँच के लिए टेलर कमीशन बनाया गया।

तख्तसिंह - क्रान्ति के समय जोधपुर का राजा।
कानजी - बिठौड़ा का सामन्त जिसकी कुशालसिंह ने हत्या कर दी।

कोटा में जन विद्रोह

- 15 Oct. को जयदयाल व मेहराब खान (रिसालदार) के नेतृत्व में क्रान्ति हुई।
- P.A. बर्टन को मार दिया गया।
- राजा रामसिंह-II को नजरबंद कर दिया।
- मथुराधीश मन्दिर के महंत कन्हैयालाल गोस्वामी ने राजा व विद्रोहियों के बीच समझौता करवाया।
- राजा रामसिंह-II से बर्टन की हत्या की जिम्मेदारी वाले कागज पर हस्ताक्षर करवाये।
- करौली के राजा मदनपाल ने रामसिंह-II को विद्रोहियों से मुक्त कराया।
- कालान्तर में रॉबर्ट्स ने कोटा को विद्रोहियों से पूर्णतया मुक्त करवाया।
- जयदयाल व मेहराब खान को मृत्युदण्ड दिया गया।
- रामसिंह-II को दण्डित किया गया तथा उसकी तोपों की सलामी 15 से 11 कर दी गई।

टोंक

- नवाब वजीरुद्दौला अंग्रेजों का समर्थक था लेकिन उसके मामा मीर आलम खाँ ने विद्रोहियों का साथ दिया।
- ताराचन्द पटेल ने निम्बाहेड़ा में कर्नल जैक्सन की सेना का सामना किया। कर्नल जैक्सन नीमच के विद्रोहियों का पीछा कर रहा था।
- ✱ टोंक के विद्रोह में महिलाओं ने भी भाग लिया था।

धौलपुर

विद्रोही – राव रामचन्द्र
हीरालाल

- राजा भगवन्तसिंह ने विद्रोह दबाने के लिए पटियाला से सेना बुलाई।

भरतपुर

- गुर्जर व मेव जाति ने विद्रोह कर दिया था।
- राजा जसवन्तसिंह ने P.A. मॉरीसन को भरतपुर छोड़ने की सलाह दी

अलवर

राजा बन्नेसिंह ने अंग्रेजों का साथ दिया।
दीवान फैजल खाँ ने विद्रोहियों का साथ दिया।

जयपुर

विद्रोही – सादुल्ला खाँ
उस्मान खाँ
विलायत खाँ

- P.A. ईडन के कहने पर राजा रामसिंह-II इन्हें गिरफ्तार कर लिया।

Q राजस्थान में 1857 की क्रान्ति के घटनाक्रम को बताइये - 100

Q कुशालसिंह — चाम्पावत

Q नीमच छावनी

=> अंग्रेजों ने बीकानेर के सरदारसिंह को टिब्बी (हनुमानगढ़) क्षेत्र के 41 गाँव दिए।

=> बीकानेर का राजा सरदारसिंह एक मात्र राजा था जिसने अपनी रियासत से बाहर जाकर अंग्रेजों की मदद की।
(हिसार के पास बाडलू नामक स्थान पर)

अमर-चन्द बांठिया
- मूल रूप से बीकानेर के थे।
- 1857 की क्रान्ति में ग्वालियर में झांसी की रानी की वित्तीय सहायता की थी।
- इन्हें '1857 की क्रान्ति का भामाशाह' कहा जाता है।
- राजस्थान के प्रथम शहीद थे जिन्हें 1857 की क्रान्ति में फाँसी की सजा दी गई।

तांत्या टोपे
- तांत्या टोपे 2 बार राजस्थान आया था।
- सबसे पहले भीलवाड़ा के माण्डलगढ़ आया था।
- टोंक के नासिर मुहम्मद खाँ ने तांत्या टोपे का साथ दिया
- कुआड़ा के युद्ध में तांत्या टोपे रॉबर्ट्स से हार गया।
- झालावाड़ के राजराणा पृथ्वीसिंह ने तांत्या टोपे के खिलाफ सेना भेजी। पलायता नामक स्थान पर सेना की गोपाल पलटन को छोड़कर बाकी सेना ने लड़ने से मना कर दिया।

तात्या टोपे ने झालावाड़ पर अधिकार कर लिया । पृथ्वीसिंह को 5 लाख रुपये तात्या टोपे को देने पड़े ।

- तात्या टोपे ने बांसवाड़ा पर भी अधिकार कर लिया ।
- तात्या टोपे जैसलमेर को छोड़कर राजस्थान की सभी रियासतों में सहायता के लिए गया था ।
- कोठारिया के जोधसिंह तथा सलूम्बर के केसरीसिंह ने तात्या टोपे की सहायता की ।
- बीकानेर के सरदारसिंह ने तात्या टोपे को 10 घुड़सवार सैनिकों की सहायता दी थी ।
- सीकर के सामन्त को तात्या टोपे को शरण देने के आरोप में फांसी दी गई ।
- सीकर में तात्या टोपे की छतरी है ।

1857 की क्रान्ति के राजस्थान में प्रभाव :-

1. क्रान्ति में राजाओं ने अंग्रेजो का साथ दिया इसलिए क्रान्ति के बाद उन्हें सम्मानित किया गया तथा इनके साथ सहयोग की नीति अपनाई गई ।
2. सामन्तों ने क्रान्ति में विद्रोहियों का साथ दिया था इसलिए क्रान्ति के बाद उन्हें प्रभावहीन किया गया ।
3. क्रान्ति में वैश्यवर्ग (अमीर वर्ग) ने अंग्रेजो का साथ दिया इसलिए क्रान्ति के बाद उन्हें संरक्षण दिया गया ।
4. राजस्थान में यातायात व संचार के साधनों का विकास किया गया ।
5. राजा महाराजा तथा सामन्तों के पुत्र-पुत्रियों के लिए शिक्षा की अलग व्यवस्था की गई ताकि जनता से उनका सम्पर्क समाप्त किया जा सके, 1869 में वाल्टर द्वारा यह योजना दी गई जिसके [illegible] गया ।

6. राजस्थान की जनता विद्रोह में शामिल हो गई थी तथा इससे यह सिद्ध हो गया की राजस्थान की जनता अंग्रेजो की समर्थक नहीं है।

7. 1857 की क्रान्ति ने आगामी राष्ट्रीय आन्दोलन में प्रेरणा स्रोत का कार्य किया तथा कुशालसिंह चाम्पावत हमारे लोक गीत तथा लोक कहानियों का नायक बन गया।

किसान एवं जनजातीय आन्दोलन

1. बिजौलिया किसान आन्दोलन

बिजौलिया का पुराना नाम - विजयावल्ली

- राणा सांगा ने अशोक परमार को अमरमाल (उत्तमाद्रि) की जागीर दी थी। इस जागीर का मुख्य केन्द्र बिजौलिया था।
- अशोक परमार ने खानवा के युद्ध में भाग लिया था।
- बिजौलिया मेवाड़ रियासत का प्रथम श्रेणी ठिकाना था।
- बिजौलिया वर्तमान भीलवाड़ा जिले में स्थित है।

किसान आन्दोलन के कारण :-

1. 84 प्रकार के कर
2. अधिक भू-राजस्व
3. लाटा कुन्ता
4. चंवरी कर
5. तलवार बंधाई कर

→ कृष्णसिंह ने 1903 में लड़कियों की शादी पर चंवरी कर कर लगाया। (5 रूपये)

- तलवार बंधाई कर नये सामन्त द्वारा राजा को दिया जाता था लेकिन 1906 में पृथ्वीसिंह ने यह कर जनता पर लगा दिया था

प्रथम-चरण (1897-1915)

- धाकड़ जाति के किसानों द्वारा आन्दोलन किया गया।
- यह आन्दोलन गिरधरपुरा नामक गाँव से प्रारम्भ हुआ था।
- साधु सीताराम दास के कहने पर नानजी पटेल व ठाकरी पटेल को मेवाड़ महाराणा फतेहसिंह के पास सिकायत के लिए उदयपुर भेजा।
- महाराणा ने हमिद नामक अधिकारी को जाँच के लिए भेजा।
- प्रथम-चरण में किसानों को अधिक सफलता नहीं मिली।
- स्थानीय नेताओं द्वारा आन्दोलन-चलाया गया।

स्थानीय नेता — प्रेमचन्द भील
ब्रह्मदेव
फतेह करण-चारण

द्वितीय-चरण (1915-23)

- विजयसिंह पथिक तथा माणिक्यलाल वर्मा आन्दोलन से जुड़े।
- विजयसिंह पथिक ने 1917 में बैरीसाल नामक गाँव में हरियाली अमावस्य के दिन ऊपरमाल पंच बोर्ड की स्थापना की तथा मन्ना पटेल को इसका अध्यक्ष बनाया।
- विजयसिंह पथिक ने 'ऊपरमाल सेवा समिति' का गठन किया तथा 'ऊपरमाल का डंका' नाम से पत्र प्रकाशित किया।
- मेवाड़ रियासत ने 1919 में बिन्दुलाल भट्टाचार्य आयोग बनाया।
- A.G.G. रॉबर्ट हॉलैण्ड तथा मेवाड़ के P.A. विलकिन्स ने 1922 में किसानों के साथ समझौता करवाया तथा किसानों के 35 कर माफ दिए गए।

- बिजौलिया के सामंत ने इस समझौते को स्वीकार नहीं किया।

तृतीय-चरण (1923-41)

- विजयसिंह पथिक के कहने पर किसानो ने अपनी जमीने सामंत को लौटा दी, सामंत ने जमीनों को जब्त कर लिया।
- 1921 में विजयसिंह पथिक आन्दोलन से अलग हो गये।
- महात्मा गाँधी ने जमनालाल बजाज को आन्दोलन के लिए भेजा।
- बजाज जी ने हरिभाऊ उपाध्याय को आन्दोलन का नेतृत्व सौंपा।
- 1941 में मेवाड़ के प्रधानमंत्री वी. राघवाचारि तथा राजस्व मंत्री मोहनसिंह मेहता के प्रयासों से समझौता हुआ, किसानों की जब्त जमीनें उनको वापस दी गई तथा उनके कर कम कर दिए गए।

=> तिलक ने अपने 'मराठा' समाचार पत्र में बिजौलिया किसान आन्दोलन के पक्ष में लेख लिखा था तथा तिलक ने मेवाड़ महाराणा फतेहसिंह को पत्र भी लिखा।

- गणेश शंकर विद्यार्थी कानपुर से 'प्रताप' नामक समाचार-पत्र प्रकाशित करते थे तथा इनमें बिजौलिया किसान आन्दोलन की खबरें प्रकाशित होती थी।
- विजयसिंह पथिक ने गणेश शंकर विद्यार्थी को चाँदी की राखी भेजी थी।
- प्रेमचन्द का रंगभूमि उपन्यास बिजौलिया किसान आन्दोलन पर आधारित है।

- माणिक्य लाल वर्मा 'पेंढीड़ा' गीत के माध्यम से किसानों को उत्साहित करते थे।
- भंवरलाल जी ने भी अपने गीतों से किसानों को उत्साहित किया था।

आन्दोलन का महत्व

1. राजस्थान का पहला संगठित किसान आन्दोलन था।
2. विश्व का सबसे लम्बा अहिंसक आन्दोलन था।
3. किसानों में राजनैतिक चेतना का विकास हुआ।
4. राजस्थान के अन्य किसान आन्दोलनों को प्रेरणा मिली। जैसे - बेगू, बूंदी
5. हमारा राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ जुड़ाव स्थापित हुआ।

Q बिजौलिया किसान आन्दोलन पर लेख लिखो? — 100 words

2. बेगूं किसान आन्दोलन

- बेगूं मेवाड़ रियासत का प्रथम श्रेणी ठिकाना था।
- वर्तमान चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित है।
- यहाँ पर भी धाकड़ किसानों द्वारा आन्दोलन किया गया।
- 1921 में मेनाल (भीलवाड़ा) नामक स्थान से आन्दोलन प्रारम्भ हुआ।
- बेगूं के सामन्त अनूपसिंह ने किसानों से समझौता कर लिया लेकिन मेवाड़ रियासत ने इसे मानने से मना कर दिया तथा इसे बोल्शेविक समझौता कहा।
  (ट्रेन्च ने कहा)
- मेवाड़ महाराणा ने ट्रेन्च को जाँच करने के लिए भेजा।
- 13 July 1923 को गोविन्दपुरा में किसानों की सभा पर ट्रेन्च ने फायरिंग कर दी। रूपाजी व किरपाजी नामक दो धाकड़ किसान शहीद हो गये।

प्रमुख नेता - रामनारायण चौधरी
विजयसिंह पथिक

- 10 सितम्बर 1923 को विजयसिंह पथिक को गिरफ्तार कर लिया।

3. बूंदी किसान आन्दोलन (बरड किसान आन्दोलन)

- साधु सीताराम दास ने 1920 में डाबी किसान पंचायत की स्थापना की
↓ अध्यक्ष
हरला भड़क

- अप्रैल 1922 से आन्दोलन प्रारम्भ हुआ।
- 2 अप्रैल 1923 को डाबी में किसानों की सभा पर इकराम हुसैन ने फायरिंग कर दी, नानकजी भील तथा देवीलाल गुर्जर शहीद हो गये। (नानकजी भील झण्डा गीत गा रहे थे)

मुख्य नेता :- पण्डित नयनूराम शर्मा → (राजस्थान सेवा संघ के सदस्य)
नारायणसिंह
भंवरलाल सुनार

- 1927 में राजस्थान सेवा संघ के बंद होने से आन्दोलन समाप्त हो गया।
- बूंदी किसान आन्दोलन में महिलाओं ने भाग लिया था।
- बूंदी किसान आन्दोलन में गुर्जर किसानों की संख्या अधिक थी।

4. नीमूचणा किसान आन्दोलन

नीमूचणा हत्याकाण्ड (14 May 1925)

करों में वृद्धि के खिलाफ किसानों की एक सभा हो रही थी, छाजूसिंह नामक पुलिस अधिकारी ने फायरिंग कर दी जिसमें 156 लोग शहीद हुये थे।

- गाँधीजी ने अपने 'यंग इण्डिया' समाचार पत्र में इसे दोहरी डायरशाही बताया तथा जलियावाला काण्ड से भी अधिक भयानक बताया।
- 'रियासत' समाचार पत्र ने नीमूचणा हत्याकाण्ड की तुलना जलियावाला हत्याकाण्ड से की।
- 'तरुण राजस्थान' समाचार-पत्र ने इस घटना को सचित्र प्रकाशित किया था।
- नीमूचणा किसान आन्दोलन में राजपूत किसानों की संख्या अधिक थी

5. शेखावाटी किसान आन्दोलन

- 1922 में सीकर के सामन्त कल्याणसिंह ने करों में वृद्धि कर दी।
- राजस्थान सेवा संघ के मंत्री रामनारायण चौधरी के नेतृत्व में आन्दोलन चलाया गया।
- लंदन के समाचार पत्र 'डेली हेराल्ड' में आन्दोलन की खबरें छपती थी
- 1925 में पैथिक लॉरेन्स ने ब्रिटेन के हाउस ऑफ कॉमन्स में आन्दोलन की बात की।
- 1931 में जाट क्षेत्रीय महासभा का गठन किया गया।

महासभा का प्रथम अधिवेशन — पलथाना (सीकर)
(1933)

- 20 Jan 1934 को बसंत पंचमी के दिन ठाकुर देशराज ने 'जाट प्रजापति महायज्ञ' का आयोजन करवाया।

मुख्य पुरोहित
खेमराज शर्मा

मुख्य यजमान — कुंवर हुकुमसिंह

→सीकर

कटराथल सम्मेलन (25 अप्रैल 1934)

10000 से अधिक महिलाओं का सम्मेलन था।

कारण - सीहोट के सामन्त ने महिलाओं से दुर्व्यवहार किया था।

अध्यक्षा - किशोरी देवी

मुख्य वक्ता — उत्तमा देवी

→सीकर

कूदन हत्याकाण्ड (25 अप्रैल 1935)

- धापी देवी के उत्साहित करने पर किसानों ने Tax देने से मना कर दिया केप्टन वेब ने वहाँ पर फायरिंग कर दी जिसमे 4 किसान शहीद हो गये।

↓

चेतराम
टीकूराम
तुलछाराम
आशाराम

- इस हत्याकाण्ड की चर्चा ब्रिटेन के हाउस ऑफ कॉमन्स में हुई थी।

→झुंझुनूं

जयसिंहपुरा हत्याकाण्ड (21 June 1934)

* यह प्रथम हत्याकाण्ड था जिसमें किसानों के हत्यारों को सजा मिली।

जनजातीय आन्दोलन

कारण

1. वनों में जनजातियों के अधिकार समाप्त कर दिये गये थे।
2. इनके सामाजिक रीति-रिवाजों में हस्तक्षेप किया गया।
   जैसे - 1853 में मेवाड़ महाराणा स्वरूपसिंह ने डाकन प्रथा पर रोक लगा दी थी।
3. जनजातियां नई प्रशासनिक व्यवस्था को समझ नहीं पायी तथा इसमें उनका शोषण होता था।
4. भू-राजस्व नकदी में लिया जाता था अतः ये लोग साहूकारों के चंगुल में फंस गये।

1. भगत आन्दोलन

- मेवाड़, डूंगरपुर, बांसवाड़ा की भील जनजाति द्वारा आन्दोलन किया गया।
- गोविन्द गुरु ने सुरजी भगत के साथ मिलकर आन्दोलन चलाया था।
- गोविन्द गुरु ने 1883 में सम्प सभा का गठन किया।
- गोविन्द गुरु स्वामी दयानन्द सरस्वती से प्रभावित थे। जनजातियों को हिन्दु धर्म में रखने के लिए भगत पंथ की स्थापना की।
- गोविन्द गुरु ने भीलों का नैतिक व आध्यात्मिक उत्थान किया।

→ बांसवाड़ा
मानगढ़ हत्याकाण्ड (17 Nov 1913) :-

मानगढ़ पहाड़ी पर सम्प सभा का अधिवेशन हो रहा था, पुलिस द्वारा फायरिंग की गई जिसमें 1500 से अधिक भील मारे गये।

- इसे 'राजस्थान का जलियावाला हत्याकाण्ड' कहा जाता है।

- गोविन्द गुरू को गिरफ्तार कर लिया।
- गोविन्द गुरू को 10 वर्ष बाद रिहा कर दिया गया।
- गोविन्द गुरू ने शेष जीवन कम्बिया गाँव (गुजरात) में शांतिपूर्ण तरीके से गुजारा।
- गोविन्द गुरू अहिंसा के समर्थक थे, उनका सफेद झण्डा शांति का प्रतीक था।

2. एकी आन्दोलन (भोमट-भील आन्दोलन)

- उदयपुर की झाड़ोल, गोगुन्दा, कोटड़ा क्षेत्र में भील व गरासिया जनजाति द्वारा आन्दोलन किया गया।
- यह आन्दोलन मातृकुण्डया (चित्तौड़) नामक स्थान से प्रारम्भ हुआ।

{मातृकुण्डया को राजस्थान का हरिद्वार कहा जाता है।}

नेता - मोतीलाल तेजावत

- मोतीलाल तेजावत ने मेवाड़ महाराणा के सामने 21 मांगे रखी जिन्हें 'मेवाड़ की पुकार' कहा जाता है, लेकिन इन मांगों पर ध्यान नहीं दिया गया।
- धीरे-धीरे यह आन्दोलन डूँगरपुर, ईडर, विजयनगर (गुजरात), बांसवाड़ा आदि क्षेत्रों में फैल गया।

मानगढ़ हत्याकाण्ड (विजयनगर) 6 मार्च 1922

- भीलों की एक सभा पर पुलिस द्वारा फायरिंग की गई जिसमें 1200 से अधिक भील मारे गये।
- मोतीलाल तेजावत फरार हो गये। 1929 में गाँधीजी के कहने पर ईडर में आत्मसमर्पण कर दिया।
- 1936 में मेवाड़ के सुप्रीम कोर्ट महाइन्द्राज सभा ने मोतीलाल तेजावत को रिहा कर दिया। इन्होंने अपना शेष जीवन गाँधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों में बिताया।

{महाइन्द्राज सभा की स्थापना 1880 में मेवाड़ महाराणा सज्जनसिंह ने की थी।}

3. मीणा आन्दोलन

- 1924 में आपराधिक जनजाति अधिनियम पारित किया गया तथा इसमें मीणा जनजाति को शामिल किया गया।
- 1930 में जरायम पेशा कानून पारित हुआ तथा सभी मीणा महिला-पुरूषों को थाने में हाजरी लगवाना अनिवार्य कर दिया।
- 1933 में मीणा क्षेत्रीय महासभा का गठन किया।
- सन्त मगन सागर ने 1945 में नीम का थाना में मीणा सम्मेलन का आयोजन किया तथा 'मीन पुराण' नामक पुस्तक लिखी।
- 1945 में बंशीधर शर्मा ने जयपुर मीणा सुधार समिति का गठन किया

(जयपुर)

- 22 Oct 1946 को बागावास सम्मेलन में सभी चौकीदार मीणाओं ने अपने पदों से इस्तीफे दिए तथा इसे मुक्ति दिवस के रूप में मनाया।
- 1952 में जरायम पेशा कानून समाप्त कर दिया गया।

प्रथम संविधान दिवस – 26 Nov 2015

प्रजामण्डल आन्दोलन

- 1927 में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् का गठन बॉम्बे में किया गया।
  ↓
  अध्यक्ष – दीवान रामचन्द्र राव
  उपाध्यक्ष – विजयसिंह पथिक
  रामनारायण चौधरी को राजपूताना व मध्य भारत का सचिव बनाया गया।

- 1928 में राजपूताना देशी राज्य लोक परिषद् का गठन किया गया।
  1931 में इसका प्रथम अधिवेशन — अजमेर
  अध्यक्ष — रामनारायण चौधरी

- 1938 के हरिपुरा अधिवेशन में कांग्रेस ने प्रजामण्डल आन्दोलन को अपना समर्थन दिया। (अध्यक्ष – सुभाषचन्द्र बोस)

=>

1931	1934	1936	1938	1939	1942	1944
↓	↓	↓	↓	↓	↓	↓
जयपुर	मारवाड़	बीकानेर	मेवाड़	कोटा	कुशलगढ़	डूंगरपुर
बूंदी	~~सिरोही~~	धौलपुर	शाहपुरा	किशनगढ़		
	हाड़ौती		अलवर	~~सिरोही~~		
			भरतपुर			
			करौली			
			धौलपुर			

1945	1946	1943
↓	↓	↓
~~बांसवाड़ा~~	झालावाड़	बांसवाड़ा
प्रतापगढ़		
जैसलमेर		

1. जयपुर प्रजामण्डल (1931)

संस्थापक – कर्पूर-चन्द पाटनी

- 1936 में जमनालाल बजाज ने पुनर्गठन किया।
- चिरंजीलाल मिश्र को अध्यक्ष बनाया

जेन्टलमैन एग्रीमेंट (17 Sep 1942) :- जयपुर के प्रधानमंत्री मिर्जा इस्माइल और प्रजामण्डल के अध्यक्ष हीरालाल शास्त्री के मध्य।

↓

शर्तें :
1. जयपुर रियासत भारत छोड़ो आन्दोलन में अंग्रेजों की मदद नहीं करेगी।
2. प्रजामण्डल शांतिपूर्ण जुलुस, धरना, प्रदर्शन कर सकता है।
3. जयपुर रियासत ब्रिटिश भारत के विद्रोही को नहीं पकड़ेगी तथा प्रजामण्डल उसे शरण दे सकता है।
4. जयपुर प्रजामण्डल भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग नहीं लेगा।

आजाद मोर्चा :-

समझौते से असंतुष्ट कार्यकर्ताओं ने बाबा हरिश्चन्द्र के नेतृत्व में आजाद मोर्चा का गठन किया तथा भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया।

अन्य सदस्य – रामकरण जोशी
दौलतमल भण्डारी
गुलाबचन्द कासलीवाल

- 1945 में नेहरू जी के कहने पर आजाद मोर्चा का प्रजामण्डल में विलय हो गया।

हरविलास शारदा – 1929 में बाल विवाह रोकने हेतु शारदा ए
काका कालेलकर - 1st OBC आयोग अध्यक्ष

2. बूंदी प्रजामण्डल (1931)

संस्थापक – कांतिलाल
नित्यानंद
ऋषिदत्त मेहता → 1923 में ब्यावर से 'राजस्थान' नामक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित करते थे। इसमें हाड़ौती की खबरें होती थी

3. मारवाड़ प्रजामण्डल (1934)

1918 – मारवाड़ हितकारिणी सभा → चांदमल सुराणा
↓
1923 में इसका पुनर्गठन किया गया

1920 – मारवाड़ सेवा संघ → जयनारायण व्यास
↓
तौल आन्दोलन चलाया (100 तोले के स्थान पर 80 तोले का 1 सेर कर दिया गया था इसके विरो

1929 – मारवाड़ राज्य लोक परिषद् → जयनारायण व्यास
↓
1931 में प्रथम अधिवेशन — पुष्कर
↓ अध्यक्ष — चांदकरण शारदा
- कस्तूरबा गांधी तथा काका कालेलकर ने इस अधिवेशन में भाग लिया।

10 मई 1931 – मारवाड़ यूथ लीग — जयनारायण व्यास

1932 में छगनराज – चौपासनीवाला ने जोधपुर में भारतीय झण्डा फैहराया।

1934 — मारवाड़ प्रजामण्डल — भंवरलाल सर्राफ

- 1936 में मारवाड़ प्रजामण्डल ने बॉम्बे में कृष्णा दिवस तथा जोधपुर में शिक्षा दिवस मनाया ।

- 1936 में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् का अधिवेशन कराची में हुआ । जयनारायण व्यास को महामंत्री बनाया गया ।

  ↓ इस कारण

- जोधपुर महाराजा ने व्यास जी के जोधपुर प्रवेश पर पाबंदी लगा दी । बीकानेर महाराजा गंगासिंह ने जोधपुर के प्रधानमंत्री डोनाल्ड फील्ड को पत्र लिखा तथा इस पाबंदी को हटवाया ।

- भारत छोड़ो आन्दोलन में व्यास जी को सिवाणा किले में नजरबंद किया गया तथा प्रजामण्डल के अन्य नेताओं को जालौर किले में नजरबंद किया गया ।

- बालमुकुन्द बिस्सा — 19 जून 1942 को जोधपुर में भूख हड़ताल के दौरान शहीद हो गये ।
  - जवाहर-खादी भण्डार की स्थापना की ।

[बालकृष्ण कौल - अजमेर जेल में भूख हड़ताल की]

जयनारायण व्यास —Books→ 1. मारवाड़ की अवस्था
2. पोपाबाई की पोल

समाचार-पत्र → 1. अखण्ड भारत — बॉम्बे — हिन्दी
2. Peep — दिल्ली — अंग्रेजी
3. आगीबाण — ब्यावर — राजस्थानी
↳ राजस्थान प्रथम राजस्थानी समाचार-पत्र (1932)

→पाली
चण्डावल आन्दोलन (1944-45) - किसान आन्दोलन हुआ

→नागौर
डाबड़ा काण्ड (13 मार्च 1947) -

डाबड़ा गाँव (नागौर) में मोतीलाल नामक किसान के घर पर प्रजामण्डल के कार्यकर्त्ताओं की सभा हो रही थी। डीडवाना के सामन्त ने लाठीचार्ज करवा दिया जिसमें मोतीलाल के साथ कई किसान मारे गये तथा प्रजामण्डल के बड़े नेता मथुरादास माथुर घायल हो गये थे।

4. हाड़ौती प्रजामण्डल (1935)

संस्थापक - पंडित नयनूराम शर्मा

5. बीकानेर प्रजामण्डल (1936)

1913 - सर्वहितकारिणी सभा —संस्थापक→ कन्हैयालाल ढूंढ
स्वामी गोपालदास

↓

इस संस्था ने बालिका विद्यालय (लड़की) तथा कबीर विद्यालय (दलित) की स्थापना की

- 1930 में स्वामी गोपालदास तथा चन्दनमल बहड़ ने चुरू के धर्मस्तूप पर भारत का झण्डा फहरा दिया।

- बीकानेर महाराजा गंगासिंह 1931 के दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए लंदन गया तो वहां पर उसके खिलाफ बीकानेर-दिग्दर्शन नामक पर्चे बांटे गये।

बीकानेर षड्यंत्र मुकदमा (1932) :-

स्वामी गोपालदास
चन्दनमल बहड़
सत्यनारायण सर्राफ
खूबराम सर्राफ

} => इन्हें गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया (बीकानेर-दिग्दर्शन के कारण)

- 1936 में वैद्य मघाराम नें कलकत्ता में बीकानेर प्रजामण्डल की स्थापना की।
- 1942 में रघुवर दयाल गोयल ने बीकानेर देशी राज्य लोक परिषद् की स्थापना की।
- 1 July 1946 को रायसिंह नगर में पुलिस फायरिंग में बीरबल नामक युवक शहीद हो गया।
- 17 July 1946 को बीकानेर रियासत में बीरबल दिवस मनाया गया।
- इंदिरा गांधी नहर की एक शाखा का नाम बीरबल शाखा है।
- 26 Oct 1944 → बीकानेर दमन विरोधी दिवस

बीकानेर रियासत के किसान आन्दोलन

बीकानेर { 1. उदासर
2. महाजन }

चुरू ← { 3. दूधवा खारा
4. काँगड़ }

मुख्य किसान नेता - हनुमान सिंह आर्य
मघासिंह आर्य

6. धौलपुर प्रजामण्डल (1936)

संस्थापक – कृष्णदत्त पालीवाल
ज्वाला प्रसाद जिज्ञासु

- स्वामी श्रद्धानन्द की प्रेरणा से प्रजामण्डल स्थापित हुआ।

तसीमो काण्ड (धौलपुर) (12 Nov 1946) –
पुलिस फायरिंग में पंचमसिंह व छत्तासिंह शहीद हो गये।

7. मेवाड़ प्रजामण्डल (1938)

स्थापना — 24 अप्रैल 1938

संस्थापक — बलवन्तसिंह मेहता — अध्यक्ष
भूरेलाल बया — उपाध्यक्ष
माणिक्य लाल वर्मा — महामंत्री

- मेवाड़ रियासत ने प्रजामण्डल पर रोक लगा दी तो वर्माजी ने अजमेर से प्रजामण्डल को चलाया।

प्रजामण्डल का प्रथम अधिवेशन – 25, 26 Nov 1941, उदयपुर
अध्यक्ष – माणिक्य लाल वर्मा
- इस अधिवेशन मे जे. बी. कृपलानी तथा विजय लक्ष्मी पण्डित ने भाग लिया था।

- भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान नारायणी देवी वर्मा तथा भगवती देवी विश्नोई जेल गयी थी
- भूरेलाल बया को सराड़ा किले में नजरबंद किया गया।
- सराड़ा किले को मेवाड़ का काला पानी कहा जाता है।

- 1946 में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् का 7वां अधिवेशन उदयपुर के सलेटिया मैदान में हुआ।

अध्यक्ष - जवाहर लाल नेहरू

- शेख अब्दुल्ला ने भी इस अधिवेशन में भाग लिया था।
  ↳ शेर-ए-कश्मीर

मेवाड़ प्रजामण्डल के अन्य केन्द्र - भीलवाड़ा
जोधपुर

- भीलवाड़ा के रमेशचन्द्र व्यास मेवाड़ प्रजामण्डल के प्रथम सत्याग्रही थे।

माणिक्यलाल वर्मा —Book→ मेवाड़ का वर्तमान शासन

इस पुस्तक में मेवाड़ महाराणा की आलोचना की गई इसलिए वर्माजी को गिरफ्तार कर लिया गया, गांधीजी ने अपने हरिजन समाचार-पत्र में इसका विरोध किया।

8. शाहपुरा प्रजामण्डल (1938)

संस्थापक - लादूराम व्यास
रमेश-चन्द्र ओझा

- माणिक्यलाल वर्मा की प्रेरणा से प्रजामण्डल स्थापित हुआ।
- शाहपुरा में सबसे पहले अन्तरिम सरकार की स्थापना की गई।

राजा - सुदर्शन देव
प्रधानमंत्री - गोकुल लाल असावा

9. भरतपुर प्रजामण्डल (1938)

संस्थापक – किशनलाल जोशी
दुगल किशोर चतुर्वेदी – राजस्थान का नेहरू
मास्टर आदित्येन्द्र
गोपीलाल यादव – अध्यक्ष

- प्रजामण्डल की स्थापना रेवाड़ी (हरियाणा) में हुई।
- प्रजामण्डल का समाचार पत्र – वैभव

10. अलवर प्रजामण्डल (1938)

संस्थापक – हरिनारायण शर्मा

↓ संस्था

1. वाल्मीकि संघ
2. अस्पृश्यता निवारण संघ
3. आदिवासी संघ

- प्रथम अधिवेशन के अध्यक्ष – भवानी शंकर शर्मा
- अलवर प्रजामण्डल ने भी भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग नहीं लिया

11. करौली प्रजामण्डल (1938)

संस्थापक – त्रिलोक-चन्द माथुर
चिरंजी लाल शर्मा
कुंवर मदन सिंह → 1947 में करौली में किसान आन्दोलन चलाया।

12. कोटा प्रजामण्डल (1939)

संस्थापक – पं. नयनूराम शर्मा
अभिन्न हरि

प्रथम अधिवेशन – मांगरोल (बांरा)
अध्यक्ष – पं. नयनूराम शर्मा

- भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान अध्यक्ष मोतीलाल जैन के नेतृत्व में प्रजामण्डल के कार्यकर्ताओं ने कोटा के प्रशासन पर अधिकार कर लिया।
- कॉलेज की छात्राओं ने रामपुरा पुलिसथाने पर कब्जा कर लिया।

13. किशनगढ़ प्रजामण्डल (1939)

संस्थापक – कांतिलाल चौधरी
जमान शाह

14. सिरोही प्रजामण्डल (1939)

संस्थापक – वृद्धिशंकर त्रिवेदी
गोकुल भाई भट्ट – राजस्थान का गांधी

- प्रजामण्डल की स्थापना बॉम्बे में हुई

15. कुशलगढ़ प्रजामण्डल (1942)

संस्थापक – भंवरलाल निगम

15. बांसवाड़ा प्रजामण्डल (1943)

संस्थापक – भूपेन्द्र नाथ त्रिवेदी – बॉम्बे से संग्राम नामक समाचार
मीणाशंकर नागर पत्र निकालते थे।
धूलजी भाई भावसार

- विजया बहिन भावसार ने महिला मण्डल का गठन किया।

16. डूँगरपुर प्रजामण्डल (1944)

संस्थापक - भोगीलाल पाण्ड्या – वांगड़ का गांधी
हरिदेव जोशी – राज्यपाल से मुख्यमंत्री बना
गौरी शंकर उपाध्याय समाचार पत्र → सेवक

शहादत घटना (19 June 1947)

इस घटना में अध्यापक नाना भाई तथा भील बालिका काली बाई शहीद हो गये तथा एक अन्य अध्यापक सेंगा भाई घायल हो गये।
- डूँगरपुर में गैप सागर झील के पास नाना भाई तथा काली बाई की मूर्तियां है।
- बालिका शिक्षा के क्षेत्र में कालीबाई पुरस्कार दिया जाता है।

पुनापाडा घटना (May 1947)

अध्यापक शिवराम भील घायल हो गये थे।

⇒* डूँगरपुर प्रजामण्डल ने प्रयाग यात्राओं का आयोजन किया।

17. प्रतापगढ़ प्रजामण्डल

संस्थापक - ठक्कर बापा
अमृतलाल पायक
चुन्नीलाल प्रभाकर

18. जैसलमेर प्रजामण्डल

संस्थापक - मीठालाल व्यास
- जोधपुर में प्रजामण्डल की स्थापना की।
- रघुनाथ सिंह ने 'माहेश्वरी नवयुवक मण्डल' की स्थापना की

19. झालावाड़ (1946)

संस्थापक - मांगीलाल भव्य

राजा हरिश्चन्द्र के नेतृत्व में उत्तरदायी सरकार की स्थापना की गई।

प्रजामण्डल आन्दोलन का योगदान

1. राजनैतिक :- 1. उत्तरदायी शासन की स्थापना
2. राजनैतिक चेतना का विकास
3. राष्ट्रीय चेतना का विकास
4. एकीकरण
5. राष्ट्रीय एकता मजबूत
6. राजतंत्र समाप्त
7. लोकतंत्र की स्थापना
8. किसान आन्दोलनों को समर्थन

सामाजिक :— 1. हिन्दू - मुस्लिम एकता
2. छुआछुत निवारण
3. महिला सशक्तिकरण
4. शिक्षा का प्रचार - प्रसार
5. नागरिक असमानता समाप्त
6. सामाजिक कुरीतियां समाप्त

आर्थिक — 1. जागीरदारी उन्मूलन
2. किसान को भूमि पर अधिकार
3. बेगार प्रथा समाप्त
4. कुटीर उद्योग - धन्धों को बढ़ावा

राजस्थान का एकीकरण

आजादी के समय राजस्थान में 19 रियासत
3 ठिकाने – लावा
कुशलगढ़
नीमराणा
1 केन्द्र शासित प्रदेश → अजमेर-मेरवाड़ा

- 5 July 1947 को रियासती सचिवालय की स्थापना की गई।
अध्यक्ष – वल्लभ भाई पटेल
सचिव – वी. पी. मेनन

- भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम की धारा - 8 में कहा गया कि अंग्रेज तथा देशी रियासतों के बीच की संधियां समाप्त कर दी जाएगी।
- मेवाड़ महाराणा भूपालसिंह ने राजस्थान, गुजरात व मालवा की रियासतों को मिलाकर राजस्थान यूनियन बनाने का प्रयास किया तथा इसके लिए 25 June 1946 को उदयपुर में सम्मेलन किया।
- रियासती विभाग ने घोषणा की कि 10 लाख से अधिक जनसंख्या व 1 करोड़ से अधिक आय वाली रियासते आजाद रह सकती है। राजस्थान में ऐसी चार रियासते थी → मेवाड़
मारवाड़
जयपुर
बीकानेर

- राजस्थान का एकीकरण 7 चरणों में किया गया।

प्रथम-चरण (मत्स्य संघ – 18 मार्च 1948)

धौलपुर → उदयभान सिंह → राजप्रमुख

करौली → गणेशपाल → उपराजप्रमुख

अलवर → राजधानी

भरतपुर → उद्घाटन → 18 मार्च 1948 → मुख्य अतिथि N.V. गाडविल

नीमराणा

प्रधानमंत्री – शोभाराम कुमावत

उप प्रधानमंत्री – युगल किशोर-चतुर्वेदी

नाम – ~~मत्स्य~~ मत्स्य संघ —नामकरण कर्ता→ R.M. मुंशी

- अलवर व भरतपुर रियासत पर भारत सरकार ने पहले ही अधिकार कर लिया था।

द्वितीय-चरण (राजस्थान संघ / पूर्व राजस्थान)

कोटा बूंदी झालावाड़, डूंगरपुर, बांसवाड़ा प्रतापगढ़ टोंक किशनगढ़ शाहपुरा कुशलगढ़

कोटा → भीमसिंह → राजप्रमुख → राजधानी → उद्घाटन → 25 मार्च 1948 → N.V. गाडविल

बूंदी → बहादुरसिंह → वरिष्ठ उपराजप्रमुख

डूंगरपुर → लक्ष्मणसिंह → कनिष्ठ उपराजप्रमुख

प्रधानमंत्री – गोकुल लाल असावा

- शाहपुरा व किशनगढ़ रियासतो ने अजमेर - मेरवाड़ा से मिलने से मना कर दिया।
- शाहपुरा व किशनगढ़ रियासतो को तोपों की सलामी नहीं दी जाती थी।
  ↓
  राजस्थान की सबसे छोटी रियासत
- बांसवाड़ा के राजा चन्द्रवीर सिंह ने कहा था "मैं अपने डेथ वारन्ट पर हस्ताक्षर कर रहा हूँ।"
- टोंक राजस्थान की एकमात्र मुस्लिम रियासत थी।

तीसरा चरण (संयुक्त राजस्थान)

↓

राजस्थान संघ + मेवाड़

राजप्रमुख - भूपालसिंह (मेवाड़)
वरिष्ठ उपराजप्रमुख - भीमसिंह (कोटा)
कनिष्ठ उपराजप्रमुख - बहादुरसिंह (बूंदी)
लक्ष्मणसिंह (डूँगरपुर)

प्रधानमंत्री - माणिक्यलाल वर्मा
उप प्रधानमंत्री - गोकुललाल असावा
राजधानी - उदयपुर

- विधानसभा का एक अधिवेशन प्रतिवर्ष कोटा में होगा तथा कोटा के विकास के लिए विशेष प्रयास किये जाएँगे।

उद्घाटन - 18 अप्रैल 1948, उदयपुर
↳ जवाहर लाल नेहरू

- भूपालसिंह ने 20 लाख रूपये प्रीवीपर्स की मांग की।

10 लाख → प्रीवीपर्स
5 लाख → राजप्रमुख का वेतन
5 लाख → धार्मिक अनुदान

चौथा चरण (वृहत राजस्थान)

संयुक्त राजस्थान + जयपुर
जोधपुर
बीकानेर
जैसलमेर

उद्घाटन - 30 मार्च 1949 * राजस्थान दिवस - 30 मार्च

- जयपुर
- वल्लभ भाई पटेल ने उद्घाटन किया था।

महाराजप्रमुख - भूपालसिंह (मेवाड़)
राजप्रमुख - सवाई मानसिंह-II (जयपुर)
वरिष्ठ उप राजप्रमुख - हनवन्तसिंह (जोधपुर)
भीमसिंह (कोटा)
कनिष्ठ उप राजप्रमुख - बहादुरसिंह (बूंदी)
लक्ष्मणसिंह (डूँगरपुर)
प्रधानमंत्री - हीरालाल शास्त्री

- जयपुर व जोधपुर के बीच राजधानी को लेकर विवाद था अतः इसके समाधान के लिए वल्लभ भाई पटेल ने एक समिति का गठन किया।

समिति के सदस्य - बी. आर. पटेल
एच. सी. पुरी
एच. पी. सिन्हा

- इस समिति ने जयपुर को राजधानी बनाया।

उच्च न्यायालय — जोधपुर
शिक्षा विभाग — बीकानेर
खनिज विभाग — उदयपुर
वन एवं सहकारी विभाग — कोटा

सायर – पारगमन शुल्क

प्रीविपर्स :- जयपुर — 18 लाख
जोधपुर — 17.5 लाख
बीकानेर — 17 लाख

पांचवा-चरण (संयुक्त वृहत्तर राजस्थान)

वृहत राजस्थान + मत्स्य संघ

- मत्स्य संघ का विलय — 15 मई 1949
- यह विलय शंकर राव देव समिति की सिफारिश पर हुआ था।

अन्य सदस्य — R.K. सिद्धवा
प्रभुदयाल

- शोभाराम कुमावत को शास्त्री मंत्री मण्डल में शामिल कर लिया गया।
- भरतपुर को कृषि विभाग दिया गया।

छठा-चरण

- आबू व देलवाड़ा सहित 89 गाँव गुजरात में मिलाये गए तथा शेष सिरोही राजस्थान में मिला दिया गया इसमें गोकुल भाई भट्ट का गाँव हाथल भी शामिल था।
- यह विलय — 26 जनवरी 1950 को किया गया तथा हमारे प्रदेश का नाम राजस्थान भी कर दिया।
- इस अनुचित विलय पर पटेल का जबाव था " राजस्थान वालों को गोकुल भाई भट्ट-चाहिए था वो हमने दे दिया।"

- हीरालाल शास्त्री को राजस्थान का प्रथम मनोनित मुख्यमंत्री बनाया गया।

मनोनित मुख्यमंत्री – हीरालाल शास्त्री
जयनारायण व्यास
सी. एस. वेंकटाचारी (ICS)

निर्वाचित मुख्यमंत्री – 1. टीकाराम पालीवाल (प्रथम) → बाद में उपमुख्यमंत्री बने।
2. जयनारायण व्यास
3. मोहनलाल सुखाड़िया – राजस्थान के सबसे युवा C.M.
– राजस्थान के सर्वाधिक समय रहने वाले C.M.

- सबसे कम समय तक रहने वाले मुख्यमंत्री — हीरालाल देवपुरा (16 दि
↓
बाद में मंत्री बनाया गया

- पहले चुनाव (1951-52) में कांग्रेस के बाद सर्वाधिक सीटें रामराज्य परिषद् को मिली थी।

सातवां चरण

- फाजल अली की अध्यक्षता में राज्य पुनर्गठन आयोग बनाया गया।
इसके दो अन्य सदस्य – के. एम. पणिक्कर → बीकानेर की तरफ से संविधा सभा में सदस्य
हृदयनाथ कुंजरू

- इस आयोग की सिफारिशों की आधार पर –
1. आबू व देलवाड़ा राजस्थान में मिलाये गये।
2. अजमेर – मेरवाड़ा को राजस्थान में मिलाया।
3. मध्यप्रदेश का सुनेल टप्पा राजस्थान में मिलाया गया।
4. राजस्थान का सिरोंज मध्यप्रदेश में मिलाया।

– 1 Nov 1956 को राजस्थान का एकीकरण ~~सम्भ~~ सम्पन्न हुआ।

- 1 Nov 2000 को राजस्थान भारत का सर्वाधिक क्षेत्रफल वाला राज्य बना।
(M.P. से छत्तीसगढ़ अलग हुआ)

- 1956 में सातवां संविधान संशोधन किया गया तथा राजप्रमुख का पद समाप्त कर दिया गया।

राजस्थान के प्रथम राज्यपाल – सरदार गुरूमुख निहालसिंह

- 1971 में 26वां संविधान संशोधन किया गया तथा राजाओं के प्रीवीपर्स समाप्त कर दिए गए।

- अजमेर पहले केन्द्र शासित प्रदेश था तथा वहाँ पर द्वारा सभा (30 सदस्य) होती थी तथा हरिभाऊ उपाध्याय इसके मुख्यमंत्री थे।

★ हरिभाऊ उपाध्याय ने अजमेर-मेरवाड़ा के राजस्थान में विलय का विरोध किया था।

- जयपुर व अजमेर में राजधानी को लेकर विवाद हो गया तथा इसके समाधान के लिए एक समिति बनायी गई।

⇓

सदस्य – सत्यनारायण राव
वी. विश्वनाथन
वी. के. गुप्ता

- इस समिति ने जयपुर को ही राजधानी बनाने की सिफारिश की।
- अजमेर को राजस्व विभाग दिया गया।
- 19 July 1948 को लावा ठिकाने को जयपुर रियासत में मिला दिया गया।

(134) 04/02/17 Naveen

कला एवं संस्कृति

(Art & Culture)

4/2/17

राजस्थान के त्यौहार :

विक्रमी संवत के महिने : (चन्द्रमा आधारित) $29\frac{1}{2} \times 12 = 354/355$

(1.) चैत्र	(7.) आश्विन
(2.) बैशाख	(8.) कार्तिक
(3.) ज्येष्ठ	(9.) मार्गशीर्ष
(4.) आषाढ	(10.) पौष
(5.) श्रावण	(11.) माघ
(6.) भाद्रपद	(12.) फाल्गुन

(134)

→ सूर्य आधारित कैलेण्डर से बराबर करने के लिए प्रत्येक 3rd वर्ष विक्रमी संवत में एक (1) अतिरिक्त महिना जोड़ दिया जाता है इसे अधिकमास कहा जाता है।

चन्द्रमा आधारित $29\frac{1}{2} \times 12 = 355$

सूर्य आधारित $= 365$

+10 दिन (1 साल में)

पौष - माघ → जनवरी

माघ - फाल्गुन → फरवरी

फाल्गुन - चैत्र → मार्च

चैत्र - बैशाख → अप्रैल

वैशाख - ज्येष्ठ — मई

ज्येष्ठ - आषाढ़ - जून

आषाढ़ - श्रावण जुलाई

श्रावण - भाद्रपद अगस्त

भाद्रपद - आश्विन सितम्बर

आश्विन - कार्तिक अक्टूबर

कार्तिक - मार्गशीर्ष नवम्बर

मार्गशीर्ष - पौष दिसम्बर

RAS Mains

तीज त्यौंहारा बावड़ी, लै डूबी गणगौर ॥

हिन्दु त्यौहार श्रावण शुक्ल तृतीया अर्थात (छोटी तीज) से शुरु होकर चैत्र शुक्ल तृतीय (गणगौर) पर समाप्त हो जाते हैं।

① श्रावण

कृष्ण पक्ष

पंचमी - नाग पंचमी

नवमी - निडरी नवमी
(नेवले की पूजा)

अमावस्या: हरियाली अमावस्या

मेले:
(1.) कल्पवृक्ष – मांगलियावास (अजमेर)
(2.) फतेहसागर झील मेला (उदयपुर)
(3.) बुड्ढा जोहड़ मेला (श्रीगंगानगर)

End

शुक्ल पक्ष

Start

तृतीया: - छोटी तीज
(जयपुर में छोटी तीज की सवारी प्रसिद्ध है)
→ यह पति-पत्नि के प्रेम का त्यौहार है।
→ यह प्रकृति-प्रेम का त्यौहार है।
→ इसमें महिलाएँ "लहरिया" ओढ़नी ओढ़ती है।
→ सिंजारा: नवविवाहिता के लिए ससुराल पक्ष से आने वाले उपहार

पूर्णिमा: रक्षाबन्धन
(नारियल पूर्णिमा)
→ इस दिन "श्रवणकुमार" की पूजा की जाती है।

② भाद्रपद (सबसे ज्यादा त्यौहार)

कृष्ण पक्ष

तृतीया: बड़ी तीज
or बूढ़ी तीज
or सातुड़ी तीज
or कजली तीज

→ बूँदी में बड़ी तीज की सवारी प्रसिद्ध है।

शुक्ल पक्ष

द्वितीया – "आबे री बीज"
(रामदेव जयन्ती)
→ रूणीचा (रामदेवरा) में रामदेवजी का मेला लगता है जो द्वितीया से लेकर ग्यारस तक चलता है।
→ इस मेले को "मारवाड़ का कुम्भ" कहा जाता है।

137

षष्ठी (छठ) :

ऊब छठ (लड़की पूरे दिन खड़ी रहती है अच्छे वर के लिए व्रत करती है)

हल छठ → (बलराम जयन्ती)
↓
भगवान कृष्ण के बड़े भाई

अष्ठमी :- कृष्ण जन्माष्टमी

नवमी :- गोगानवमी

इस दिन किसान "हल" को 9 गाँठ वाली राखी बाँधता है।

मेले :

(1) ददरेवा (चुरु)

(2) गोगामेड़ी (हनुमानगढ़)

द्वादशी/बारस :- बछबारस

(इस दिन साबूत अनाज का प्रयोग होता है, चाकू का प्रयोग नहीं होता)

अमावस्या :- सती अमावस्या

झुन्झुनु में मेला लगता है।

(3, 6, 9, 12, 15)
↑
8

चतुर्थी : (चौथ)

→ गणेश चतुर्थी

→ शिव चतुर्थी

→ कलंक चतुर्थी

→ पत्तरा चौथ

मेले :

1. त्रिनेत्र गणेश मेला - रणथम्भौर
2. 'धुंधी तीर्थ मेला' - जैसलमेर (गणेश जी का मेला)

पंचमी : ऋषि पंचमी

सप्त ऋषि की पूजा की जाती है।

'माहेश्वरी समाज का रक्षाबन्धन'

मेले :

1. भोजन-थाली मेला - कामां (भरतपुर)
2. हरिरामजी का मेला - झोरडा (नागौर) (साँप से बचाते हैं)

अष्टमी :

राधाष्टमी

→ सलेमाबाद (अजमेर) में निम्बार्क सम्प्रदाय का मेला होता है।
↓
इस सम्प्रदाय के लोग राधा को कृष्ण की पत्नि मानते हैं।

दसमी - तेजादसमी
परबतसर (नागौर) में पशु मेला

एकादशी -
जलझूलनी/देवझूलनी एकादशी
(इस दिन भगवान कृष्ण को नहलाया जाता है।)

चतुर्दशी :
अनन्त चतुर्दशी
(इस दिन गणेश विसर्जन किया जाता है।)

पूर्णिमा : भाद्र प्रारम्भ

③ आश्विन

कृष्ण पक्ष

भाद्र पक्ष (16 दिन)
(कोई मंगल काम नहीं होता है। 16 दिन)

→ साँझी की पूजा की जाती है।
गोबर और मिट्टी की गोल आकृति की पूजा की जाती है।

→ उदयपुर के 'मत्स्येन्द्र नाथ मन्दिर' को 'साँझी वाला का मन्दिर' कहा जाता है।

→ नाथद्वारा में केले की साँझी बनाई जाती है।

→ भाद्र पक्ष के अन्तिम दिन "थम्बुडा व्रत" किया जाता है।

शुक्ल पक्ष

एकम : शारद नवरात्र प्रारम्भ

अष्टमी : दुर्गाष्टमी
or
होमाष्टमी

दशमी : विजयादशमी

→ कोटा (राज०), मैसूर (कर्नाटक) के दशहरे प्रसिद्ध हैं।

→ हथियारों की पूजा की जाती है।

→ खेजड़ी की पूजा की जाती है।
(पर्यावरण दिवस)
↳ 5 June 1988 को खेजड़ी पर डाक टिकट जारी हुआ था।
↳ राज० का ऐसा पेड़ जिसकी हर चीज उपयोगी होती है।

(139)

→ इस दिन "लीलटांस" को देखना शुभ माना जाता है। (Kingfisher (चिड़िया), नीली टांग की)

कन्हैयालाल सेठिया ने लीलटांस नामक कविता लिखी।

पूर्णिमा :

(शरद पूर्णिमा, रास पूर्णिमा)

→ मारवाड़ महोत्सव / मांड महोत्सव (जोधपुर)
→ मीरा महोत्सव – चित्तौड़
} राज सरकार की तरफ से

(139) Naveen

④ कार्तिक

कृष्ण पक्ष

चतुर्थी : करवा चौथ

अष्टमी : अहोई अष्टमी
(सन्तान की लम्बी उम्र की कामना के लिए व्रत)

त्रयोदशी : धनतेरस
"धनवन्तरि जयन्ती"
(धनवन्तरि भारत के बहुत बड़े डॉ. थे।)

चतुर्दशी :- रूप चतुर्दशी

अमावस्या : दीपावली

शुक्ल पक्ष

एकम् :
→ गोवर्धन पूजा
→ नाथद्वारा में इस दिन अन्नकूट महोत्सव मनाया जाता है तथा भील जनजाति बड़ी संख्या में भाग लेती है।

द्वितीया : भैया दूज / यम द्वितीया

अष्टमी : गोपाष्टमी

नवमी :
→ आंवला नवमी / अक्षयनवमी
आंवला अक्षय (कभी खराब नहीं होता है) होता है।
(दिपावली के 9 दिन बाद आंवले खाते हैं।)

→ भगवान महावीर } का निर्वाण दिवस
→ दयानन्द सरस्वती }

एकादशी :
- देवउठनी एकादशी
- प्रबोधिनी एकादशी

→ इस दिन "पुष्कर मेला" प्रारम्भ होता है।

पूर्णिमा :
→ सत्यनारायण पूर्णिमा
→ इस दिन कार्तिक स्नान होता है।

मेले :
→ पुष्कर मेला
→ कोलायत मेला (बीकानेर)
→ चन्द्रभागा मेला (झालरापाटन) (चन्द्रभागा नदी के कारण)
→ रामेश्वरम् मेला (स. माधोपुर) झालावाड़
(चन्द्रभागा मेला में मालवी नस्ल के पशुओं का क्रय-विक्रय किया जाता है।)
मालवी नस्ल : M.P. (मालवा) के पशु होने के कारण

→ (कोलायत में कपिल मुनि रहते थे जिन्होंने सांख्य दर्शन दिया था।)
(Filosophy)

(140)

⑤ मार्गशीर्ष × (कोई त्योंहार नहीं)
⑥ पोष × (कोई त्योंहार नहीं)

(7) माघ

कृष्ण पक्ष	शुक्ल पक्ष
चतुर्थी : तिल चतुर्थी, संकटहरण चतुर्थी मेला : चौथ का बरवाड़ा (स. माधोपुर)	**एकम् :** गुप्त नवरात्र प्रारम्भ
एकादशी : षट्तिला एकादशी (6 प्रकार के तिल का दान)	**पंचमी :** बसन्त पंचमी (सरस्वती पूजा की जाती है।) → इस दिन गार्गी पुरस्कार दिया जाता है।
अमावस्या : मौनी अमावस्या (इस दिन मौन रहा जाता है।) → इस दिन "कुंभ मेले का शाही स्नान" होता है।	**पूर्णिमा :** → "नवाटापरा गाँव" (डूंगरपुर) में "वेणेश्वर मेला" भरता है। (एक मन्दिर का नाम) • यहाँ पर 'सोम, माही, जाखम' नदियाँ आकर मिलती है। • यहाँ पर खण्डित शिवलिंग की पूजा की जाती है। • वेणेश्वर को "आदिवासियों का कुम्भ" तथा "वागड़ का पुष्कर" कहा जाता है।

(8) फाल्गुन

कृष्ण पक्ष	शुक्ल पक्ष
त्रयोदशी – महाशिवरात्रि → शिवाड़ (स. माधोपुर) में "घुश्मेश्वर महादेव जी का मेला" भरता है।	**द्वितीया :** फुलेरा दूज (शादी के सावे) **पूर्णिमा :** होली → भिनाय (अजमेर) – कोड़ामार होली → महावीर जी (करौली) – लठमार होली → बाड़मेर – पत्थरमार होली (भिनाय में राज० की पहली सहकारी समिति (1904) में बनाई थी।)

→ इस दिन इलोजी (होलिका का पति) की बारात निकाली जाती है (बाड़मेर में)
(इलोजी : मारवाड़ में "छेड़छाड़ का देवता" कहते हैं)

→ इस दिन ब्यावर (अजमेर) में "बादशाह की सवारी" निकाली जाती है।
→ (इस दिन टोडरमल बादशाह होता है)

→ सांगोद (कोटा) - "न्हाण की झाँकियाँ" निकलती है

→ जयपुर में "जन्म - मरण - परण" का त्यौहार होता है।

(9) चैत्र

कृष्ण पक्ष

एकम् : धुलण्डी

अष्टमी : शीतला अष्टमी (बास्योडा)
इस दिन चाकसु (जयपुर) में "गधों का मेला" लगता है।
(शीतला माता का वाहन)

अष्टमी / नवमी :
ऋषभदेव मेला - धुलेव (उदयपुर)
जैनों के 1st भगवान (आदिनाथ)
भील जनजाति इन्हे केसरियानाथजी या कालाजी के रूप में पूजती है।

शुक्ल पक्ष

एकम् :
→ विक्रमी नव वर्ष प्रारम्भ (हिन्दुओं का नव वर्ष)
(अंग्रेजी कैलेण्डर से +57 आगे)
→ 1956 (विक्रमी संवत) में अकाल (छपनियाँ अकाल) पड़ा था।
1956 विक्रमी संवत = 1899 ई. सन (−57)

→ वृहत राज. का गठन (30 March, 1949)

→ बसन्त नवरात्रा प्रारम्भ

तृतीया : गणगौर
→ (जयपुर व उदयपुर की गणगौर की सवारी प्रसिद्ध है।)
→ जेम्स टॉड ने उदयपुर की गणगौर का वर्णन किया है।

142

एकादशी :

जौहर मेला (चित्तौड़गढ़)

(होली के 11 दिन बाद)

→ नाथद्वारा में इसे 'गुलाबी गणगौर' या 'चुनड़ी गणगौर' कहा जाता है।

(इस दिन भगवान कृष्ण को गुलाबी चुनड़ी पहनाई जाती है।)

→ यह (गणगौर) सर्वाधिक लोकगीतों का त्यौहार है।

→ इन दिन लड़कियाँ अपने लिए अच्छे पति तथा अपने भाई के लिए अच्छी पत्नि के लिए व्रत करती हैं।

→ जैसलमेर में "गणगौर" "चतुर्थी" को मनाई जाती है।

नवमी : राम नवमी

पूर्णिमा : हनुमान जयन्ती

मेले :

→ सालासर (चुरू) (दाढ़ी मूँछ वाले बालाजी)

→ मेंहदीपुर बालाजी (दौसा)

(बालाजी दक्षिण में विष्णु भगवान को कहा जाता है।)

(18) वैशाख

कृष्ण पक्ष	शुक्ल पक्ष
तृतीया : धींगा गवर जोधपुर में धींगा गवर मेला होता है (धींगा = जबरदस्ती)	**तृतीया :** अक्षय तृतीया इस दिन राज. में सर्वाधिक बाल-विवाह होते हैं। (बीकानेर का स्थापना दिवस) विक्रमी संवत = 1547 **पूर्णिमा :** → बुद्ध पूर्णिमा → पीपल पूर्णिमा (भगवान बुद्ध को पीपल के नीचे ज्ञान मिला था।) **मेले :** ① बाणगंगा मेला (विराटनगर) जयपुर ② गोमतीसागर मेला (झालरापाटन) (मालवी नस्ल के पशुओं का क्रय-विक्रय) ③ नक्की झील मेला - माउन्ट आबू ④ मातृकुण्डिया मेला - चित्तौड़ ⑤ गौतमेश्वर मेला - अरणोद (प्रतापगढ़) → इस दिन 'पोकरण में परमाणु परीक्षण' किया गया था।

(11) ज्येष्ठ

कृष्ण पक्ष

अमावस्या :

बड़मावस
(वट वृक्ष अमावस्या)

शुक्ल पक्ष

दसमी : गंगा दसमी

→ कांमा (भरतपुर) में गंगा दशमी मेला होता है।

एकादशी : निर्जला एकादशी

→ इस दिन उदयपुर में पतंगे उड़ाई जाती है।

(12) आषाढ

कृष्ण पक्ष

शुक्ल पक्ष

एकम : गुप्त नवरात्रा प्रारम्भ

नवमी : अहल्या नवमी

एकादशी : देवशयनी एकादशी

पूर्णिमा : गुरु पूर्णिमा
व्यास पूर्णिमा
(वेद व्यास (महाभारत के रचयिता) का जन्म दिन)

↓ Continue to सावन (कृष्ण पक्ष)

मुस्लिम त्यौहार

→ पैगम्बर मोहम्मद साहब का जन्म "570 ई." में "मक्का (स. अरब)" में हुआ था
622 ई. में मोहम्मद साहब मक्का छोड़कर मदीना चले गये थे
इस घटना को "हिजरत" (अरबी में) कहा जाता है तथा इस दिन से हिजरी सम्वत (हिजरी कैलेण्डर) की शुरुआत होती है।

→ यह चन्द्रमा आधारित कैलेण्डर होता है। (लेकिन अधिकमास नहीं जोड़ा जाता)
632 ई. में मदीना में ही मोहम्मद साहब की मृत्यु हो गई थी।

महिनों का नाम :

मोहर्रम	रज्जब
सफर / सिफर	शाबान
रबी-उल-अव्वल → I	रमजान
रबी-उस-सानी - II	शव्वाल
जमात-उल-अव्वल	जिल्काद
जमात-उस-सानी	जिल्हिज

(इनमें केवल तारीख होती है)

(147)

① मोहर्रम :

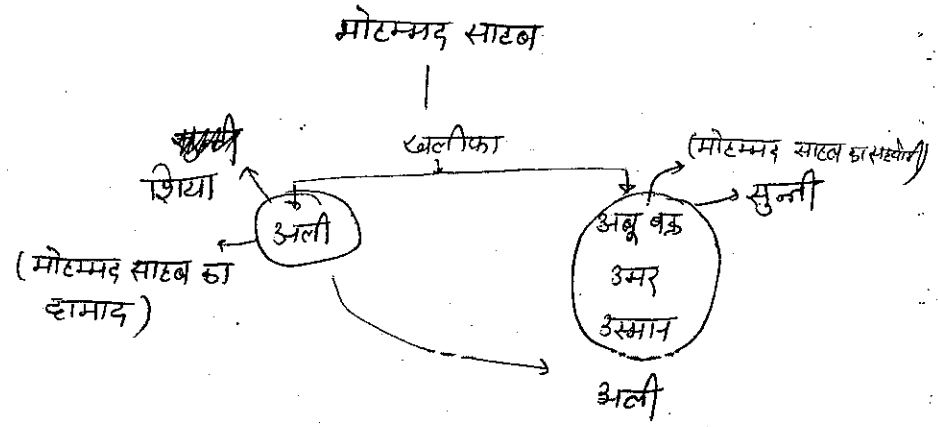

10 तारीख :

→ मोहम्मद साहब का "दोहिता हुसैन" अपने 72 साथियों के साथ कर्बला के मैदान (ईराक) में लड़ता हुआ मारा गया था उसकी याद में इस दिन "ताजिये" निकाले जाते हैं।

(147)

27 तारीख :

→ "गलियाकोट (डूंगरपुर)" में "सय्यद फखरुद्दीन का उर्स" (हिन्दुओं में मेला बोलते हैं।)
यह "दाउदी बोहरा सम्प्रदाय" का प्रमुख स्थान है।

② सफर :

20 तारीख :

→ हुसैन के मरने के चालीस दिन पूरे हुये थे।

→ **चेहल्लुम**

③ रबी - उल - अव्वल :

12 तारीख → ईद - मिलादुल नबी (मोहम्मद साहब का जन्म)
→ बाराबफात (मोहम्मद साहब की मृत्यु)

④ रबी - उस - सानी : ×

⑤ जमात - उल - अव्वल : ×

⑥ जमात - उस - सानी :

8 तारीख : फारस (ईरान) के 'संजरी गाँव' में ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का जन्म

⑦ रज्जब :

1 - 6 तारीख : ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का "अजमेर में उर्स"
भीलवाड़ा का गौरी परिवार झण्डा चढ़ाकर उर्स की शुरुवात करता है।

27 तारीख :
मेराज की रात (इस रात को मोहम्मद साहब की खुदा से मुलाकात हुई थी)

यहूदी	ईसाई	इस्लाम
↓	↓	↓
मोजेस	जीसस (बाइबिल)	मोहम्मद साहब (कुरान)
ओल्ड टेस्टामेंट	ओल्ड टेस्टामेंट / न्यूटेस्टामेंट	
शुक्रवार - शनिवार	रविवार	शुक्रवार

(8) शाबान :

15 तारीख

शबेरात

→ इस रात मुस्लमान मक्का की हीरा पहाड़ी पर इकट्ठे होते हैं तथा अपने पापों का प्रायश्चित करते हैं

(9) रमजान :

→ मुसलमानों का सबसे पवित्र महीना
इस महीने में रोजे रखे जाते हैं।

27 तारीख : शबेकद्र (इस दिन कुरान लिखी गई थी)

(10) शव्वाल :

1 तारीख ईद - उल - फितर (मीठी ईद)
(सिवैयों की ईद)
(भाईचारे का त्यौहार)

(11) जिल्काद : ×

(12) जिल्हिज :

इस महिने में मुसलमान हज यात्रा के लिए जाते हैं (8, 9, 10 तारीख)

10 तारीख : ईद - उल - जुहा (बकर ईद)
(कुर्बानी का त्यौहार)

जैन के त्यौहार

→ ऋषभ जयन्ती – चैत्र कृष्ण नवमी

→ महावीर जयन्ती – चैत्र शुक्ल त्रयोदशी

→ दसलक्षण पर्व
- चैत्र
- भाद्रपद
- माघ

} शुक्ल पंचमी से चतुर्दशी तक (1st, 6th, 11th) +5

भाद्रपद के दसलक्षण पर्व को "पर्यूषण पर्व" कहा जाता है।
(महा पर्व)

जैन
- अणुव्रत (गृहस्थी वाले)
- महाव्रत (साधु-महात्मा)

पर्यूषण
- दिगम्बर
  - पर्यूषण: भाद्रपद शुक्ल पंचमी से चतुर्दशी
  - आश्विन कृष्ण एकम् – पड़वा दोड़ (क्षमा याचना पर्व)
- श्वेताम्बर
  - पर्यूषण – भाद्रपद कृष्ण द्वादशी - शुक्लचतुर्थी
  - भाद्रपद शुक्ल पंचमी - संवत्सरी पर्व या क्षमा याचना पर्व

रोट तीज :- भाद्रपद शुक्ल तृतीया

सुगन्ध दसमी / धूप दसमी :- भाद्रपद शुक्ल दसमी

सिक्खों के त्यौहार

गुरु नानक जयन्ती — कार्तिक पूर्णिमा
(सिक्खों के 1st भगवान) मेले:
कोलायत (बीकानेर)
साहवा (चूरू)

गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती : — पौष शुक्ल सप्तमी
(सिक्खों के 10 वें भगवान)

लोहड़ी — 13 जनवरी

वैशाखी — 13 अप्रैल

13 अप्रैल 1699 को गुरु गोविन्द सिंह ने आनन्दपुर साहिब में "खालसा पंथ" की स्थापना की थी।

NOTE: (13 अप्रैल 1919 - जलियावाला हत्याकाण्ड)

सिन्धीयों के त्यौंहार

① चेटीचण्ड / झूलेलाल जयन्ती : चैत्र शुक्ल एकम्

(झूलेलाल को वरुण देव का अवतार माना जाता है।)

② थदडी सातम : भाद्रपद कृष्ण सप्तमी

(जन्माष्टमी से 1 दिन पहले)

ईसाईयों के त्यौंहार

गुड फ्राइडे : इस दिन ईसा मसीह को फांसी पर चढ़ाया गया था। गुड फ्राइडे ईस्टर से ठीक पहला फ्राइडे होता है।

ईस्टर : इस दिन ईसा मसीह पुर्नजीवित हुये थे। यह रविवार का दिन था। 2 मार्च से 22 अप्रैल के बीच जो पूर्णिमा आती है उसके ठीक बाद वाला रविवार, ईस्टर होता है।

असेन्शन डे : ईस्टर के 40 दिन बाद आता है। इस दिन ईसा मसीह वापस स्वर्गलोक चले गये थे।

राजस्थान के लोक देवता

① पाबू ② हडबू ③ रामदे, मांगलिया ④ मेहा ।
पाँचू पीर पधारज्यो, ⑤ गोगाजी जेहा ।।

पाबू हडबू रामदेवजी, मेहाजी, गोगाजी : ये 5 पीर हैं
↳ जिन्हें हिन्दु व मुसलमान दोनों मानते हैं।

① पाबू : (पाबूजी राठौड़)

जन्म स्थान : कौलूमण्ड (जोधपुर)

पिता : धाँधल

माता : कमला दे

पत्नी : फूलमदे / सुप्यार दे (अमरकोट की राजकुमारी)

पाबूजी की घोडी : "केसर कालमी"

→ देवल नामक चारण महिला की गायों की रक्षा के लिए अपने फेरों के बीच से उठकर आ गये थे तथा "देचू गाँव (जोधपुर)" में "जींदराव खींची" के खिलाफ लड़ते हुये मारे गये थे।
→ पाबूजी को "लक्ष्मण का अवतार" माना जाता है।
→ चाँदा व डामा नामक 2 भील भाई इनके सहयोगी थे।

(153)

→ पाबूजी को "ऊँट रक्षक देवता" कहा जाता है।
(राज० में सबसे पहले ऊँट लाने वाले पाबूजी थे।)

→ राईका / रैबारी / देवासी (ऊँट पालने वाली जाति) पाबूजी को अपना प्रमुख देवता मानते हैं।

→ पाबूजी को "प्लेग रक्षक देवता" भी कहा जाता है।

→ पाबूजी ने 7 थोरी (जाति) भाइयों को शरण दी थी।

→ कोलूमण्ड (जोधपुर) में "चैत्र अमावस्या" को पाबूजी का मेला लगता है। (▲होली के 15 दिन बाद)

→ पाबूजी की फड़ "सबसे लोकप्रिय फड़" है। भील जाति के भोपे (पाबूजी के पुजारी को बोलते हैं) फड़ को गाते समय "रावणहत्था" वाद्य यंत्र बजाते हैं।

→ पाबूजी के पवाड़े (भजन) (किसी वीर पुरुष की याद में गाये जाने वाले) माठ (बड़े मटके की तरह का) वाद्य यंत्र द्वारा गाये जाते हैं।

→ आशिया मोडजी की पुस्तक → "पाबू प्रकाश"

रामदेवजी : (रामदेवजी तंवर)

जन्म स्थान – उण्डू काश्मीर (बाड़मेर)

पिता – अजमालजी

माता – मैणादे

पत्नी – नेतल दे (अमरकोट की राजकुमारी)

मन्दिर – रुणीचा (रामदेवरा) (जैसलमेर)

यहाँ पर "**पर्चा (परचा) बावड़ी**" है।

(परचा में इनके चमत्कार होते हैं)

(156)

→ रामदेवजी पुस्तक – "**चौबीस बाणियाँ**"

→ रामदेवजी ने "**कामड़िया पंथ**" की शुरुआत की थी।

→ कामड़िया पंथ की महिलाओं द्वारा "**तेरहताली नृत्य**" किया जाता है।

→ "**भाद्रपद शुक्ल एकादशी**" को रामदेवजी ने जीवित समाधि ली थी।

→ "**भाद्रपद शुक्ल दसमी**" को "**डालीबाई**" (मेघवाल समाज) ने समाधि ली थी

→ रामदेवजी की धर्म बहिन

→ रामदेवजी के मन्दिर में "**पगल्ले**" पूजे जाते हैं।

→ **नेजा** – रामदेवजी का झण्डा (पचरंगा) (नेजा = झण्डा)

→ **लीलो** – रामदेवजी के घोड़े का नाम (लीला = घोड़ा)

→ **जमो** – रामदेवजी के जागरण

→ "**रिखिया**" – रामदेवजी के मेघवाल जाति के भक्त

(157) **गोगाजी :** (गोगाजी चौहान)

जन्मस्थान : ददरेवा (चुरू)

→ गोगाजी ने महमूद गजनवी के साथ युद्ध किया था तथा गजनवी ने इन्हें **"जाहिर पीर"** (साक्षात देवता) कहा था।

→ अपने मौसेरे भाईयों अरजन - सरजन के खिलाफ गायों की रक्षा करते हुये मारे गये थे।

→ ददरेवा (चुरू) के मन्दिर को **"शीर्ष मेडी"** (सिर कट कर गिरा था) तथा गोगामेडी (हनुमानगढ़) के मन्दिर को **"धुर मेडी"** (धड़ कट कर गिरा था)

→ **"सर्प रक्षक देवता"** के रुप में पूजे जाते हैं।

→ गोगाजी के मन्दिर **खेजडी के नीचे** बनाये जाते है।
(गोगाजी के मन्दिर को **मेडी** कहते हैं।) (मन्दिर को मेडी ही कहते है)

03/2/17 V. Imp → गोगामेडी का मन्दिर **"मकबरा शैली"** में बना हुआ है।
मन्दिर में **"बिस्मिल्लाह लिखा"** हुआ है।

→ खिलेरियों की ढाणी (सांचौर, जालौर) में गोगाजी की **ओल्डी** (छोटा मन्दिर) बनी हुई है।

हडबूजी सांखला :

→ ये रामदेवजी के मौसेरे भाई थे।

→ इन्होंने जोधा को मण्डोर जीतने का आशीर्वाद दिया था। तथा उसे एक कटार भेंट की थी। मण्डोर जीतने के बाद जोधा ने इन्हें बैंगटी (जोधपुर) गाँव दिया जहाँ पर ये बूढ़ी तथा विकलांग गायों की सेवा करते थे।

→ जोधपुर महाराजा अजीतसिंह ने यहाँ मन्दिर का निर्माण करवाया। मन्दिर में "हडबूजी की बैलगाड़ी की पूजा" की जाती है।

→ हडबूजी का वाहन — "सियार"

→ हडबूजी "शकुनशास्त्र (भविष्य वक्ता)" के ज्ञाता थे।

मेहाजी मांगलिया :

→ मुख्य मंदिर : बापीणी (जोधपुर)

→ जैसलमेर के "रावलदेव भाटी" के खिलाफ युद्ध में मारे गये थे।

→ इनके घोड़े का नाम : किरड काबरा

→ इनके भोपों के वंश वृद्धि नहीं होती है ये सन्तान को गोद लेकर वंश आगे बढ़ते हैं।

→ इनका मेला 'कृष्ण जन्माष्टमी' को लगता है।

तेजाजी : (पाँच पीर में तेजाजी का नाम नहीं आता)

→ खरनाल (नागौर) में एक जाट परिवार में जन्म हुआ था।

→ पत्नि : पेमल दे

→ तेजाजी अपनी पत्नि को लाने अपने ससुराल पनेर (अजमेर) जा रहे थे।

→ "सुरसुरा (अजमेर)" नामक गाँव में लाछा नामक गुजरी महिला की गायों को बचाते हुये घायल हुये। तथा एक साँप के काटने से इनकी मृत्यु हो गई थी।

→ जोधपुर महाराजा **अभयसिंह** के समय परबतसर (नागौर) में तेजाजी का मन्दिर बनवाया गया।

→ तेजाजी "सर्पदंश देवता" है।
इन्हें "कालाबाला का देवता" भी कहा जाता है।
कालाबाला - बिमारी

→ "हल जोतते समय" किसान "तेजाजी का गीत" गाता है।

Imp. 2010 में तेजाजी पर डाक टिकट जारी किया गया
(उस समय सचिन पायलट राज. के सूचना व प्रसारण मंत्री थे (अजमेर से))

→ तेजाजी की बहिन बुंगरी माता का मन्दिर खरनाल (नागौर) में बना हुआ है।

देवनारायण जी (औषधि का देवता)

→ जन्म स्थान : **आसीन्द (भीलवाड़ा)**
इनका जन्म बगडावत गुर्जर परिवार में हुआ था।
पिता : "सवाई भोज"

→ इन्हें (देवनारायणजी) "**विष्णु भगवान का अवतार**" माना जाता है।

→ इन्हें "**औषधि का देवता**" कहा जाता है। इनके मन्दिर में नीम के पत्ते चढ़ाये जाते हैं।
इनके मन्दिर में मूर्ति नहीं होती बल्कि **ईंटों की पूजा** की जाती है।

→ देवनारायणजी की फड़ सबसे लम्बी फड़ है।
  → यह "**जन्तर वाद्य यंत्र**" द्वारा गायी जाती है।
  → इस फड़ पर डाक टिकट जारी हो चुका है।

मेला : "**भाद्रपद शुक्ल सप्तमी**"

मुख्य मन्दिर :
1. आसीन्द (भीलवाड़ा)
2. जोधपुरिया (टोंक)
3. देवमाली (अजमेर)

(161)

देवबाबा :

मुख्य मन्दिर : नगला जहाज (भरतपुर)

→ देवबाबा पशु चिकित्सक थे।

→ इन्हें खुश करने के लिए 7 ग्वालों को भोजन करवाना पड़ता है।

मेले : → भाद्रपद शुक्ल पंचमी (ऋषि पंचमी के दिन)

→ चैत्र शुक्ल पंचमी

(161)

मल्लीनाथ जी :

→ ये "मारवाड़ के राठौड़ राजा" थे।

→ मुख्य मन्दिर : तिलवाड़ा (बाड़मेर)

→ यहाँ पर होली के अगले दिन से शुरु होकर 15 दिन तक "मल्लीनाथ पशु मेला" होता है।

→ मालाणी नस्ल के पशु का क्रय-विक्रय

→ मल्लीनाथ जी "भविष्यवक्ता" थे।

→ इनकी रानी रूपा दे का मन्दिर मालाजाल (बाड़मेर) में है।

तल्लीनाथ जी (गांगादेव राठौड़) (ओरण का देवता)

→ ये "शेरगढ़ (जोधपुर)" के राजा थे।

→ इनके गुरु : जलन्धर नाथ

→ मुख्य मंदिर : पांचोटा (जालौर)

→ इन्हें "ओरण का देवता" कहा जाता है।

ओरण : मन्दिर के आस-पास छोड़ी गई जमीन जहाँ से पेड़-पौधे नहीं काट सकते

बिग्गा जी :

→ मुख्य मंदिर : रीडी (बीकानेर)

→ गायों की रक्षा करते हुए शहीद हो गये थे।

→ ये जाखड़ समाज (जाट) के कुल देवता हैं।

खेतला जी :

मुख्य मंदिर : सोनाणा (पाली)

मेला : "चैत्र शुक्ल एकम" को मेला लगता है।

यहाँ पर "हकलाने वाले बच्चों का इलाज" होता है।

हरिराम जी :

→ मुख्य मंदिर : झोरडा (नागौर)

→ "सर्प रक्षक देवता"

→ मेला : "भाद्रपद शुक्ल पंचमी"

→ मंदिर में "सांप की बांबी" की पूजा की जाती है।

↓ सांप का बिल

(162)

झरडाजी :

→ पाबूजी के भतीजे थे।

→ **जींदराव खींची** (जायल का राजा) को मारकर अपने पिता व चाचा की हत्या का बदला लिया।

मन्दिर : ① **कोलुमण्ड** (जोधपुर)

② **सिंभूदडा** (बीकानेर)

→ इन्हें रूपनाथ भी कहा जाता है।

→ हिमाचल प्रदेश में इन्हें "बालक नाथ" कहा जाता है।

जुन्सारजी :

→ जन्म स्थान : **इमलोहा (सीकर)**

→ "**स्यालोदडा (सीकर)**" गाँव में गायों की रक्षा करते हुए मारे गये थे। यहाँ पर "दुल्हा - दुल्हन" तथा "इनके 3 भाई" की मूर्तियाँ बनी हुई है।

→ रामनवमी के दिन यहाँ पर मेला लगता है।

वीरफताजी :

मुख्य मंदिर : सांथू (जालौर)

"भाद्रपद शुक्ल नवमी" को इनका मेला लगता है।

आलमजी :

मुख्य मंदिर : धोरी मन्ना (बाड़मेर)

आलम जी को "**धोडा रक्षक देवता**" कहा जाता है।

आलम जी जैतमालोत राठौड़ थे।

केसरिया कुंवरजी :

→ गोगाजी के बेटे थे।
→ इन्हें भी "सर्पदंश देवता" के रूप में पूजा जाता है।

मामादेव :

→ ये "बरसात के देवता" हैं।
→ इनका मन्दिर नहीं होता है बल्कि इनके "तोरण की पूजा" की जाती है।
→ इन्हें खुश करने के लिए 'भैंसे की बली' देनी पड़ती है।

डूंगजी - जवाहर जी :

→ "आलोड - पाटोदा (सीकर)" गाँव के सामन्त थे तथा अमीरों को लूट कर उनका धन गरीबों में बाँट दिया करते थे।
→ इन्हें अंग्रेजों की नसीराबाद की छावनी लूट ली थी।

प्रमुख सहयोगी :

लोहट जी जाट
करणा जी मीणा

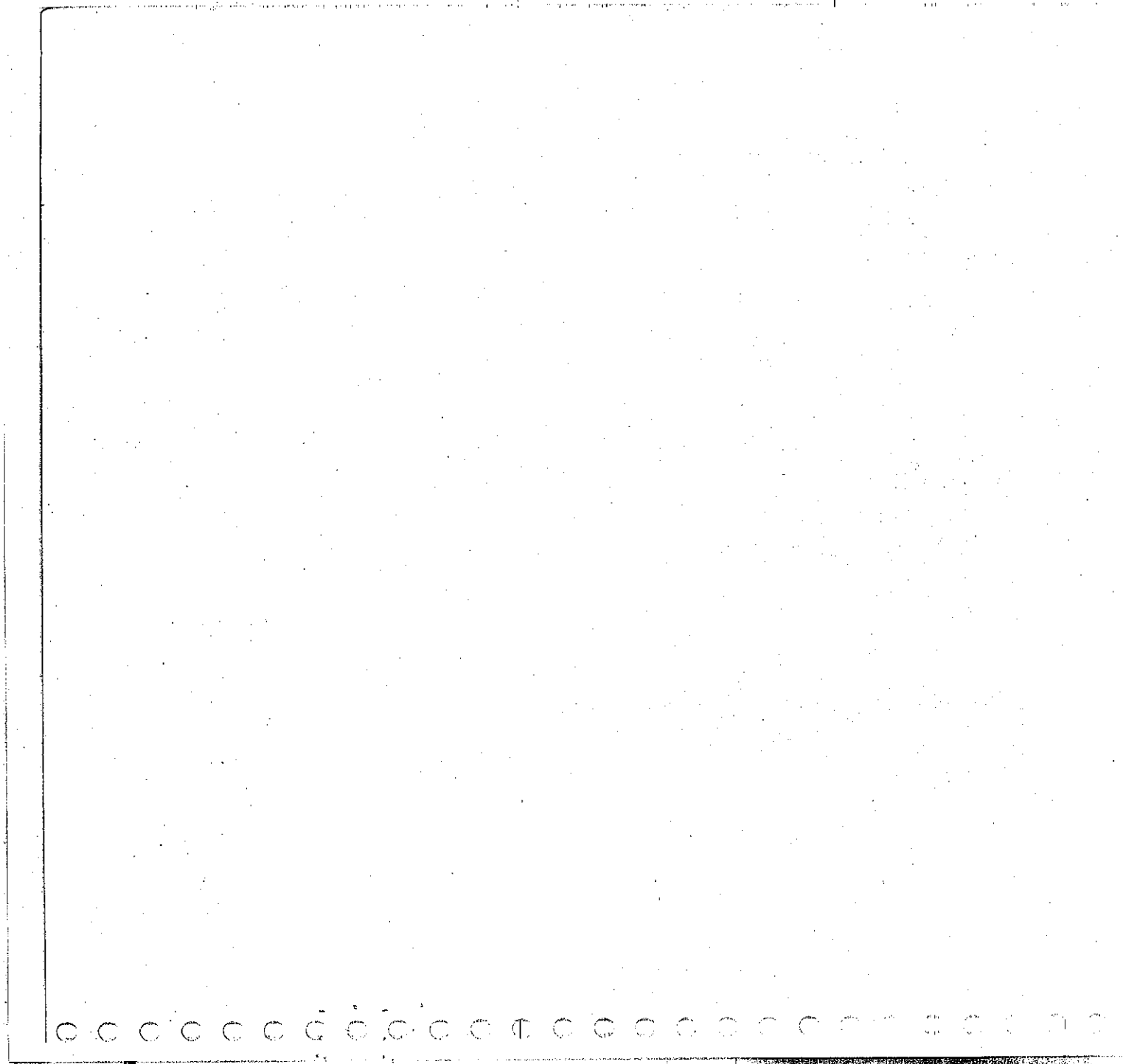

राजस्थान की लोक देवियाँ

करणी माता :

→ जन्म : सुआप (जोधपुर)
"चारण परिवार" में जन्म हुआ।

→ बचपन का नाम : रिद्धि बाई

→ मुख्य मन्दिर : "देशनोक (बीकानेर)"

→ इसे चूहों का मन्दिर कहा जाता है।
चूहों को 'काबा' कहा जाता है।
सफेद कावे के दर्शन शुभ माने जाते हैं।

→ करणी माता को "दाढ़ी वाली डोकरी" कहा जाता है।

→ करणी माता का प्रतीक : चील

नेहड़ीजी का मन्दिर :

देशनोक

→ यहाँ करणी माता स्वयं रहती थी।

→ करणीमाता, खुद "तेमडेराय माताजी" की पूजा करती थी।
↳ इनका मन्दिर भी देशनोक में है।

(नेहड़ी : बिलौने की लकड़ी)

10/2/17

जीण माता :

→ मुख्य मन्दिर : रैवासा (सीकर)

→ इनके भाई हर्ष का मन्दिर भी पास में ही हर्ष पहाड़ी पर बना है।

→ जीणमाता के मन्दिर का निर्माण चौहान राजा पृथ्वीराज-I के "सामन्त हट्टड मोहिल" ने करवाया था।

→ जीणमाता "चौहानों की इष्ट देवी" है।

"जीणमाता का लोकगीत सबसे लम्बा है।"

→ जीणमाता को "मधुमक्खियों की देवी" कहा जाता है।

→ औरंगजेब ने माताजी का छत्र बनवा कर भेजा था।

→ औरंगजेब इस मन्दिर के दीपक का घी भेजा करता था। (अभी भी केन्द्र सरकार इसका घी भेजती है।)

कैला माता :

→ करौली की त्रिकुट पहाड़ी पर मन्दिर बना हुआ है।

→ करौली के "जादौन राजवंश" की कुलदेवी है।

→ इन्हें हनुमानजी की माता अजंनी तथा कृष्ण की बहिन माना जाता है।

→ इनके भक्तों को लांगुरिया कहा जाता है।

→ "चैत्र शुक्ल अष्टमी" को इनका "लक्खी मेला" लगता है।
(इनको माताजी का सौम्य रुप माना जाता है। यह शक्ति का रुप नहीं है इसलिए केवल चैत्र (नवरात्रा) में ही मेला लगता है।)

→ इनके मन्दिर के सामने "बोहरा भक्त की छतरी" है जहाँ पर छोटे बच्चों का इलाज किया जाता है।

सकराय माता :

→ मुख्य मन्दिर : उदयपुरवाटी
→ अन्य नाम : शाकम्भरी माता
→ ये "चौहानों की इष्ट देवी" हैं।
→ यह "खण्डेलवाल की कुल देवी" हैं।
→ अन्य मन्दिर : ① सांभर (जयपुर)
② सहारनपुर (U.P.)

आशापुरा माता :

→ मुख्य मन्दिर : नाडोल (पाली)
मोदरा (जालौर)
→ चौहानों की कुल देवी हैं। बिस्सा ब्राह्मणों की कुल देवी भी हैं।
इनकी पूजा करने वाली महिलाएँ पूजा करते समय हाथों में मेहन्दी नहीं लगाती तथा पूजा करते समय घूँघट निकालती हैं।

तन्नौट माता :

→ मुख्य मन्दिर : तन्नौट (जैसलमेर)
→ BSF के जवान इनकी पूजा करते हैं।
→ इन्हें "थार की वैष्णो देवी" कहा जाता है।
→ इन्हें "रुमाल की देवी" कहा जाता है।
(रुमाल बाँधते हैं।)

कुल देवी - Compulsory

आई माता :

→ मुख्य मंदिर - बिलाड़ा (जोधपुर)

→ "सिरवी समाज की कुल देवी"

→ इनके मुख्य मन्दिर को बडेर तथा अन्य मन्दिर को दरगाह कहा जाता है।

→ इनके मुख्य मंदिर के दीपक की ज्योति से केसर टपकती है। (यहाँ के दीपक की ज्योति से दीवार काली नहीं होती)

→ आई माता 'रामदेवजी की शिष्या' थी। अतः इन्होंने भी छुआछूत दूर करने तथा हिन्दु-मुस्लिम एकता स्थापित करने के प्रयास किये थे।

(168)

सच्चियाय माता :

→ मुख्य मंदिर - ओसियां (जोधपुर)

→ ओसवाल समाज (बनिया) की कुल देवी

→ इस मन्दिर का निर्माण गुर्जर प्रतिहार ने "महामारू शैली" में करवाया था।

भारत में मन्दिर की शैली

नागर (उत्तर)

वेसर (Mixed)

द्रविड (दक्षिण)

राणी सती :

→ मुख्य मन्दिर : झुन्झुनु

→ वास्तविक नाम : "नारायणी देवी"

→ अपने पति "तनधनदास अग्रवाल" के साथ सती हुई थी।

→ इन्हें दादी सती भी कहा जाता है।

नारायणी देवी :

→ मुख्य मंदिर : अलवर
→ **नाई जाति** से संबंधित थी तथा अपने पति के साथ सती हुई थी
→ "नाई जाति की **कुल देवी**"
→ मीणा जाति के लोग भी इनकी पूजा करते हैं।

सुंधा माता :

→ **जालौर** में भीनमाल के पास जसवन्तपुरा की पहाड़ियों में चामुण्डा माता का मन्दिर बना है जिन्हें हम सुंधा माता के नाम से जानते हैं (सुंधा पहाड़ी पर बसे होने के कारण)

→ यहाँ पर रोप - वे (Rope-way) स्थापित किया गया है।
यहाँ पर भालू अभयारण्य स्थापित किया गया है।

(169)

चामुण्डा माता :

→ जोधपुर के मेहरानगढ़ किले में मुख्य मन्दिर है।
→ यहाँ पर 30 सितम्बर 2008 के दिन दुर्घटना हो गई थी जिसकी जाँच के लिए जसराज चोपड़ा आयोग बनाया गया था।

शीतला माता :

→ मुख्य मंदिर : चाकसू (जयपुर)
→ निर्माण : "**माधोसिंह -I द्वारा**"
→ कुम्हार जाति के लोग पुजारी होते हैं।
→ इन्हें "**चेचक रक्षक देवी**" के रूप में पूजा जाता है।
बांझ महिलाएँ सन्तान प्राप्ति के लिए इनकी पूजा करती हैं।
→ एकमात्र देवी जिनकी खण्डित मूर्ति की पूजा की जाती है।

आवरी माता :

→ मुख्य मंदिर : निकुम्भ (चित्तौड़गढ़)

→ यहाँ पर "लकवाग्रस्त व्यक्ति का इलाज" किया जाता है।

बड़ली माता :

→ मुख्य मंदिर : आकोला (चित्तौड़गढ़)

→ यहाँ पर छोटे बच्चों का इलाज किया जाता है।

महामाया :

→ मावली (उदयपुर) में मंदिर है।

→ यहाँ पर भी छोटे बच्चों का इलाज किया जाता है।

अम्बिका माता :

→ मुख्य मंदिर : जगत (उदयपुर)

→ इस मंदिर को "मेवाड़ का खजुराहो" कहा जाता है।
(खजुराहो के मन्दिर M.P. में है जिन्हे चन्देल वंश के राजाओं ने बनवाया था।)

भद्राणा माता :

→ मुख्य मंदिर : कोटा

→ "मूठ" पीड़ित व्यक्ति का इलाज किया जाता है।
↳ (जादू-टोना से पीड़ित व्यक्ति)

आछणी माता :

→ मुख्य मंदिर : सोरसन (बारां)

→ एकमात्र देवी जिनकी "पीठ की पूजा" की जाती है।

→ यहाँ पर भी "गधो का मेला" (माघ शुक्ल सप्तमी) लगता है।

त्रिपुर सुन्दरी :

→ मुख्य मंदिर : "ललवाड़ा (बाँसवाड़ा)"

→ इन्हें "तुरतई माता" भी कहा जाता है।

ज्वाला माता :

→ मुख्य मंदिर : जोबनेर (जयपुर)

→ "खंगारोतों (कछवाहा) की इष्ट देवी"

छींक माता :

→ मुख्य मंदिर : जयपुर

→ माघ शुक्ल सप्तमी को मेला लगता है।

नकटी माता :

→ मुख्य मंदिर : जय भवानीपुरा (जयपुर)

→ नाक टूटी हुई है।

कैवाय माता :

→ किणसरिया (नागौर)

दधीमती माता :

→ मुख्य मंदिर : गोठ, मांगलोद (नागौर)

→ दाधीच ब्राह्मणों की कुल देवी

भंवाल माता :

→ मुख्य मंदिर : भंवाल मेड़ता (नागौर)

→ इन्हें 2½ प्याला शराब पिलाई जाती है।

मरकण्डी माता : - निमाज (पाली)

क्षेमकरी माता : - भीनमाल (जालौर)

हर्षद माता : - आभानेरी (दौसा)

जिलाणी माता : - अलवर

धेवर माता : - राजसमन्द (राजसमन्द झील की नींव लगाई थी)

राजेश्वरी माता : - भरतपुर (भरतपुर के राजवंश (जाट) की कुल देवी)

(172)

स्वांगिया माता :

→ मुख्य मंदिर : भादरिया (जैसलमेर)

(स्वांग - भाला)

→ जैसलमेर के "भाटी राजवंश की कुल देवी"

प्रतीक : "सुगन चिड़ी"

→ "आवड माता" को भी इनका रूप माना जाता है।

└→ इनका मन्दिर (जैसलमेर) में बना है।

* भादरिया में विश्व का सबसे बड़ा "भूमिगत पुस्तकालय" है।

लटियाल माता :

→ मुख्य मंदिर : फलौदी

→ "कल्ला ब्राह्मणों" की कुल देवी

कंठेसरी माता :

आदिवासियों की कुल देवी

Naveen
(172)

राजस्थान के लोक संत

दादूदयाल :

→ जन्म : अहमदाबाद

(गुरु गोविंद सिंह का जन्म: पटना)

→ दादूदयालजी को "राजस्थान का कबीर" कहा जाता है।
इन्होंने निर्गुण भक्ति का सन्देश दिया था।

→ मुख्य पीठ (केन्द्र) : "नरैना (जयपुर)"

→ आमेर के राजा भगवन्तदास ने दादूदयालजी की मुलाकात फतेहपुर सिक्री में अकबर से करवाई।

→ दादूदयालजी ने अपने उपदेश "ढूंढाडी" में दिये थे।

→ दादूदयालजी के प्रमुख 52 शिष्य थे जिन्हें "52 स्तम्भ" कहा जाता है।

→ दादूपंथ की शाखाएँ :

1. खालसा
2. विरक्त
3. उतरादे
4. खाकी
5. नागा

→ दादूपंथ के मंदिरों को "दादूद्वारा" कहा जाता है।
  └→ यहाँ पर दादूदयालजी के ग्रन्थ "वाणी" की पूजा की जाती है।

→ सत्संग स्थान को "अलख दरीबा" कहते हैं।

→ दादूपंथी मृत व्यक्ति के शरीर को खाने के लिए छोड़ देते हैं।

→ दादूजी का शरीर "भैराणा की पहाड़ी (जयपुर)" में रखा गया था। जिसे "दादू खोल / दादू पालड़ा" कहा जाता है।

→ दादूजी के प्रमुख शिष्य :

① रज्जब जी : सांगानेर के पठान थे।
→ इन्होंने दादूजी के उपदेश सुनकर शादी नहीं की तथा "आजीवन दूल्हे के वेश" में रहे।

रज्जबजी की पुस्तकें :
1. रज्जब वाणी
2. सर्वंगी

② सुन्दरदास जी :
→ इन्होंने नागा शाखा की स्थापना की
→ नागा साधुओं ने मराठा आक्रमणों के समय जयपुर के राजा प्रतापसिंह की मदद की।
→ नागा साधु अपने साथ हथियार रखते थे। इनके रहने के स्थान को धावनी कहा जाता था।
→ "गेटोलाव (दौसा)" में सुन्दरदासजी की समाधि बनी हुई है।

③ जाम्भोजी :
→ पीपासर (नागौर) में एक पंवार राजपूत परिवार में जन्म हुआ था।
→ इन्हें "विष्णु का अवतार" माना जाता है।
→ बचपन का नाम : धनराज था।

→ "समराथल (बीकानेर)" नामक स्थान पर इन्होंने अपने अनुयायीयों को "29 उपदेश" दिये थे इसलिए इनके अनुयायी "बिशनोई (बिस + नौ)" कहलाते है।

→ "मुकाम (बीकानेर)" में जाम्भोजी का मन्दिर बना हुआ है जहाँ पर "आश्विन तथा फाल्गुन अमावस्या" को मेला लगता है।

→ ये सिकन्दर लोधी के समकालिन थे।
↳ इसने जाम्भोजी के कहने पर गौ हत्या बंद कर दी थी।

→ बीकानेर क्षेत्र में अकाल के समय जाम्भोजी के कहने पर सिकन्दर लोधी ने चारा भेजा था।

जाम्भोजी की प्रमुख शिक्षाऐं :-

(1) हरे पेड़ नहीं काटने चाहिए।

सिर साटे (के बदले) रुख (पेड़) रहे, तो भी सस्तो जाण।।

मुख्य : खेजड़ी

(2) जीव हिंसा नहीं करनी चाहिए। मुख्य : हिरण

(3) नीले कपड़े नहीं पहनने चाहिए।

(4) विधवा विवाह किये जाने चाहिए।

* "जाम्भोजी को "वैज्ञानिक संत" कहा जाता है।"

(176) 11/2

11/02/17

जसनाथ जी :

→ जन्म स्थान - **कतरियासर (बीकानेर)** जाट परिवार

→ मुख्य मंदिर - कतरियासर

→ सिकन्दर लोदी के समकालिन थे।

→ अपने अनुयायीयों को "36 उपदेश" दिये थे।

→ इनके अनुयायी गले में काली ऊन के धागें पहनते हैं।

→ "मोर पंख" तथा "जाल वृक्ष" को पवित्र मानते हैं।

→ इनके अनुयायीयों द्वारा अग्नि नृत्य करवाया जाता है।

ग्रन्थ :

1. सिंभुदड़ा
2. कोडा

} (इनके उपदेश।)

चरणदास जी :

→ जन्म स्थान - **डेहरा (अलवर)**

→ मुख्य केन्द्र - अलवर

→ अपने अनुयायीयों को "42 उपदेश" दिये।

→ इनके अनुयायी "पीले रंग के कपड़े" पहनते थे।

→ इन्होंने नादिर शाह [(1739 ईरान राजा - भारत पर आक्रमण)] के आक्रमण की भविष्यवाणी की थी।

प्रमुख शिष्या:

(1.) दया बाई — पुस्तकें → दया बोध, विनय मलिका

(2.) सहजो बाई — पुस्तकें → सहज प्रकाश

→ इस सम्प्रदाय के लोग "सखी भाव" से श्रीकृष्ण भगवान की पूजा करते हैं।

→ "सगुण" (भक्ति पूजा वाले) तथा "निर्गुण" दोनों की शिक्षा दी थी

→ उपदेश "मेवाती भाषा" में दिये थे।

संत पीपा:

→ वास्तविक नाम - प्रताप सिंह खिंची

→ "गागरोण (झालावाड़) के राजा" थे।

→ रामानन्दजी के शिष्य थे। (12 शिष्य थे)

(भक्ति आंदोलन → 7वी - 8वी सदी)

→ संत पीपा "दर्जी समाज के प्रमुख देवता" है।

→ इन्होने निर्गुण भक्ति का संदेश दिया था।

→ "समदड़ी (बाड़मेर)" में संत पीपा का 'मुख्य मंदिर' तथा "गागरोण" में 'छतरी' बनी हुई है।

→ "टोडा (टोंक)" में संत पीपा की 'गुफा' बनी हुई है।

संत धन्ना :

→ जन्म : धुवन (टोंक) (जाट परिवार में)

→ यह भी रामानन्द जी के शिष्य थे।

#→ राजस्थान में भक्ति आन्दोलन शुरू किया था।

→ "बोरानाडा (जोधपुर)" में इनका मंदिर बना हुआ है।

संत हरिदास जी :

→ वास्तविक नाम - हरिसिंह सांखला

→ पहले डाकू थे परन्तु बाद में संत बन गये

→ इन्होने हरिदासी या "निरजंनी सम्प्रदाय" चलाया था

→ इन्होने "निर्गुण व सगुण" दोनों प्रकार की भक्ति का संदेश दिया था।

मुख्य केन्द्र - "गाढा (डीडवाना)"

→ पुस्तकें :
1. मन्त्र राजा प्रकाश
2. हरि पुरुष जी की वाणी

Imp

संत मावजी :

→ जन्म स्थान :- साबला (डूंगरपुर)

→ इन्होंने भगवान श्री कृष्ण की पूजा "निष्कलंक अवतार" के रूप में की थी।

→ इन्होंने निष्कलंकी सम्प्रदाय चलाया था।

→ इन्होंने कृष्ण लीला की रचना "वागड़ी भाषा" में की थी

→ संत मावजी ने बेणेश्वर धाम (डूंगरपुर) में की थी।

प्रमुख ग्रंथ (i) चौपड़ा Imp.

↳ इस ग्रन्थ में 3rd विश्व युद्ध की भविष्यवाणी है।

बालनन्दाचार्य :

→ मुख्य पीठ - लोहार्गल (झुंझुनू)

→ यह अपने पास सेना रखते थे इसलिए इन्हें "लश्कर संत" कहा जाता है।

→ यह औरंगजेब के समकालीन थे।

→ इन्होंने 52 मूर्तियों को औरंगजेब से बचाकर उन्हें सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया था।

→ इन्होंने औरंगजेब के खिलाफ मेवाड़ के राजसिंह तथा मारवाड़ के दुर्गादास राठौड़ की सहायता की थी।

(180)

नरहड़ पीर :

→ वास्तविक नाम : हजरत शक्कर बाबा

→ मुख्य केन्द्र : "नरहड़ (झुंझुनु)"

→ "कृष्ण जन्माष्टमी" को इनका उर्स लगता है। यहाँ पर पागलों का इलाज किया जाता है।

Rem → यह साम्प्रदायिक सौहार्द्र तथा हिन्दु - मुस्लिम एकता का स्थान है।

→ इन्हे "बांगड़ का धणी" कहा जाता है।

→ "सलीम चिश्ती" इनका शिष्य था।

मीरा बाई :

→ जन्म स्थान - "कुडकी (पाली)"
पिता : रतन सिंह

→ मीरा बाई का पालन पोषण अपने दादा "दुदा" के पास मेड़ता में हुआ

→ मीरा बाई के पति : "भोजराज (सांगा पुत्र, मेवाड़)"

→ मीरा बाई श्री कृष्ण को अपना पति मानकर "सगुण रूप" में पूजा करती थी।

→ मीराबाई के गुरु - "रैदास" (चमार)

→ रैदासजी की छतरी चित्तौड़ के किले में बनी हुई है।

→ मीराबाई द्वारिका के 'रणछोड़ मंदिर' के भगवान श्री कृष्ण की मूर्ति में विलीन / समा गयी थी।

→ महात्मा गांधी, मीराबाई को अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने वाली "सत्याग्रही महिला" मानते थे।

→ मीराबाई को "राजस्थान की राधा" कहा जाता है।

Imp → मीराबाई की पुस्तकें :-

1. रुक्मणी मंगल
2. सत्यभामा नू रुसणो
3. गीत गोविन्द
4. नरसी जी रो मायरो।

(यह पुस्तक रत्ना खाती के सहयोग से लिखी गई)

181

गवरी बाई :

→ "वागड़ की मीरा" कहा जाता है।

→ डूँगरपुर के "महारावल शिवसिंह" ने "बाल-मुकुन्द मंदिर" बनवाया था, जिसे "गवरी बाई का मंदिर" भी कहा जाता है।

भक्त कवि दुर्लभ :

→ इन्हें "वागड़ का नृसिंह" कहा जाता है।

Naveen
(182)

सम्प्रदाय

(1.) वल्लभ सम्प्रदाय /रुद्र/पुष्टिमार्गी सम्प्रदाय :

→ श्री "कृष्ण के बाल - स्वरूप" की पूजा करते हैं।

→ इनके मंदिर को **हवेली** कहा जाता है।

↳ यहाँ गाया जाने वाला संगीत 'हवेली-संगीत'

→ मंदिर में श्री कृष्ण मूर्ति के पीछे दीवार पर /पर्दे पर जो चित्र बनाये जाते हैं उन्हे "**पिछवाई**" कहा जाता है।
(नाथद्वारा की पिछवाई प्रसिद्ध है।)

→ **राजमहल:** वल्लभ संप्रदाय के मंदिर = 41

→ भारत में वल्लभ संप्रदाय के **7 प्रमुख केन्द्र** हैं

1 - U.P. में, 1 - गुजरात में

5 केन्द्र राजस्थान में

1. मथुरेश जी - कोटा
2. श्री नाथ जी - सिहाड (नाथद्वारा)
3. द्वारिकाधीश - कांकरोली (राजसमन्द)
4. गोकुलचन्द्र - कामां (भरतपुर)
5. मदन मोहन - कामां (भरतपुर)

(184)

② रामानन्द जी सम्प्रदाय : (रसिक सम्प्रदाय)

→ इस सम्प्रदाय के लोग "भगवान राम" की पूजा "रसिक नायक" के रुप में करते हैं। इसलिए इसे "रसिक सम्प्रदाय" भी कहा जाता है।

→ "कृष्ण भट्ट" की पुस्तक → "राम रासौ" में राम व सीता की प्रेम कहानी है।

प्रमुख केन्द्र :

① गलताजी → कृष्ण दास "पयहारी" (संस्थापक)

आमेर राजा पृथ्वी राज तथा उसकी रानी बालाबाई, कृष्णदास के अनुयायी थे।

② रैवासा (सीकर) → अग्रदास जी

③ निम्बार्क सम्प्रदाय :

→ मुख्य केन्द्र - सलेमाबाद (अजमेर)

→ संस्थापक - परशुराम

→ इस सम्प्रदाय के लोग राधा जी को श्री कृष्ण की पत्नि मानते हैं।

→ मेला - भाद्रपद शुक्ल 8 (राधाष्टमी)

(4) लालदासी सम्प्रदाय :

→ मुख्य केन्द्र - नंगला जहाज (भरतपुर)

→ संस्थापक - लालदास जी

→ मेव जाति के लकड़हारे थे।

→ गुरु → "गद्दन चिश्ती"

→ इन्होंने अपने उपदेश "मेवाती भाषा" में दिया था।

(5) रामस्नेही सम्प्रदाय :

(185)

→ यह सम्प्रदाय "निर्गुण भक्ति" में विश्वास रखता है।

→ इनके अनुसार राम - दशरथ पुत्र ना होकर यहाँ पर मतलब निर्गुण (निराकार) राम है।

→ इनके मन्दिर को रामद्वारा कहा जाता है।

→ इनके साधु-संत "गुलाबी रंग के कपड़े" पहनते है।

मुख्य केन्द्र :

(1) शाहपुरा (भीलवाड़ा) → रामचरण जी (संस्थापक)
↓
"अणभैवाणी" (पुस्तक)

→ यहाँ पर होली के अगले दिन "फूलडोल का मेला" होता है।

(ii) रेण (नागौर) - दरियावजी

(iii) सीथल (बीकानेर) - हरिरामदास जी
↓ पुस्तक (योग पर)
"निशानी"

(iv) खेड़ापा (जोधपुर) - रामदास जी

NOTE:
जैमलदास - "सींथल" तथा "खेडापा" शाखा के आदि आचार्य है।

परनामी सम्प्रदाय :

→ मुख्य पीठ - पन्ना (M.P.)

→ संस्थापक - प्राणनाथ

→ आदर्श नगर (जयपुर) में भी "परनामी सम्प्रदाय" का मंदिर है।

→ सम्प्रदाय का मुख्य ग्रंथ - "कुजलम स्वरुप"

अलखिया सम्प्रदाय :

→ मुख्य केन्द्र - बीकानेर
→ संस्थापक - स्वामी लाल गिरी
→ सम्प्रदाय का ग्रंथ - अलख स्तुति प्रकाश

नवल सम्प्रदाय :

→ मुख्य केन्द्र - जोधपुर
→ संस्थापक - नवलदास जी
→ ग्रन्थ - नवलेश्वर अनुभववाणी

गूदड सम्प्रदाय :

→ मुख्य केन्द्र - दांतडा (भीलवाडा)
→ संस्थापक - संतदास जी

रामजी राम जी :

→ मुख्य केन्द्र - शिकारपुरा (जोधपुर)
→ पटेल जाति के लोग मुख्य आस्था रखते हैं।
→ इन्होने पर्यावरण संरक्षण का उपदेश दिया था।

* लोकदेवता तथा लोकदेवियों का हमारी संस्कृति में योगदान :-

(1.) सामाजिक सुधार — ① हिन्दु - मुस्लिम एकता
② छुआछुत निवारण - रामदेवजी, पाबूजी
③ नारी सशक्तिकरण
④ बाह्य आडम्बरों का विरोध (मूर्तिपूजा का विरोध)

(2.) पर्यावरण / जीव संरक्षण

(3.) धर्म व राष्ट्रीयता की रक्षा - कल्ला जी, गोगा जी

(4.) कष्टों से निवारण

(5.) नैतिक व आध्यात्मिक उत्थान

(6) सरल भक्ति पर बल - निर्गुण भक्ति

(7) लोक संस्कृति को प्रोत्साहन - अग्नि, तेरहताली

(8) लोक साहित्य को प्रोत्साहन / लोक भाषा

(9.) चित्रकला को प्रोत्साहन - फड़, पिछवाई

(10.) स्थापत्य कला - मन्दिर

(11.) मेले / त्यौहारों का महत्व
① जीवन में सरसता
② सामाजिक मान्यताओं को पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित
③ आर्थिक लाभ - पर्यटन का विकास, राजस्व प्राप्ति
④ हस्तशिल्प को बढ़ावा - बाजार का केन्द्र

(189)

5. पशुओं की खरीद - बिक्री का मुख्य केन्द्र
6. खेलकूद प्रतियोगिता
7. सामाजिक सौंदार्द
8. मनोरंजन का केन्द्र
9. जनजातियों के मेले से उनकी संस्कृति का परिचय
10. अन्तर्राष्ट्रीय लोकप्रियता

Naveen
(189)

लोकगीत

→ मानव मन की स्वाभाविक अभिव्यक्तियों को लोक गीत कहा जाता है। जो किसी सामाजिक तथा ऐतिहासिक मान्यताओं से जुड़ी रहती है।

(1) **केसरिया बालम :**

→ राजस्थान का राज्य गीत जो "माँड गायन शैली" में गाया जाता है।

→ इसमें पत्नि परदेश गये अपने पति को वापस बुलाती है।

(2) **मोरियो :**

→ ऐसी लड़की द्वारा गाया जाने वाला गीत जिसकी सगाई तो हो चुकी है लेकिन विवाह होना बाकी है।

(3) **कुरजां :**

→ इस कुरजां पक्षी के माध्यम से परदेश गये अपने पति के पास संदेश भेजती है।

कुरजां – साइबेरियन सारस

(191)

(4) सुवटियों :

→ भील महिलाओं द्वारा तोते के माध्यम से अपने पति के पास संदेश भेजा जाता है।

(5) कागा :

→ कौऐ को उड़ाकर महिला अपने परदेश गये पति के वापस आने का शकुन मनाती है।

(6) हिचकी :

→ "मेवात क्षेत्र" (अलवर) का एक लोकगीत है जो किसी की याद आने पर गाया जाता है।

(191)

(7) बिच्छूडो :

→ "हाड़ौती" क्षेत्र का लोकगीत

(8) कामण :

→ दूल्हे को "जादू-टोने से बचाने के लिए" गाया जाने वाला गीत

(9) बधावा :

→ किसी शुभ काम के पूरा हो जाने पर गाया जाने वाला लोकगीत

(10) सीठणे :

→ शादी के समय महिलाओं द्वारा गाये जाने वाले गालियों वाले गीत

(11) पावणा :

→ दामाद के ससुराल आने पर गाये जाने वाले गीत

(12) हरजस :

→ देवी - देवताओं के "सगुण भक्ति गीत"

(13) चिरजा :

→ लोक देवीओं के लोक गीत / भजन

(14) ओराबा :

→ जैसलमेर क्षेत्र का लोक गीत जो किसी की याद में गाया जाता है।

(15) ढोला - मारू :

→ "सिरोही क्षेत्र" का एक लोक गीत जो ढोला - मारू की प्रेम कहानी पर आधारित है।

→ "ढाढी जाति" के गायकों द्वारा गाया जाता है।

(16) ओल्यू / कोयल :

→ लड़की की विदाई के समय गाया जाने वाला गीत

(17) पीपली :

→ पीपली (पीपल का छोटा पौधा) के माध्यम से पत्नि अपने परदेश गये पति को याद करती है तथा उसको वापस आने के लिए कहती है।

→ "शेखावाटी" तथा "मारवाड़" में "तीज के समय" यह गीत गाया जाता है।

(18) चिरमी :

→ ससुराल में रह रही लड़की चिरमी पौधे के माध्यम से अपने पीहर वालों को याद करती है।

(19) हमसीढो :

→ भील जनजाति द्वारा महिला - पुरुष द्वारा मिलजुल कर गाया जाने वाला लोकगीत

(20) गोरबन्ध :

→ ऊँट के गले का आभूषण होता है। इसे बनाते समय महिलाओं द्वारा गीत गाया जाता है।

→ यह "शेखावाटी क्षेत्र" का लोकगीत है।

(21) पणिहारी : (पानी लेने जा रही महिला)

→ पतिव्रता महिला का लोकगीत

राजस्थान की लोकगायन शैलियाँ

① माँड -

→ प्राचीन समय में "जैसलमेर क्षेत्र" को माँड कहा जाता था। अतः यहाँ विकसित लोकगायन शैली माँड गायकी कहलाती है, जो कालान्तर में सम्पूर्ण राजस्थान में लोकप्रिय हुई।

→ प्रमुख माँड गायिकाएँ :

→ ① अल्लाह जिलाई बाई } बीकानेर
② गवरी बाई } बीकानेर

→ ① गवरी बाई } पाली

→ ① जमीला बानो — जोधपुर

→ ② बन्नो बेगम — जयपुर

→ ③ मांगीबाई — उदयपुर

② मांगणियार :

→ "जैसलमेर, बाडमेर क्षेत्र" में मांगणियार जाति द्वारा विकसित लोकगायन शैली है।

→ प्रमुख वाद्य यंत्र :

→ कमायचा → साकर खाँ मांगणियार

→ खड़ताल → सद्दीक खाँ मांगणियार
↓ "खड़ताल का जादूगर"

सद्दीक खाँ मांगणियार राजस्थान लोक कला अनुसंधान परिषद - जयपुर

③ लंगा :

→ "जैसलमेर, बाड़मेर" क्षेत्र में लंगा जाति द्वारा विकसित लोक गायन शैली

→ मुख्य वाद्य यंत्र :

① कमायचा

② सारंगी

→ मुख्य गीत :

→ "निम्बुड़ा" (गर्भवती महिला द्वारा गाया जाने वाला)

④ तालबन्दी :

→ "ब्रज क्षेत्र" के साधु - सन्यासियों द्वारा विकसित लोक गायन शैली जो राज. के भरतपुर, करौली, अलवर, स. माधोपुर आदि क्षेत्रों में लोकप्रिय हुई।

→ मुख्य वाद्य यंत्र : "नगाड़ा"

राजस्थान के संगीत घराने

घराना	संस्थापक	अन्य कलाकार
① जयपुर (ख्याल गायन शैली)	मनरंग।	① मोहम्मद अली खाँ - कोठी वाले
② पटियाला (जयपुर घराने की शाखा)	① अली बख्श ② फतेह अली (इन्हे "आलिया - फत्तू" भी कहा जाता है।) (टोंक के नवाब ने इनको उपाधि दी थी - "जनरल - करनल")	① गुलाम अली खाँ
③ अतरौली (जयपुर घराने की शाखा)	साहब खाँ	① मानतौल खाँ (रुलाने वाले फकीर)
④ मेवाती	घग्घे नजीर खाँ	① पं. जसराज
⑤ किराना	बन्दे अली खाँ	① भीमसेन जोशी ② रोशन आरा बेगम ③ गंगू बाई हंगल ④ उस्ताद रज्जब अली

घराना	संस्थापक	अन्य कलाकार
⑥ डागर	बहराम खाँ डागर (रामसिंह -II के दरबारी)	
⑦ बीनकार	रज्जब अली खाँ "बीनकार" (रामसिंह-II के दरबारी)	
⑧ अल्लादिया खाँ	अल्लादिया खाँ	किशोरी अमोणकर
⑨ सेनिया घराना	सूरत सेन	अमृत सेन
⑩ रंगीला घराना	रमजान खाँ (मियां रंगीले)	
⑪ कत्थक घराना (जयपुर से शुरू हुआ)	"भानूजी"	

भारत के शास्त्रीय नृत्य :

	राज्य
① भरतनाट्यम	तमिलनाडु (जल्लिकट्टू का खेल यहाँ पर होता है।)
② कुचिपुडी	आन्ध्र प्रदेश
③ कथकली	केरल
④ मोहिनी अट्टम	केरल
⑤ मणिपुरी	मणिपुर
⑥ ओडिसी	ओड़िसा
⑦ सत्रीया। (सबसे अन्त में 2014 में शामिल)	असम
⑧ कत्थक	जयपुर, लखनऊ

* राजस्थान के लोकगीतो की विशेषताएँ :

① हमारे लोकगीतों में पेड़-पौधों को सम्बोधित किया गया है जो हमारे प्रकृति प्रेम को दिखाता है। जैसे चिरमी, पीपली, जीरा

② हमारे लोकगीतों में पशु-पक्षियों को पारिवारिक सदस्य माना है। जैसे : कागा, कुरजां, सुवटियों

③ हमारे लोकगीतों से हमारी सामाजिक मान्यताओं का पता चलता है।

④ लोकगीतों से हमारी संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तान्तरित होती है।

⑤ हमारे लोकगीतों में शृंगार रस का वर्णन हुआ है लेकिन उनमें अश्लीलता नहीं है।

⑥ हमारे लोकगीत विभिन्न जाति-जनजातियों के लिए रोजगार के साधन बने।

⑦ हमारे लोकगीतों से विभिन्न संगीत घराने तथा लोकगायन शैलियाँ विकसित हुई।

⑧ राजस्थान में सामन्ती वातावरण होने के कारण वीर-रस के गीत गाये गये।

⑨ लोक-देवी-देवताओं के गीत निराश मन में आशा का संचार करते है।

⑩ स्वतंत्रता संग्राम के दौरान राजस्थान में विभिन्न लोकगीत गाये गये जिससे राजस्थान में जनजागरण विकसित हुआ जैसे - पद्मिड़ा

⑪ हमारे लोकगीतों से हमारी क्षेत्रीय विशेषताएँ तथा आर्थिक स्थिति का पता चलता है।

राजस्थान के लोक नृत्य

- क्षेत्रीय लोक नृत्य
- जनजातीय लोक नृत्य

* क्षेत्रीय लोक नृत्य :

① घूमर : (राज्य नृत्य)

→ राजस्थान का "राज्य नृत्य"

→ "राजस्थान की आत्मा"

→ केवल महिलाओं द्वारा तीज त्यौहार तथा अन्य अवसर पर किया जाता है।

→ महिलाएँ नृत्य करते समय अपनी धुरी (Axis) पर ही घूमती रहती है।

→ इसमें महिलाओं द्वारा केवल हाथों का लचकदार संचालन किया जाता है।

→ मुख्य वाद्य यंत्र :
  1. ढोल
  2. नगाड़ा
  3. शहनाई

→ नृत्य में 8 चरण होते हैं जिन्हें "सवाई" कहा जाता है।

(202)

(2) कच्छी घोडी :

→ "शेखावाटी क्षेत्र" में पुरुषों द्वारा किया जाने वाला व्यवसायिक लोकनृत्य

→ चार-चार पुरुष 2 पंक्तियों में नृत्य करते हैं। नृत्य करते समय "फूल के खिलने तथा बन्द होने का दृश्य" दिखाई देता है।

→ इसमें पुरुष लकडी की बनी घोड़ी कमर में बाँध कर नृत्य करते हैं। (ऐसे लगता है जैसे घोड़े पर बैठा है।)

(2011)

(3) अग्नि नृत्य :

→ "असनाथी सम्प्रदाय" के लोगों द्वारा किया जाता है।

→ "कतरियासर (बीकानेर)" इसका प्रमुख केन्द्र है।

→ इसमें जलते हुये अंगारों पर नृत्य किया जाता है।

→ नृत्य करते समय "फते-फते" बोलते रहते हैं।

→ नृत्य करते समय "कृषि क्रियाऐं" करते हैं। →(जो भी क्रिया किसान खेत में करता है।)

→ बीकानेर महाराजा गंगासिंह ने इस नृत्य को प्रोत्साहन दिया था।

(4) ढोल नृत्य:

→ "जालौर क्षेत्र" का लोक नृत्य

→ ढोली, माली, सरगड़ा, भील जाति के पुरुषों द्वारा किया जाता है

→ यह नृत्य "थाकना शैली" में किया जाता है।

→ जयनारायण व्यास ने इस नृत्य के कलाकारों को प्रोत्साहन दिया था।

(5) घुड़ला नृत्य:

→ जोधपुर में महिलाओं द्वारा "शीतलाष्टमी से लेकर गणगौर" तक यह नृत्य किया जाता है।

→ यह नृत्य जोधपुर के "राजा सातल" की याद में किया जाता है जिसने घुड़ले खां को मारा था

→ इसमें महिलाएँ "सिर पर छिद्रित मटका रखकर" नाचती हैं। मटके में जलता हुआ दीपक रखा जाता है।

→ मणिशंकर गांगुली, कोमल कोठारी तथा देवीलाल सामर ने इस नृत्य के कलाकारों को प्रोत्साहन दिया था।

- (कोमल कोठारी (व्यक्ति) को 2 बार पद्म पुरस्कार प्राप्त हुआ था)
- कोमल कोठारी ने विजयदान देथा के साथ मिलकर 1960 में "बोरुन्दा (जोधपुर)" में "रूपायन संस्थान" की स्थापना की।
- देवीलाल सामर ने 1952 में उदयपुर में "भारतीय लोक कला मण्डल" की स्थापना की। जो कठपूतली खेल के लिए जाना जाता है।

⑥ तेरहताली नृत्य :

→ "कामड़िया पंथ" की महिलाओं द्वारा रामदेवजी के मेले के समय नृत्य किया जाता है।

→ अब यह एक "व्यवसायिक लोक नृत्य" है।

→ इसमें 9 मंजीरे दाँये पैर में तथा 2 मंजीरे कोहनियों के पास बाँधकर एवं 2 मंजीरे हाथ में लेकर बैठ कर नृत्य किया जाता है। (Total = 13 मंजीरे)

→ नृत्य करते समय महिलाऐं करतब दिखाती हैं।
(मुँह से रुमाल उठाना आदि)

→ मुख्य केन्द्र : पादरला (पाली)
→ मुख्य कलाकार : मांगीबाई
→ वाद्य यंत्र : तानपुरा, चौंतारा

⑦ चरी नृत्य :

→ किशनगढ़ क्षेत्र में "गुर्जर महिलाओं" द्वारा किया जाने वाला लोक नृत्य

→ सिर पर चरी रखकर नाचती है "चरी में जलते हुऐ कपास के बीज" रखे जाते हैं।

→ मुख्य कलाकार : फलकू बाई

फलका- गेहूँ की रोटी सोगरा- बाजरे की रोटी बेजड़ - मिश्रित अनाज की रोटी

(8) भवाई नृत्य :

→ "उदयपुर संभाग" में भवाई जाति द्वारा किया जाने वाला लोकनृत्य

→ इसमें संगीत पर कम ध्यान दिया जाता है तथा करतब अधिक दिखाये जाते हैं।

जैसे : अंगारो पर नाचना
तलवार पर नाचना
सिर पर 7-8 मटके रखकर नाचना

(9) गींदड नृत्य :

→ शेखावाटी क्षेत्र में होली के अवसर पर पुरुषों द्वारा किया जाने वाला लोकनृत्य

→ गोल घेरो में पुरुष डण्डे टकराते हुए नृत्य करते हैं।

→ जो पुरुष महिलाओं के कपड़े पहनकर नाचता है उसे "गणगौर" कहा जाता है।

मुख्य वाद्य यंत्र :- "नगाड़ा"

(10) बम नृत्य :

→ "भरतपुर क्षेत्र" में पुरुषों द्वारा किया जाने वाला लोक नृत्य

→ मुख्य वाद्य यंत्र : "नगाड़ा"
↳ इसे ही बम कहा जाता है।

→ इसमें गाये जाने वाले गीत को "रसिया" कहा जाता है।
अतः इस नृत्य को "बम रसिया" भी कहा जाता है।

(11) **चंग नृत्य:**

होली के अवसर पर "शेखावाटी क्षेत्र" में

(12) **बिन्दौरी नृत्य:**

होली के अवसर पर "झालावाड़ क्षेत्र" में

(13) **डांग नृत्य:**

होली के अवसर पर "नाथद्वारा क्षेत्र" में

(Naveen)
(205)

जनजातीय लोक नृत्य :

भील	गरासिया	कालबेलिया	कंजर	कथौडी	मेव	सहरिया
गैर	वालर	चकरी	चकरी	मावलिया	रणबाजा	शिकारी
गवरी (राई नृत्य)	माँदल	शंकरिया	धाकड	होली	रतवई	
युद्ध	लूर	बागड़िया				
द्विचक्री	कूद	पणिहारी				
नेजा	जवारा	इंडोणी				
घूमरा	मोरिया					
हाथीमना	गौर					

भील :

गैर :

→ मेवाड़ क्षेत्र में भील जनजाति का एक लोक नृत्य
यह लोकनृत्य मारवाड़ में भी होली के अवसर पर किया जाता है तथा इसमें सभी जाति, धर्म के लोग शामिल होते हैं।
गोल घेरे में डण्डे टकराते हुए पुरुषों द्वारा नृत्य किया जाता है।

मुख्य केन्द्र : कनाना (बाड़मेर)

नृत्य में पहने जाने वाले कपड़े - ओंगी

गवरी :

मेवाड़ में भील पुरुषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य रक्षाबन्धन के अगले दिन से शुरु होकर 40 दिन तक चलता है। इसे "राई नृत्य" भी कहा जाता है।

युद्ध : तलवार, भाले के साथ

द्विचक्री : दो चक्र बनाकर

नेजा :

यह भील तथा मीणा दोनों जनजातीयों से सम्बन्धित है। महिला तथा पुरुष दोनों भाग लेते हैं।

इसमें लकड़ी के एक डण्डे पर नारियल बाँध दिया जाता है। महिलाएं इस नारियल की रक्षा करती है तथा पुरुष इसे उतारने का प्रयास करते हैं।

घूमरा :

बाँसवाड़ा क्षेत्र में भील महिलाओं द्वारा किया जाता है।

हाथीमना :

विवाह के अवसर पर पुरुषों द्वारा घुटनों के बल बैठकर नृत्य किया जाता है।

गरासिया :

वालर :

बिना वाद्य यंत्र के किया जाता है।
महिला तथा पुरुष दोनो भाग लेते हैं।
नृत्य करते समय 2 वृत बनते हैं।

मांदल :

मांदल वाद्य यंत्र के साथ किया जाता है।
↳ एक प्रकार का वाद्य यंत्र

लूर :

लूर गाँव की गरासिया महिलाओं द्वारा यह नृत्य किया जाता है।
नृत्य करते समय महिलाओं के 2 पक्ष होते हैं
① वर पक्ष
② वधु पक्ष
इसमें वर पक्ष की महिलाऐं वधु पक्ष से कन्या की मांग करती हैं।

कूद : बिना वाद्य यंत्र के तालियों की थाप पर नृत्य

जवारा : गरासिया महिलाओं द्वारा होली के समय हाथों में ज्वार लेकर नृत्य किया जाता है।

मोरिया : विवाह के समय गरासिया पुरुषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य

गौर : गणगौर के समय किया जाने वाला

कालबेलिया :

चकरी :

महिलाएं गोलाकार मुद्रा में तेज - 2 नृत्य करती हैं।

मुख्य कलाकार : गुलाबो

(2015 में पद्मश्री दिया गया)

शंकरिया :

प्रेम कहानी पर आधारित कालबेलिया युगल नृत्य

बागड़िया :

भीख मांगते समय कालबेलिया महिलाओं द्वारा

NOTE :

→ कालबेलिया नृत्य सिखाने के लिए हाथी गाँव में (आमेर) स्कूल खोला गया है।

→ मुख्य वाद्य यंत्र : (1) पूंगी (2) खंजरी

→ कालबेलिया नृत्य यूनेस्को की हैरिटेज लिस्ट में शामिल है

कंजर :

चकरी :
→ महिलाओं द्वारा
→ चकरी नृत्य करते समय महिला

धाकड़ :
→ कंजर पुरुषों द्वारा

कथौड़ी :

मावलिया : → पुरुषों द्वारा नवरात्रों के समय

होली : → महिलाओं द्वारा होली के समय
→ महिलायें नृत्य करते समय पिरामिड बनाती हैं।
→ "फड़का साड़ी" पहन कर नृत्य करती हैं।

(210)

Naveen
(210)

राजस्थान के लोक नाट्य

(1) ख्याल :

→ ऐतिहासिक एवं पौराणिक कहानियों पर संगीत के माध्यम से अभिनय किया जाता है।

→ ख्याल के सूत्रधार को "हलकारा" कहा जाता है।

① कुचामनी ख्याल :

→ केवल पुरुष भाग लेते हैं।

→ संस्थापक / प्रवर्तक : "लच्छीराम"

→ मुख्य कलाकार : उगमराज

→ मुख्य कहानियाँ : → मीरा मंगल
→ राव रिडमल
→ चाँद नील गिरी

② जयपुरी ख्याल :

→ इस ख्याल में महिलाएँ भी भाग लेती है।
→ इसमें नये प्रयोग करने की सम्भावना होती है।

③ अलीबख्शी ख्याल :

→ ये ख्याल "मुंडावर (अलवर)" के नवाब अली बख्श के समय शुरु हुई थी।

(212)

अली बख्श को अलवर का रसखान कहा जाता है।

(4) शेखावाटी ख्याल / चिड़ावी ख्याल :

प्रवर्तक : नानूराम जी

मुख्य कलाकार : "दुलिया राणा" (चिड़ावा का)

(5) हेला ख्याल :

(जोर-जोर से बोल के)

मुख्य क्षेत्र : → लालसोट (दौसा)
→ सवाई माधोपुर

मुख्य वाद्य यंत्र : "नौबत"

(6) ढप्पाली ख्याल :

मुख्य वाद्य यंत्र : डफ (चंग)

मुख्य क्षेत्र : भरतपुर, अलवर के लक्ष्मणगढ़ में

(7) कन्हैया ख्याल :

प्रमुख क्षेत्र : करौली

इसमें सूत्रधार - "मेड़िया" कहते हैं।

(8) भेंट के दंगल :

मुख्य क्षेत्र : बाड़ी, बसेड़ी (धौलपुर)

(9) तुर्रा कलंगी :

प्रवर्तक : तुकनगीर, शाहअली

→ चंदेरी के राजा (मेदिनीराय) ने इनके अभिनय से खुश होकर इन्हें तुर्रा, कलंगी भेंट दिये थे।

→ सहेदू सिंह, हमीद बेग ने इसे चित्तौड़ में लोकप्रिय किया।

→ इसमें 2 पक्ष आपस संवाद करते हैं जिसे "गम्मत" कहा जाता है।

2 पक्ष : ① शिव पक्ष
② पार्वती पक्ष

→ शिव पक्ष के झण्डे का रंग भगवा तथा पार्वती पक्ष के झण्डे का रंग "हरा" होता है।

→ एकमात्र लोकनाट्य जिसमें मंच की सजावट की जाती है।

→ एकमात्र लोकनाट्य जिसमें दर्शक भी भाग लेते हैं।

→ मुख्य कलाकार :
- → चेतराम
- → ओंकार सिंह
- → जयदयाल सोनी

15/2

मुख्य केन्द्र :

→ धोसुण्डा
→ निम्बाहेड़ा
} चित्तौड़गढ़

(२१५)

② नौटंकी :

→ भरतपुर में लोकप्रिय है।
→ "हाथरस शैली" से प्रभावित है।
→ इनमें 9 प्रकार के वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है। महिला तथा पुरुष दोनों भाग लेते हैं।

→ प्रवर्तक :
→ मुख्य कलाकार : भूरीलालजी, गिरिराज प्रसाद

→ मुख्य कहानियाँ :-
① अमर सिंह राठौड़
② आल्ह - ऊदल
③ सत्यवान - सावित्री

(२१५)

③ रम्मत :

→ जैसलमेर व बीकानेर क्षेत्र में लोकप्रिय है।
→ होली के समय "फाल्गुन शुक्ल अष्टमी से लेकर चतुर्दशी" तक रम्मत लोकनाट्य किया जाता है।
→ रम्मत शुरु करने से पहले 'रामदेवजी का भजन' गाते हैं।

Imp जैसलमेर में इसे "तेज कवि" ने लोकप्रिय किया।

↳ इसने "स्वतंत्र बावनी" की रचना की। तथा इसे गांधीजी को भेंट किया।

→ तेज कवि ने अपने नाटकों में अंग्रेजी नितियों का विरोध किया

→ बीकानेर में "पुष्करणा ब्राह्मणों" द्वारा रम्मत का आयोजन पाटो पर किया जाता है।

Ex.

→ आचार्यों का चौक – अमरसिंह राठौड़ की रम्मत

→ बारह गुवाड़ – हेडाउ – मेरी की रम्मत (इसे जवाहर लाल जी ने प्रारम्भ किया था)

→ बीकानेर में रम्मत के मुख्य कलाकार :

① फागु महाराज
② सुआ महाराज
③ मनीराम व्यास
④ तुलसी दास

(4) तमाशा :

→ मूल रूप से महाराष्ट्र का लोकनाट्य है।

→ "सवाई प्रताप सिंह" के समय जयपुर में लोकप्रिय हुआ। इसके लिए "बंशीधर भट्ट" को महाराष्ट्र से लेकर आये।

→ जिस खुले मैदान में तमाशा का आयोजन होता है उसे "अखाड़ा" कहा जाता है।

→ जयपुर की प्रसिद्ध नृत्यांगना "गौहर जान" तमाशा में भाग लेती थी।

मुख्य कहानियाँ :

① जुठठन मियां का तमाशा (शीतला अष्टमी)

② जोगी - जोगन का तमाशा

मुख्य कलाकार :

गोपी जी भट्ट

⑤ गवरी :

→ राजस्थान का मेवाड़ में प्रचलित सबसे प्राचीन लोकनाट्य इसे "मेरु लोकनाट्य" भी कहते हैं।

→ यह मेवाड़ के भीलों का धार्मिक लोकनाट्य है जो रक्षाबन्धन के अगले दिन से शुरु होकर 40 दिन तक चलता है।

→ इसमें केवल पुरुष भाग लेते हैं।

मुख्य वाद्य यंत्र :

① माँदल

② थाली

→ यह लोकनाट्य "शिव - भस्मासुर की कहानी" पर आधारित है। इसमें शिव को "राई बुड़िया" तथा पार्वती को गवरी कहा जाता है।

→ इसका सूत्रधार "कुटकुड़िया" कहलाता है। हास्य कलाकार "झटपटिया" कहलाता है।

मुख्य कहानियाँ :

1. कान - गुजरी
2. बन्जारा - बन्जारी
3. अकबर - बीरबल

→ अलग-2 कहानियों को जोड़ने के लिए बीच में नृत्य किया जाता है जिसे "गवरी की धाई" कहते हैं।

Imp

6. स्वांग :

→ ऐतिहासिक एवं पौराणिक पात्रों के कपड़े पहनकर उनका अभिनय करना स्वांग कहलाता है।

→ इसके कलाकार को "बहुरूपिया" कहा जाता है। भीलवाड़ा में लोकप्रिय है।

(217)

मुख्य कलाकार :

1. परशुराम
2. (Imp) जानकी लाल भांड (भीलवाड़ा) → इनको "Monkey Man" भी कहा जाता है।

Imp → माण्डल में (भीलवाड़ा) "चैत्र कृष्ण त्रयोदशी" को "नाहरों का स्वांग" किया जाता है।

(21)

(7) चारबैंत :

→ मूल रूप से अफगानिस्तान का लोकनाट्य है।
→ पहले यह "पश्तो भाषा" में प्रस्तुत किया जाता था।
→ राजस्थान के टोंक क्षेत्र में लोकप्रिय है
→ "नवाब कैजुल्ला खाँ (टोंक)" के समय करीम खाँ ने इसे स्थानीय भाषा में प्रस्तुत किया था।

मुख्य वाद्य यंत्र - डफ

(8) भवाई :

→ "उदयपुर संभाग" की भवाई जाति का लोकनाट्य
→ इसमें मुख्य महिला व पुरुष पात्रों को (सगीजी / सगाजी) कहा जाता है।
→ इसमें कलाकार मंच पर आकर अपना परिचय नहीं देते।
→ "शान्ता गाँधी" के नाटक "जसमल ओडण" पर भवाई लोकनाट्य किया जाता है जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है।

मुख्य कलाकार : बाघजी (केकड़ी)

→ यह एक व्यवसायिक लोकनाट्य है।

ओड जनजाति तालाब खोदने का काम करती थी।

(9) रामलीला :

→ इसे तुलसीदास जी द्वारा शुरू किया गया था।

→ बिसाऊ (झुन्झुनु) में "मूक रामलीला" होती है।

→ "अटरू (बारां)" में धनुष को भगवान राम नहीं तोड़ते बल्कि जनता द्वारा तोड़ा जाता है।

→ भरतपुर में वेंकटेश रामलीला होती है।

(10) रासलीला :

→ वल्लभाचार्य जी द्वारा प्रारम्भ किया गया था।

मुख्य केन्द्र :

कामां (भरतपुर)
फुलेरा (जयपुर)

(11) सनकादिक लीला :

मुख्य केन्द्र :

① धोसुण्डा (चित्तौड़) → आश्विन में

② बस्सी (चित्तौड़) → कार्तिक में

(12) गौर लीला :

→ आबू क्षेत्र की "गरासिया जनजाति" द्वारा

Naveen
9/19

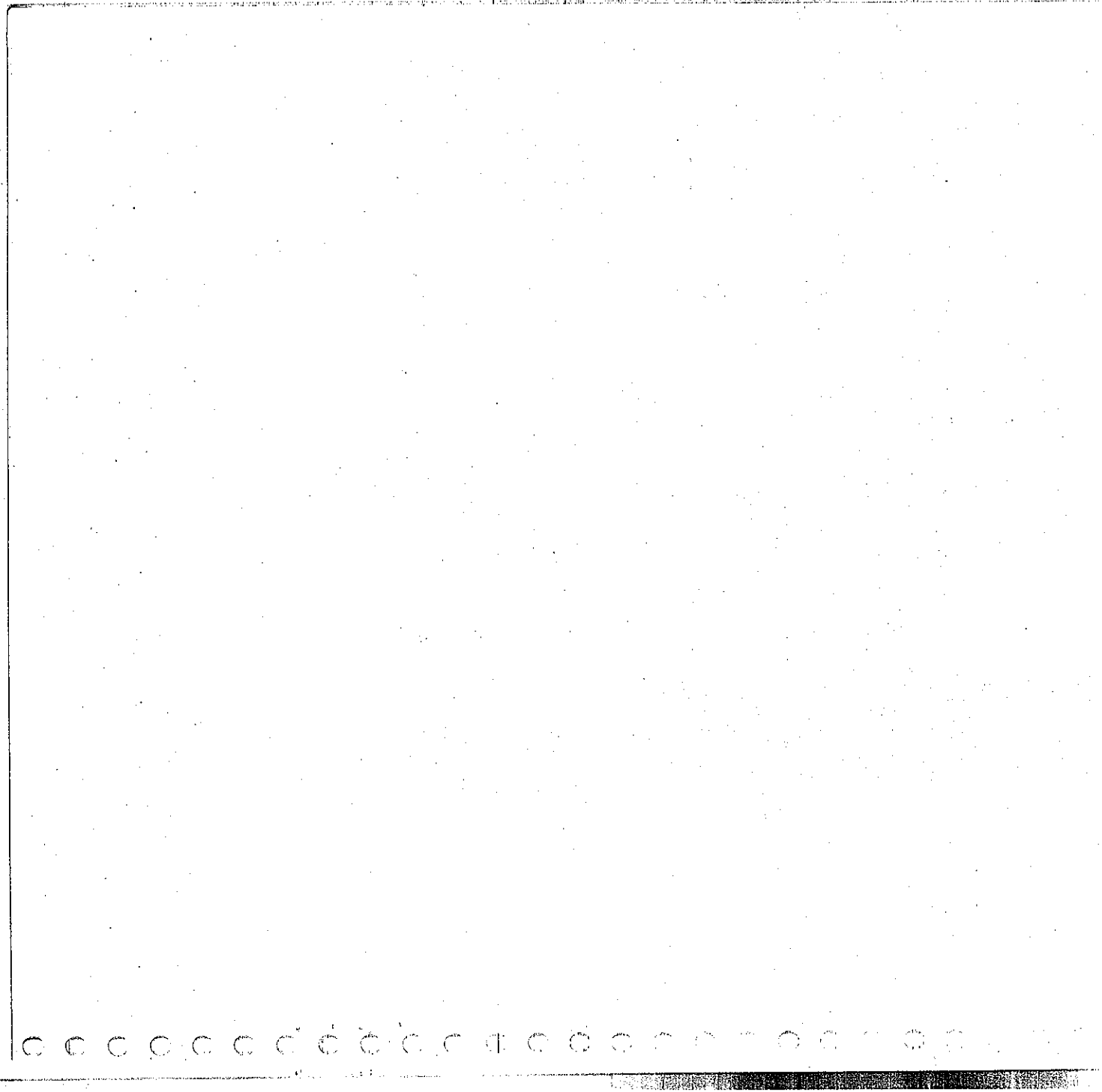

राजस्थान की जनजातियाँ

→ राजस्थान का जनजातियों की जनसंख्या की दृष्टि से भारत में 6वाँ स्थान है।

1st → M.P.

2nd → महाराष्ट्र

3rd → उड़ीसा

4th → बिहार

5th → गुजरात

→ राज० में जनजातियों की सर्वाधिक जनसंख्या – उदयपुर

जनजातियों का सर्वाधिक प्रतिशत – बाँसवाड़ा

जनजातियों की न्यूनतम जनसंख्या – बीकानेर

जनजातियों की न्यूनतम प्रतिशत – नागौर

① कंजर :

→ कंजर शब्द "काननचार" से उत्पन्न हुआ है।

→ कंजर जनजाति अधिकतर "हाड़ौती क्षेत्र" में निवास करती है।

→ कंजर जनजाति का मुख्य व्यवसाय :

अपराध करना

→ अपराध करने से पहले देवताओं से आशीर्वाद लेते हैं इसे "पाती माँगना" कहते हैं।

मुख्य देवता :

(1) 'जोगणिया माता' - "कंजरों की कुलदेवी"

(2) चौथ माता

(3) रक्तदंजी माता

(4) हनुमान जी

→ कंजर जनजाति के घरों में पीछे की तरफ खिड़की रखना अनिवार्य होता है (पुलिस से भागने के लिए)

→ "हाकम राजा का प्याला" पीने के बाद कंजर झूठ नहीं बोलते हैं।

→ मरने वाले व्यक्ति के मुँह में शराब डाली जाती है।

→ कंजर "मोर का माँस" खाते हैं।

→ इनके मुखिया को "पटेल" कहा जाता है।

(2) कथौड़ी :

→ मूल रूप से महाराष्ट्र की जनजाति है।

→ राज॰ के उदयपुर जिले में अधिक निवास करती है।

→ ये लोग खैर के पेड़ से कत्था प्राप्त करते थे इसलिए इन्हें कथौड़ी कहा जाता है।

→ कथौड़ी दूध नहीं पीते। ये शराब अधिक पीते हैं। महिलायें भी साथ में शराब पीती हैं।

→ ये लोग "बंदर का माँस" खाते हैं।

→ महिलाएँ गहने नहीं पहनती है लेकिन "टैटू" बनवाती है
(गोदना)

→ कथौड़ी एक संकटग्रस्त (विलुप्तप्राय) जनजाति है जिनके केवल 35-40 परिवार ही बचे हैं।

→ राजस्थान सरकार इन्हें मनरेगा में 100 दिन का अतिरिक्त रोजगार देती है।

इनका मुखिया : "नायक"

मुख्य देवता :

1. डूँगरदेव
2. वाघ देव
3. ग्राम देव
4. भारी माता
5. कंसारी माता

(3.) डामोर : (डूँगरपुर)

→ एकमात्र जनजाति जो वनों पर आश्रित नहीं है।

→ खेती तथा पशुपालन करते हैं।

→ डूँगरपुर जिले में अधिकतर जनसंख्या निवास करती है।

→ सीमलवाड़ा पंचायत समिति (डूँगरपुर) को डामरिया क्षेत्र कहा जाता है।

→ डामोर पुरुष एक से अधिक विवाह (**बहुविवाह**) करते हैं।
वधू मूल्य को "**दापा**" कहा जाता है (शादी के ऐवज में)

→ डामोर पुरुष भी महिलाओं की भाँति गहने पहनते हैं।

→ डामोर जनजाति की भाषा पर गुजराती भाषा का प्रभाव पड़ता है।

→ होली के समय "**चाड़िया कार्यक्रम**" किया जाता है।

डामोर जनजाति के मेले :

1. छैला बावजी का मेला – पंचमहल (गुजरात)
2. ग्यारस की रेवड़ी का मेला – डूँगरपुर

(223) Ay

→ मुखिया को "मुखी" कहा जाता है।

④ सांसी :

→ सबसे अधिक जनसंख्या भरतपुर जिले मे है।
→ एकमात्र जनजाति जो विधवा विवाह नही करती।
→ सांसी जनजाति में 2 उपजाति होती हैं
① बीजा
② माला
→ "भाखर बावजी" की कसम खाकर झूठ नहीं बोलते।

→ कूकडी रस्म :
विवाह से पहले लड़की के चरित्र की परीक्षा लेते हैं।

Ay 221 special
16/2 4H Special

⑤ गरासिया :

- सिरोही के आबू, पिण्डवाड़ा
- पाली के बाली
- उदयपुर के गोगुन्दा

} क्षेत्र में अधिक निवास करती है।

→ नक्की झील इनका पवित्र स्थान है
↓
अस्थियों का विसर्जन करते हैं

→ सफेद पशु व मोर को भी पवित्र मानते हैं
इनमें 8 प्रकार की पंचायत होती है।

(२०२५)

① मोटी न्यात → "बाबोर हाइया" } कहलाते हैं।
② नेनकी न्यात → "माडेरिया" }
③ निचली न्यात —

→ इनमें प्रेम विवाह अधिक होते हैं।
↓
सियावा (सिरोही) गाँव के गणगौर मेले में

→ विवाह के प्रकार:

① मोर बंधिया
② ताणना (पैसे देकर लाना)
③ पहरावणा (कपड़ों के बदले)
④ मेलवो (मुकलावा करना)
⑤ खेवणो (शादीशुदा महिला अपने प्रेमी के साथ शादी करे)
⑥ सेवा

खेवणो: नाता विवाह भी कहते हैं।

(२०२४)

सेवा: घर जवाई बनवाकर (शादी से पहले) काम करवाते हैं।

→ गरासिया महिलाएँ सुन्दर तथा शृंगारप्रिय होती हैं।

गरासिया पुरुष + भील महिला → भील गरासिया

गरासिया महिला + भील पुरुष → गमेती गरासिया

मुखिया: सहलोत / पालवी

→ गरासिया जनजाति की सहकारी संस्था — हेलरु

मृतक का स्मारक — हूरे

225

मेले :

① कोटेश्वर मेला - अम्बाजी (गुजरात)

② चेतर-विचितर मेला - देलबाड़ा (सिरोही)

⑥ सहरिया :

निवास :

बारां → किशनगंज
बारां → शाहबाद

→ भारत सरकार ने सहरिया जनजाति को आदिम जनजाति का दर्जा दिया है। (राज० की एकमात्र आदिम जनजाति)

→ राज० सरकार मनरेगा में 100 दिन का अतिरिक्त रोजगार (अकाल में = 250 दिन)

→ 3 प्रकार की पंचायत :

① पंचताई (पाँच (5) गाँव की पंचायत)

② एकदसिया (11 गाँव की)

③ चौरासी (84 गाँव की)

(राज० में अधिकतर गाँव 12X में हैं।)

→ चौरासी गाँव की पंचायत → वाल्मीकि मन्दिर (सीताबाड़ी) में

→ सहरिया जनजाति वाल्मीकि को अपना आदिपुरुष मानती है।

→ सहरिया जनजाति में युग्ल नृत्य नहीं होता।

→ श्राद्ध नहीं करते

→ महिलाऐं टैटू बनवाती है लेकिन पुरुष नहीं बनवा सकते

→ दहेज प्रथा नहीं है।

→ महिलाऐं घर में घूंघट करती है बाहर नहीं करती है।

→ कुल देवी – कोडिया माता

→ तेजाजी व भैरुजी की भी पूजा करते हैं।

→ लठमार होली खेलते है।

→ मंकर सक्राति पर लकड़ी के डण्डों से **लैंगी** नामक खेल खेलते है।

→ दीपावली पर हीड़ गाते हैं।

→ वर्षा ऋतु में आल्हा व लहंगी गाते हैं।

→ मुखिया : **कोतवाल**

→ इनके गाँव को → **सहरोल**
  छोटी बस्ती को → **सहराणा**

→ गाँव के बीच सामुदायिक केन्द्र होता है। जिसे ढालिया, हथाई, या बंगला कहते है।

Imp → **पेड़ों पर घर** बना कर रहते है।
  ↳ गोपना, टोपा, कोरुआ कहते हैं।

→ **"धारी संस्कार"** किया जाता है
  ↓ (मृतक का)

(227)

(7.) भील :

→ राज० की **सबसे प्राचीन जनजाति**

2nd सबसे बड़ी (1st मीणा
2nd भील
3rd गरासिया)

→ उदयपुर जिले में अधिक

→ भील शब्द की उत्पत्ति बील से हुई है।
↓ तीर - कमान

→ इनके घर को - टापरा

मोहल्ले को - फला

गाँव को - पाल

गाँव का मुखिया - पालवी / तदवी

→ पूरी भील जनजाति का मुखिया - **गमेती**

कुल देवता - **टोटम**
↓ (पेड़-पौधों को टोटम का प्रतीक मानते है।)

Imp → • पेड़-पौधों को साक्षी मानकर विवाह कर लेते हैं
↓ "**हाथीवेण्डो विवाह**"

→ बाल - विवाह नहीं होता

→ विवाह के समय दुल्हा ससुराल में "**भराडी माता**" का चित्र बनाता है
↓ विवाह की देवी

Imp → तलाक → "**छेड़ा फाड़ना**"

→ यदि कोई महिला अपने पति को छोड़कर अन्य पुरुष के साथ रहने लग जाती है तो वह पुरुष उसके पहले पति को "झगड़ा राशि" देता है।

→ केसरिया नाथ जी की केसर पीकर भील झूठ नहीं बोलते।

→ महुआ से बनी शराब पीते हैं
(पौधे)

→ स्थानान्तरित खेती करते हैं → "वालरा"

① पहाड़ी में – चिमाता
② समतल में – दजिया

→ भीलो द्वारा सामुहिक कोई भी कार्य → "हेलमो"

→ रणघोष – "कायरे - कायरे"

→ यदि कोई भील किसी घुड़वार सैनिक को मार देता → "पाखरिया" (भील को)

→ रक्त मूल्य - मौताणा (किसी के मरने पर)

→ मेले:

① वेगेश्वर मेला – डूँगरपुर
② धोटिया अम्बा मेला – बांसवाड़ा

→ भील पुरुष के कपड़े:

ठेपाड़ा / ढेपाड़ा – तंग धोती
खोयतू – धोती (सामान्य)

→ भील महिला के कपड़े:

कधाबू – महिला के कपड़े
सिंदरी – लाल रंग की साड़ी
पिरिया – पीले रंग की साड़ी (दुल्हन द्वारा)
पंरिमी – पैरों में महिलाओं द्वारा पहनी जाने वाले मोटे कड़े

(229)

(8) **मीणा :**

→ **राज. में सर्वाधिक** जनसंख्या वाली जनजाति

→ जयपुर जिले में सर्वाधिक

2 प्रकार
① जमींदार मीणा
② चौकीदार मीणा

→ प्रमुख देवता : **भूरिया बाबा**

→ "बुझ देवता" भी पूजते हैं

→ **"मोरनी मांडना"** : शादी के समय की रस्म

→ राज. की सर्वाधिक शिक्षित जनजाति

Naveen (229)

राजस्थान की चित्रकला

→ "आनन्द कुमार स्वामी" → 1916 में Rajput Paintings नाम से पुस्तक लिखी

राजस्थान + पहाड़ी (हिमाचल) चित्रकला को संयुक्त रूप से राजपूत चित्रकला कहा।

→ "रामकृष्ण दास" ने इसे "राजस्थानी चित्रकला" नाम दिया था।

→ राज० की चित्रकला को भौगोलिक व सांस्कृतिक रूप से 4 भागो में बाँटा गया

1. मेवाड़ प्रकार → चावण्ड/उदयपुर, नाथद्वारा, देवगढ़
2. मारवाड़ → जोधपुर, बीकानेर, किशनगढ़, नागौर, अजमेर, जैसलमेर
3. ढूंढाड़ → आमेर/जयपुर, अलवर, उणियारा (टोंक), शेखावाटी
4. हाड़ौती → बून्दी, कोटा।

1 मेवाड़ :

→ राज० की "चित्रकला की जन्मभूमि"

→ मेवाड़ चित्रकला के प्राचीन चित्र :

1. 1260 – तेजसिंह के समय (आहड़) – श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णि (चित्रित ग्रन्थ)
2. 1423 – मोकल के समय (देलवाड़ा) – सुपार्श्वनाथ चरित

(231)

(E) चावण्ड / उदयपुर :

→ महाराणा प्रताप के समय प्रारम्भ

→ चित्रकार : नासिरुद्दीन (ढोला-मारु का चित्र बनाया)

→ "अमरसिंह प्रथम" के समय 1605 ई० में "रागमाला" का चित्रण किया।

→ इसी समय "बारहमासा" का भी चित्रण किया गया है।

→ "जगतसिंह प्रथम" का शासन : "मेवाड़ की चित्रकला का स्वर्णकाल"

→ "चितेरो री ओबरी" (तस्वीरा रो कारखानो) का निर्माण करवाया।

साहिबदीन ने महाराणाओं के व्यक्तिगत चित्र बनाने प्रारम्भ किये।

→ संग्रामसिंह - II के समय 2 चित्र बनाये गये

① **कलीला दमना** (पंचतंत्र का अरबी अनुवाद) (विष्णु शर्मा का)

② **मुल्ला दो-प्याजा के लतीफे**

मुख्य चित्रकार :

→ नुरुद्दीन → मनोहर

→ कृपाराम → गंगाराम

→ जगन्नाथ

→ लाल - पीले रंगों का प्रयोग अधिक करते थे।

→ "कदम्ब के पेड़" का अधिक चित्रण होता था।

(231)

→ शिकार के दृश्यों में 3-D प्रभाव होता था।
(3- आयामी)

(II.) नाथद्वारा :
→ वल्लभ सम्प्रदाय का अधिक प्रभाव इसलिए कृष्णजी के चित्र अधिक बने
→ नाथद्वारा की पिछवाई चित्रकला प्रसिद्ध है।
→ केले के वृक्ष का अधिक चित्रण

(III) देवगढ़ :
→ 1680 में "द्वारिकादास चुण्डावत" के समय प्रारम्भ
→ "श्रीधर अंधारे" ने इस चित्रकला को महत्व प्रदान किया
→ "मेवाड़ + मारवाड़ + ढुंढाड़" का मिश्रण है।
→ हरे व पीले रंग का प्रयोग ज्यादा करते हैं।
→ अच्छे चित्र :
- मोती महल
- अजारा की ओबरी
} के भित्ति चित्र

② मारवाड़ चित्रकला :

(I.) जोधपुर :
→ मालदेव के समय प्रारम्भ
→ उत्तराध्ययन सूत्र नामक ग्रन्थ (जैन का) को चित्रित किया
→ चौखेलाव महल (जोधपुर) में भित्ति चित्र बनाये
→ सूरसिंह के समय वीरजी (विट्ठलदास) ने रागमाला का चित्रण किया।

233

→ जसवन्त सिंह के समय मुगल प्रभाव आ गया था।

→ **मानसिंह** का शासनकाल : जोधपुर चित्रकला का स्वर्णकाल
इस समय नाथ सम्प्रदाय से सम्बन्धित ग्रन्थों का चित्रण किया गया।

जैसे :
शिव पुराण
दुर्गा पुराण
नाथ चरित्र

→ तख्त सिंह के समय इस चित्रकला पर यूरोपीय प्रभाव आ गया

→ इस समय एच. के मूलर ने दुर्गादास राठौड़ का चित्र बनाया

मुख्य चित्रकार : शिवदास, जीतमल, अमरदास, धन्नू, किशनदास

233

विशेषताएँ :
→ लाल व पीले रंगों का प्रयोग अधिक
→ हासिये (Border-पर) में पीला रंग भरा जाता था
→ बादलों का चित्रण किया जाता था।
→ पहाड़ों का चित्रण
प्रेम कहानियों का चित्रण → **(ढोला मारू, महेन्द्र-मूमल)**

→ पुरुषों को लम्बा चौड़ा तथा महिलाओं को ठिगने कद का बनाया जाता था।

(ग) बीकानेर :

→ रायसिंह के समय चित्रकला शुरू हुई तथा **भागवत पुराण** का चित्रण किया।

→ **अनूपसिंह** का शासनकाल : बीकानेर चित्रकला का स्वर्णकाल

→ बीकानेर में 2 प्रकार की चित्रकला

① **उस्ता कला :**

→ ऊँट की खाल पर की जाने वाली चित्रकारी

→ अनूपसिंह ने उस्ता कला के लिए अली रजा व रुक्नुद्दीन को लाहौर से बुलाया।

→ हैसामुद्दीन उस्ता → उस्ता कला के लिए पद्मश्री

→ कैमल हाईड ट्रेनिंग सेन्टर (बीकानेर) में उस्ता कला सिखाई जाती है।

② **मथेरणा कला :**

→ इन्होंने बीकानेर महाराजाओं के चित्र बनाये

→ इसमें गीले पलस्तर पर चित्रकारी होती है।

- बीकानेर में इसे आला-गीला कहा जाता है
- शेखावाटी क्षेत्र में इसे पणो कहा जाता है।

NOTE: इसे **फ्रेस्को या अरायस** भी कहा जाता है।

(234)

विशेषताएँ :

→ बैंगनी, स्लेटी, बादामी रंगों का अधिक प्रयोग

→ रेत के धोरों का चित्रण, फूल-पत्तियों का चित्रण

→ पंजाबी + मुगल + दक्कनी (दक्षिण भारत) प्रभाव है।

→ हिन्दु देवी-देवताओं के चित्र **मुस्लिम** चित्रकारों द्वारा बनाये गये।

→ बीकानेर व शेखावटी के चित्रकार चित्र के साथ नाम व दिनांक लिखते थे।

कैमल महोत्सव - बीकानेर (लाडेरा)

कैमल रिसर्च सेन्टर - " (जोड़बीड़)

मथेरणा - जैन होते हैं।

(III) किशनगढ़:

→ **सावन्तसिंह** (नागरीदास) का शासनकाल : किशनगढ़ चित्रकला का स्वर्णकाल

→ वल्लभ सम्प्रदाय का प्रभाव अधिक होने के कारण भगवान श्रीकृष्ण के चित्र अधिक बनाये गये।

→ सावन्तसिंह ने अपनी प्रेमिका रसिक बिहारी को राधा के रूप में चित्रित करवाया।

→ प्रमुख चित्र:

चित्र		चित्रकार
(1) **बनी-ठनी**	—	मोरध्वज निहालचंद

- 1973 में डाक टिकट जारी
- **भारत की मोनालिसा** (एरिक डिक्सन द्वारा कहा)

मोरध्वज निहालचंद ने नागर समुच्चय नामक ग्रंथ को भी चित्रित किया था।

(2) **चाँदनी रात की गोष्ठी** → अमीरचन्द

विशेषताएँ:

→ नारी चित्रण अधिक हुआ

→ सफेद व गुलाबी रंग का प्रयोग अधिक किया गया।

→ हासिये (Margin) में गुलाबी रंग भरा जाता था।

→ कांगड़ा चित्रकला का प्रभाव

→ महिलाओं के चित्रों में नाक में **बेसरि नामक आभूषण** है।

(IV) नागौर : कीड़े (बुझे हुये) रंगों का प्रयोग
पारदर्शी कपड़े चित्रित किये जाते

(V) अजमेर : महिला चित्रकार - साहिबा

(VI) बैसलमेर : इस पर अन्य किसी शैली का प्रभाव नहीं है।
मूमल के चित्र अधिक बनाये

(3) ढूढाँड चित्रकला :

(I) आमेर/जयपुर :

→ मानसिंह के समय प्रारम्भ
→ इस समय "रज्मनामा" (महाभारत का फारसी अनुवाद) के चित्र बनाये गये

(236)

→ मिर्जा राजा जयसिंह के समय भगवान श्री कृष्ण के चित्र अधिक बने।
• सूरतखाना : सवाई जयसिंह के समय

→ ईश्वरी सिंह के समय साहिबराम ने आदमकद चित्रण प्रारम्भ किया।

→ माधोसिंह के समय पुण्डीक हवेली के भित्ति चित्र बनाये गये।

विशेषताएँ :
→ लाल - पीला व केसरिया, हरा रंग अधिक प्रयोग
→ हासिये में गहरा लाल रंग भरा जाता था।
→ मुगल साम्राज्य का सबसे अधिक प्रभाव
→ पुरुषों के चित्रों में दाढ़ी मूँछ विहिन है।
→ आदमकद चित्रण, हाथियों का चित्रण, उद्यान चित्रण भित्ति चित्रण

237

प्रमुख चित्रकार : लालजी, कुशला, रामजीदास

(II.) अलवर :

→ विनयसिंह का समय : अलवर चित्रकला का स्वर्णकाल
→ बलदेव ने गुलिस्ता नामक पुस्तक का चित्रण किया।
→ मूलचन्द → हाथीदाँत पर चित्रण
→ शिवदानसिंह के समय **कोकशास्त्र** नामक पुस्तक का चित्रण

विशेषताएँ :

→ चिकने रंगो का प्रयोग अधिक
→ हासिये में बेल-बूटे बनाये जाते
→ जयपुर + मुगल + ईरानी प्रभाव था।

① वेश्या चित्रण
② योगासन चित्रण
③ लघु चित्रण

(III.) उनियारा

कुढाँड + बून्दी चित्रकला का मिश्रण

मुख्य चित्रकार : धीमा, भीम, मीरबक्श, काशी, रामलखन

शेखावटी :

→ हवेलियों में भित्ति चित्र बनाये गये
→ नीले रंग का प्रयोग अधिक
→ यूरोपीय प्रभाव अधिक
→ जोगीदास की छतरी (जयपुरवाटी) के भित्ति चित्र जैसा नामक चित्रकार ने बनवाये।

(4) हाड़ौती चित्रकला :

(I) बूंदी :

→ सूरजन के समय प्रारम्भ
→ **उम्मेदसिंह** का समय – बूंदी चित्रकला का स्वर्णकाल
इस समय उम्मेदसिंह को जंगली सूअर का शिकार करते हुये चित्रण है।

विशेषताएँ :

→ हरे रंग का प्रयोग अधिक
→ प्रकृति चित्रण अधिक
→ मेवाड़ शैली का अधिक प्रभाव
→ बूँदी का किला अपने भित्ति चित्रों के लिए जाना जाता है।
→ केले, खजूर, सरोवर का चित्रण अधिक

मुख्य चित्रकार :

- अहमद
- साधुराम
- शमलाल
- सुरजन

मतिराम की पुस्तक रसराज पर भी चित्रण

(घ) कोटा :

→ रामसिंह के समय शुरू

→ उम्मेदसिंह का समय - स्वर्णकाल

→ वल्लभ सम्प्रदाय के प्रभाव के कारण भगवान श्री कृष्ण के चित्र अधिक

विशेषताएँ :

→ भारी सौन्दर्य का चित्रण अधिक

→ शिकार के दृश्यों का चित्रण अधिक

→ महिलाओं को पशुओं का शिकार करते हुये दिखाया

→ डालू नामक चित्रकार ने रामायण का चित्रण किया था।

राजस्थान के आधुनिक चित्रकार :

① रामगोपाल विजयवर्गीय :

→ इनके गुरु : "शैलेन्द्रनाथ डे"

→ इन्होंने "सबसे पहले चित्र प्रदर्शनी" लगाई।
→ इन्हे पद्मश्री मिला है।

② गोवर्धन लाल 'बाबा' :

→ इन्हें "भीलों का चितेरा" कहा जाता है।
प्रमुख चित्र - बारात

③ सौभाग्य मल गहलोत :

इन्हें "नीड का चितेरा" कहा जाता है।

④ परमानन्द चोयल :

"भैंसो का चितेरा"

⑤ जगमोहन माथोड़िया :

"श्वान का चितेरा"

⑥ कुन्दन लाल मिस्त्री :

→ महाराणा प्रताप के चित्र बनाये थे।
(कुन्दनलाल) इनके चित्रो को देखकर "राजा रवि वर्मा" ने महाराणा प्रताप का चित्र बनाया।

(24)

राजा रवि वर्मा : केरल के थे।
"भारतीय चित्रकला का पितामह" कहा जाता है।

(7) भूरसिंह शेखावत :

→ इन्होंने क्रांतिकारियों तथा देशभक्त नेताओं के चित्र बनवाये
→ इनके चित्रों में राजस्थानी प्रभाव अधिक होता है।

(8) देवकीनन्दन शर्मा :

→ इन्होंने प्रकृति चित्रण अधिक किया।
→ "The master of nature and Living Object" कहा जाता है।

(9) ज्योतिस्वरूप कच्छावा :

→ जंगल के चित्र ज्यादा बनाये
(Inner jungle नाम से चित्र बनाये।)

NOTE:
तिलक गीताई :

→ किशनगढ़ शैली के मुख्य चित्रकार जिन्हें हाल ही में पद्मश्री पुरस्कार मिला है।

राजस्थानी चित्रकला की विशेषताएँ :

(1.) विषय वस्तु की विविधता
वर्ण विविधता
लोक जीवन का चित्रण
भावनात्मक चित्रण
प्रकृति चित्रण
} देशकाल के अनुरूप है।

(2.) प्रकृति का मानवीकरण, भी मनुष्य के सुख-दुख से जोड़ा है।

(3.) राजस्थान की चित्रकला में गहरे तथा चटकीले रंगों का प्रयोग अधिक किया जाता था।

(4.) राजस्थानी चित्रकला में भक्ति से समन्वयित चित्र अधिक है जो मन्दिर व मठों में भित्ति चित्रों के रूप में दिखाई देते हैं

(5.) राजस्थान में सामन्ती जीवन से सम्बन्धित चित्र अधिक बनाये गये जैसे : शिकार के दृश्य, महफिल के दृश्य

(6.) राज० चित्रकला में नारी सौन्दर्य का चित्रण अधिक किया गया है।

(7.) राज० की चित्रकला में मुगल प्रभाव दिखाई देता है। जैसे : विलासिता के दृश्य, पारदर्शी कपड़े

(8.) मुगल चित्रकारों की अपेक्षा राजस्थानी चित्रकारों को अधिक छूट प्राप्त थी अत: उन्होंने जीवन के सभी पक्षों से सम्बन्धित चित्र बनाये।

243

(9) हमारी चित्रकला में प्रकृति का शृंगारिक चित्रण किया गया है जैसे रागमाला, बारहमासा

(10) चित्रों में सामन्जस्य दिखाई देता है मुख्य आकृति तथा पृष्ठभूमि दोनों एक दूसरे से जुड़े हुये होते थे।

Naveen
243

राजस्थान की हस्तकला (Handicraft)

18/2/17

① थेवा कला :

→ "कांच में सोने की कारगरी" से आभूषण बनाये जाते हैं।

→ मुख्य केन्द्र :
प्रतापगढ़

→ प्रवर्तक :
नाथू जी सोनी
("महेश राज सोनी" को पद्मश्री मिल चुका है।)

→ जस्टिन वर्डी (अंग्रेज अधिकारी) ने इसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय किया।

② टेराकोटा :

→ 'मिट्टी की पकाकर' उसके मूर्तियाँ और खिलौने बनाये जाते हैं।

मुख्य केन्द्र :

① मोलेला (राजसमन्द)
↓
यहाँ के मोहनलाल कुमावत को पद्मश्री मिला है।

② हरजी (जालौर)
↓
यहाँ पर देवताओं के घोड़े बनाये जाते हैं।

③ बडोपल (हनुमानगढ़)
↓
यहाँ से प्राचीन काल की टेराकोटा प्राप्त हुई है।
(अब नहीं बनती)

Note:- यहाँ पर "पक्षी अभ्यारण्य" स्थापित किया जा रहा है।

(245) (3) ब्लू पॉटरी :

→ चीनी मिट्टी के सफेद बर्तनों पर नीले रंग के चित्र बनाये जाते है।

→ मुख्य केन्द्र :

जयपुर

कृपाल सिंह शेखावत को इसके लिए पद्मश्री मिल चुका है।

→ इन्होंने नीले रंग के अलावा भी अन्य रंगो का प्रयोग किया।

(4) ब्लेक पॉटरी :

कोटा

(5) मीनाकारी :

→ सोने के आभूषणों में रंग चढ़ाया जाता है।

(245)

मुख्य केन्द्र :

जयपुर

→ मानसिंह (आमेर के राजा) ने लाहौर से इसके कलाकारों को बुलाया था।

→ कुदरत सिंह को इसके लिए पदमश्री मिल चुका है।

(6) रंगाई - छपाई :

(A) अजरख प्रिन्ट :

मुख्य केन्द्र : बाड़मेर

→ नीले रंग का प्रयोग अधिक (Blue रंग अधिक उपयोग लेते है)

→ ज्यामितीय अलंकरण अधिक

→ तुर्की शैली का अधिक प्रभाव

(B) मलीर प्रिन्ट :

→ मुख्य केन्द्र : बाड़मेर

→ काले व कत्थई रंग का प्रयोग अधिक

(C) सांगानेरी प्रिन्ट :

काले व लाल रंग का प्रयोग अधिक

→ मुन्ना लाल गोयल ने इसे प्रसिद्ध किया।

(d) बगरू प्रिन्ट :

→ प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया जाता है।

→ बेलबूटे (फूल-पत्तियाँ) की छपाई की जाती है।

(e) आजम प्रिन्ट :

आकोला (चित्तौड़गढ़)

(f) जाजम प्रिन्ट :

चित्तौड़गढ़

→ गाडिया लोहार की महिलाओं के कपड़े इसी प्रिन्ट में बनाये जाते हैं।

(g) बन्धेज प्रिन्ट :

मुख्य केन्द्र : जयपुर

→ इसे "Tie & die" कहा जाता है।

(h) लहरिया :

→ मुख्य केन्द्र : जयपुर, पाली

(I) चुनडी : जोधपुर

247

(7) बादले :

→ जिंक (जस्ते) के बने बर्तन जिन पर कपड़े या चमड़े की परत चढ़ायी जाती है। इनमें पानी ठण्डा रहता है।

- मुख्य केन्द्र : जोधपुर

(8) जस्ते की मूर्तियां : जोधपुर

(9) काष्ठ कला : बस्सी (चित्तौड़गढ़)

(10) रमकड़ा उद्योग : गलियाकोट (डूंगरपुर) (रमकड़े - खिलौने)

(11) खेसले : लेटा (जालौर)

(12) पाव रजाई : जयपुर

(13) दरियाँ :

→ टांकला (नागौर)

→ लवाण (दौसा)

→ सालावास (जोधपुर)

(14) गलीचे / नमदे :

→ जयपुर, टोंक

→ बीकानेर व जयपुर की जेल में कैदियों द्वारा गलीचे बनाये जाते हैं।

(15) मिरर वर्क :

जैसलमेर

(16) पेच वर्क :

शेखावाटी

(17) गोटा किनारी : खण्डेला (सीकर)

→ प्रकार

1. किरण
2. बाँकड़ी
3. लप्पा - लप्पी

(18) तारकशी के गहने :

चाँदी के पतले तारों से आभूषण बनाये जाते है।

(248)

मुख्य केन्द्र : नाथद्वारा (राजसमन्द)

(19) कोटा डोरिया : (मंसूरिया कला)

→ मुख्य केन्द्र :

कैथुन (कोटा)

मांगरोल (बारां)

→ आलिम सिंह झाला इसके कलाकार मंसूर अहमद को हैदराबाद से लेकर आया था।

इसे मंसूरिया कला भी कहते है।

NOTE: कैथुन में विभीषण का मन्दिर है।

खेल का सामान : हनुमानगढ़

खेती के औजार : नागौर

कागजी बर्तन : अलवर

कोफ्तगिरी : लोहे में सोने की कारीगिरी

मुख्य केन्द्र : जयपुर, अलवर

तहनिशा :

पीतल में सोने की कारीगरी

मुख्य केन्द्र : जयपुर, अलवर

नक्काशीदार फर्नीचर :

बाड़मेर

संगमरमर की मूर्तिया : जयपुर

अर्जुनलाल प्रजापत को इसके लिए पदमश्री मिला था।

मोजड़ी

भीनमाल
बड़गाँव } जालौर

बीड़ी उद्योग : टोंक

नसवार :

ब्यावर (अजमेर)

राजस्थान के पुरातात्विक स्थल

① पाषाण काल : (Stone Age)

① बागौर :

→ भीलवाडा जिले में कोठारी नदी के किनारे

→ उत्खननकर्ता :- "वीरेन्द्र नाथ मिश्र"

→ पशुपालन के साक्ष्य मिलते हैं।

② तिलवाडा :

→ लूणी नदी के किनारे (बाड़मेर)

→ उत्खननकर्ता :- "वीरेन्द्र नाथ मिश्र"

→ पशुपालन के साक्ष्य मिले हैं।

→ अग्निकुण्ड के साक्ष्य मिले हैं।

अन्य केन्द्र :

③ जायल } नागौर
④ डीडवाना } नागौर

⑤ बूढ़ा पुष्कर } अजमेर

(251)

① सिन्धु घाटी सभ्यता : / हड़प्पा (भारत में 1st नगरीय क्रान्ति)

(1) कालीबंगा :

→ घग्घर नदी (हनुमानगढ़) के किनारे

→ कालीबंगा - काली चूड़ियाँ

→ खोजकर्ता : "अमलानन्द घोष" (1952 में)

→ उत्खननकर्ता : (1961-69)
- बी. बी. लाल
- बी. के थापर

→ हड़प्पा / सिन्धु घाटी सभ्यता की 3rd राजस्थानी
- 1st हड़प्पा
- 2nd मोहनजोदड़ो

251

→ सिन्धु घाटी सभ्यता की गरीब बस्ती थी।

→ मकान कच्ची ईंटों के बनाये जाते थे।

→ यहाँ से अलंकृत ईंटों के साक्ष्य मिले हैं।

→ लकड़ी की नालियां बनी हुई हैं।

→ हल (जुते हुए खेत का साक्ष्य मिला है) का साक्ष्य

→ एकसाथ 2 फसलें उगाते थे।

① चना

② सरसों

→ कालीबंगा से भूकम्प के साक्ष्य प्राप्त होते हैं

→ अग्निकुंड प्राप्त हुये हैं

→ बेलनाकार मुहर प्राप्त हुई है

मेसापोटामियमा की

→ यहाँ से युग्मित शवाधान का साक्ष्य मिला है।

→ 1985 -86 में यहाँ म्यूजियम बनाया गया

19/2 Special Clas

• **सोथी सभ्यता :**

→ अमलानन्द घोष ने बीकानेर की आस-पास की सभ्यता को सोथी सभ्यता कहा है तथा इसे "हड़प्पा सभ्यता का उद्गम" स्थल बताया है।

→ इसे "कालीबंगा -I" भी कहा जाता है।

मुख्य केन्द्र :

① पूगल

② सावणिया

(2) **आहड़ सभ्यता :** (आघाटपुर, धूलकोट की सभ्यता)

→ उदयपुर जिले में आयड़/बेडच नदी के किनारे स्थित है।

→ उत्खननकर्ता :

① अक्षयकीर्ति व्यास

② रतनचन्द्र अग्रवाल

③ वीरेन्द्र नाथ मिश्र

④ हंसमुख धीरज सांकलिया (H.D सांकलिया)

→ प्राचीन नाम :

आघाटपुर

→ स्थानीय नाम :

धूलकोट

253

→ इसे "ताम्रवती नगरी" भी कहा जाता है। (तांबे गलाने की भट्टी मिली)

→ आहड़ में एक स्थान से 6-7 चूल्हे मिले हैं जिससे "संयुक्त परिवार" या सामूहिक भोजन व्यवस्था की जानकारी मिलती है।

Imp → यहाँ से "काले व लाल मृद्‌भाण्ड" (मिट्टी के बर्तन) मिले हैं जिन्हें "गोरे / कोठ" कहा जाता था।

→ यहाँ से एक बैल की मूर्ति प्राप्त हुई है जिसे "बनास का बैल" कहा गया है।

→ यहाँ से एक यूनानी सिक्का प्राप्त हुआ है जिस पर अपोलो (यूनान में सूर्य भगवान) का चित्र है।

→ यहाँ पर बिना हत्थे के जलपात्र मिले हैं जो ईरानी सभ्यता से सम्बन्ध दिखाते थे।

अन्य केन्द्र :

(1) गिलूण्ड (राजसमन्द)

(2) बालाथल (उदयपुर)

(3) ओझियाणा (भीलवाड़ा)

→ इसके उत्खननकर्ता :
बी. आर. मीणा
आलोक त्रिपाठी

→ यहाँ से "गाय की मूर्ति" (मिट्टी की) प्राप्त हुई थी।

③ महाजनपदकाल : (16) (भारत की 2nd नगरीय क्रान्ति)

महानजनपद काल को भारत की 2nd नगरीय क्रान्ति कहा जाता है।

① मत्स्य महाजनपद :

→ जयपुर तथा अलवर (द.प.भाग) जिले का भाग।
→ इसका ऋग्वेद में भी उल्लेख मिलता है।

राजधानी :
विराटनगर

(विराटनगर का महाभारत में नाम मिलता है।)

② कुरु महाजनपद :

अलवर का उत्तरी भाग

राजधानी :
इन्द्रप्रस्थ

③ शूरसेन महाजनपद :

भरतपुर तथा अलवर का पूर्वी भाग

राजधानी :
मथुरा

255

(4) शिवि जनपद :

वर्तमान चित्तौड़गढ़ जिला (मेवाड़ का भाग)

राजधानी :

माध्यमिका (नगरी)

→ महाभारत तथा पंतजलि के महाभाष्य में माध्यमिका का नाम मिलता है।

→ राजस्थान में सबसे पहले उत्खनन माध्यिका का हुआ। (1904)

उत्खनन कर्ता :

डी. आर. भण्डारकर

(5) मालव जनपद :

→ वर्तमान टोंक व जयपुर जिला

राजधानी :

नगर

→ सर्वाधिक सिक्के मालव जनपद के प्राप्त होते हैं। ये सिक्के रैढ़ नामक (टोंक) स्थान से प्राप्त हुये हैं।

"प्राचीन भारत का टाटानगर"

यहाँ का "उत्खननकर्ता" :

कैलाशनाथ पुरी

Naveen

(6) यौद्धेय जनपद :

→ वर्तमान गंगानगर व हनुमानगढ़ जिला

→ इस जनपद ने कुषाणों को भारत में आगे बढ़ने से रोका था

(7) शाल्व जनपद : अलवर

(8) अर्जुनायन जनपद :
अलवर व. सीकर (नीमका थाना वाला क्षेत्र)

(9) राजन्य जनपद :
भरतपुर

(4) मौर्यकाल :

(1) बैराठ : (शंख लिपी)

"भाब्रू अभिलेख" :-

- → बैराठ की बीजक पहाड़ी से 1837 में कैप्टन बर्ट ने खोजा
- → अशोक ने इसमें बुद्ध, संघ, धम्म का वर्णन किया है।
- → इस अभिलेख में "अशोक को मगध का राजा" कहा है।
- → इस अभिलेख में बौद्ध धर्म की पुस्तकों की जानकारी है।

(256)

→ "ह्वेनसांग" के अनुसार बैराठ में "आठ बौद्धमठ" थे। कालान्तर में इन बौद्ध मठों को हूण राजा मिहिरकुल ने तोड़ दिया था

→ जयपुर के राजा रामसिंह ने भी यहाँ पर खुदाई करवाई थी। उस समय सोने की एक छोटी सन्दूक मिली जिसमें शायद भगवान बुद्ध के अवशेष थे।

→ 1936 में दयाराम साहनी ने यहाँ पर उत्खनन किया था।

→ बैराठ की लिपी को "शंख लिपी" कहा जाता है।

(25) (मौर्य के बारे में कुछ बातें जिनका मौर्यकाल से कोई सम्बन्ध नहीं है)

मानसरोवर अभिलेख :

→ चित्तौड़गढ़ से (713 ई. का)

→ इसमें 4 मौर्य राजाओं के नाम हैं।

Ⓐ महेश्वर

Ⓑ भीम

Ⓒ भोज

Ⓓ मान

कणसवा शिवालय अभिलेख :

(कोटा, 738 ई.)

→ इसमें धवल नामक मौर्य राजा का नाम मिलता है।

⑤ मौर्योत्तर काल :

→ 150 ई. में यूनानी राजा मिनाण्डर ने माध्यमिका पर आक्रमण कर दिया था।

→ बैराठ से भी मिनाण्डर के 16 सिक्के प्राप्त होते हैं।

→ नोह (भरतपुर)

→ यहाँ से यक्ष की मूर्ति प्राप्त होती है जो "शुंगकाल" की है।

↓ इस मूर्ति को "जाख बाबा" कहा जाता है।

→ रंगमहल (हनुमानगढ़)

→ यहाँ से एक "गुरु-शिष्य की मूर्ति" मिली है जो कुषाणों के समय की है।

उत्खनन कर्ता :

डॉ० हन्नारिड (स्वीडन)

(6) गुप्तकाल :

→ समुद्रगुप्त ने बयाना में विजयस्तम्भ का निर्माण करवाया जो "राजस्थान का 1st विजयस्तम्भ" है।

→ कुमारगुप्त के सिक्के बयाना से प्राप्त हुये हैं। जो गुप्तों के एक जगह से मिले सर्वाधिक सिक्के हैं।

→ "सामन्त विष्णुवर्धन" ने बयाना में "भीमलाट" का निर्माण करवाया

- इसकी रानी चन्द्रलेखा ने यहाँ पर "ऊषा मन्दिर" का निर्माण करवाया। (कृष्ण के परिवार की महिला)
- मुबारक खिलजी ने इस मन्दिर को तोड़कर इसे ऊषा मस्जिद में बदल दिया।

→ मध्यकाल में बयाना "नील (Indigo) की खेती" के लिए जाना जाता था।

बड़वा अभिलेख : (बारां)

इसमें "मौखरि वंश" के राजाओं का वर्णन मिलता है।

→ चार चौमा के मन्दिर गुप्तकाल में बने थे।

259 → "बाडोली के शिवमन्दिर" हूण राजा मिहिरकुल ने बनवाये थे।

(7) गुप्तोत्तर काल / पूर्व मध्यकाल / राजपूत काल / त्रिपक्षीय संघर्ष का काल

(त्रिपक्षीय संघर्ष)

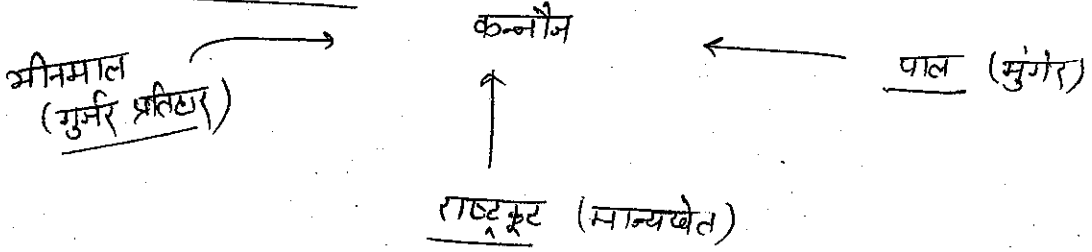

(259)

→ गुर्जर प्रतिहारों की राजधानी **भीनमाल** थी

→ चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भीनमाल की यात्रा की थी इसने भीनमाल का नाम "पी लो मो लो" बताया था।

→ कवि माघ भीनमाल के रहने वाले थे जिन्होंने "**शिशुपालवध**" नामक पुस्तक लिखी थी।

→ "**ब्रह्मगुप्त**" (भारत का न्यूटन कहा जाता है) भी भीनमाल के रहने वाले थे।

↓ पुस्तकें

✓ (1) ब्रह्मस्फुट सिद्धान्त

✓ (2) खण्ड खाद्यक

अन्य मुख्य स्थल :

① **गणेश्वर :**
- → सीकर जिले में कांतली नदी के किनारे
- → इसे "ताम्र सभ्यताओं की जननी" कहा जाता है।

② **सुनारी :**
- → झुन्झुनु जिले में कांतली नदी किनारे
- → यहाँ से लोहा प्राप्त हुआ है

③ **ईसवाल :** (उदयपुर)
- → इसे "औद्योगिक नगरी" कहा जाता था।

④ **कुराडा :** (नागौर)
- → इसे "औजारों की नगरी" कहा जाता है।

⑤ **जोधपुरा :** (जयपुर)
- → साबी नदी (जयपुर) के किनारे

⑥ **आलनिया :** (कोटा)
- → "शैल चित्र" प्राप्त हुये हैं। जिनकी खोज वी. एस. वाकणकर ने की थी

⑦ **गरदडा :** (बूंदी)
- → यहाँ से भी शैल चित्र प्राप्त हुये है।

⑧ **नलियासर :** (सांभर, जयपुर)

राजस्थान का साहित्य

भाषा का विकास

- आर्य भाषा (वैदिक संस्कृत)
  - पालि (बोलने का रूप)
    - शौरसेनी प्राकृत
      - गुर्जरी अपभ्रंश
        - राजस्थानी
          - डिंगल (पश्चिमी)
          - पिंगल (पूर्वी) (राजस्थानी + ब्रज)
        - गुजराती
      - शौरसेनी अपभ्रंश
        - हिन्दी
    - महाराष्ट्री प्राकृत
    - मागधी प्राकृत
  - संस्कृत (लिखने का रूप)

→ "उद्योतन सूरि" (जैन कवि) ने 8वीं शताब्दी में "कुवलयमाला" नामक पुस्तक लिखी
इसमें 18 भाषाओं का वर्णन है।
जिनमें मरु भाषा भी शामिल है।

(263)

→ "अबुल फजल" ने अपनी पुस्तक "आइन - ए- अकबरी" में मारवाड़ी भाषा का उल्लेख किया है।

→ जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने अपनी पुस्तक Linguistic Survey of India में (1912) राजस्थानी भाषा का वर्णन किया।

(263)

(राजस्थानी, भोजपुरी, भोटी को सरकार मान्यता देगी।)

लेखक	पुस्तक
① वज्रसेन सुरि	भरतेश्वर बाहुबली घोर (राजस्थानी की सबसे प्राचीन किताब)
② शालिभद्र सूरि	भरतेश्वर बाहुबली रास (1184) (सन्/वर्ष/साल बताने वाली सबसे प्राचीन पुस्तक)
③ नयनचन्द्र सूरि	हम्मीर महाकाव्य
④ सारंगधर	हम्मीर रासौ
⑤ जोधराज (नीमराणा के राजा चन्द्रभान के दरबार में था)	हम्मीर रासौ (अहीर वाटी भाषा में लिखी गई है) ↓ यादव कोटपूतली (जयपुर), बहरोड़ (अलवर), मुंडावर } में बोली जाती है
⑥ गिरधर आसियां	सगत सिंघ रासौ (महाराणा प्रताप के छोटे भाई शक्ति सिंह का वर्णन है।)
⑦ दलपत विजय	खुमाण रासौ (बापा रावल से लेकर राज सिंह तक का वर्णन है।)
⑧ दयाल	राणा रासौ (बापा रावल से लेकर जयसिंह तक का वर्णन है।)

	लेखक	पुस्तक
9.	नल्ल सिंह	विजयपाल रासौ (बयाना के राजा विजयपाल का वर्णन है)
10.	डूँगरसिंह	शत्रुसाल रासौ (बूंदी के राजा शत्रुसाल का वर्णन)
11.	दुरसा आढा (अकबर के दरबार में थे)	1. विरुद छहतरि (70 + 6) (प्रताप की तारीफ में 76 उपाधियों का वर्णन) (दोहे) 2. किरतार बावनी
12.	कवि कल्लोल	ढोला – मारु रा दूहा
13.	कुशललाभ (जैसलमेर के राजा हरराज के दरबार में था)	ढोला – मारु री चौपाई
14.	केशवदास गाडण (गजसिंह का दरबारी) (मारवाड़)	(1) गजगुणरूपक (गजसिंह पर) (2) अमरसिंह जी रा दूहा (बेटे अमरसिंह पर)
15.	जगजीवन भट्ट	अजीतोदय (जोधपुर के राजा अजीतसिंह का वर्णन)
16.	जग्गा खिड़िया	वचनिका राठौड़ रतनसिंह महेसदासोत री (रतन रासौ) (रतलाम का राजा था) धरमत के युद्ध में हार गया था।

लेखक	पुस्तक
(17) कृपाराम खिड़िया (सीकर के राजा लक्ष्मणसिंह के दरबारी)	राजिया रा दूहा ↓ (कृपारामजी का नौकर)
(18) खेतसी सादूं	भाषा भारथ (महाभारत का डिंगल अनुवाद)
(19) मुरारिदास (जोधपुर राजा जसवन्तसिंह-II के दरबारी)	जसवन्त जसो भूषण (अलंकारों का अधिक प्रयोग)
(20) जान कवि (न्यामत खाँ) (फतेहपुर के कायमखानी नवाब थे)	कायम रासौ
(21) श्रीधर	रणमल छन्द ↓ (ईडर का राजा)
(22) • जोगीदास	हरि पिंगल प्रबन्ध (प्रतापगढ़ के राजा हरिसिंह का वर्णन)
(23) उमरदान (इन्होंने दादूपंथी साधुओं की आलोचना की थी।) (56 के अकाल का वर्णन किया है)	अमल रा औगण दाढ़ रा दोस भजन री महिमा

आधुनिक राजस्थानी साहित्य

लेखक	पुस्तक
① सूर्यमल्ल मिश्रण (बूंदी के राजा रामसिंह-II के दरबारी)	वंश भास्कर वीर सतसई बलवन्त विलास सती रासौ छन्द मयूख राम रंजाट
② कन्हैयालाल सेठिया	पाथल और पीथल धरती धोरां री कूं कूं (कुमकुम) मिंझर (भादवे की बरसात) निर्ग्रन्थ
③ विजयदान देथा (बिज्जी)	① बातां री फुलवारी (14 भाग है) ② दुविधा (दुविधा व पहली फिल्म बनी है) ③ तीडो राव ④ मां रो बदलो ⑤ अलेखूं हिटलर ⑥ लजवन्ती ⑦ सपनप्रिया ⑧ अन्तराल

④ लक्ष्मी कुमारी चुण्डावत

(कांग्रेस अध्यक्ष रही थी)

फ्रांसिस टेफ्ट ने लक्ष्मी कुमारी चुण्डावत की जीवनी लिखी है।
↓ नाम
(From Pardah to People)

माँझल रात
कै रे चकवा बात
टाबरां री बातां
अमोलक बातां
गिर ऊँचा
ऊँचा गढ़ा

24/02/17

⑤ श्रीलाल नथमल जोशी

1. एक बिंदणी दो बींद
2. परण्योडी कुंवारी
3. धोरां री धोरी
4. आभै पटकी
5. सबड़का
6. मैं'दी, कनीर अर गुलाब

⑥ यादवेन्द्र शर्मा "चन्द्र"
(बीकानेर)
(इन्होंने राज. के सामन्ती अतीत पर किताबे लिखी थी)

1. हूं गोरी किण पीव री
2. खम्मा अन्नदाता
3. जनानी ड्योढी (दरवाजा)
4. हजार घोडो रा सवार
5. जमारो
6. तास रो घर
7. मेहन्दी के फूल

⑦ नारायण सिंह भाटी

1. मीरा
2. दुर्गादास
3. परमवीर
4. ओल्यू
5. बरसां रा डिगोड़ा (ऊंचा) डूंगर लांघिया

269

(8.) रांघेय राघव

1. घरोन्दे
2. मुर्दों का टीला (मोहनजोदड़ो पर)
3. कब तक पुकारु
4. आखिरी आवाज
5. काका

(9.) शिवचन्द्र भरतिया
(आधुनिक राजस्थानी का पहला साहित्यकार)

1. कनक सुन्दर (उपन्यास)
2. केसर विलास (नाटक)
3. विश्रान्त प्रवास (कहानी)

(10.) चन्द्र सिंह बिरकाली
(प्रकृति का चित्रण अधिक किया है)

1. लू
2. बादली
3. साँझ - बालासद
4. कह - मुकरणी

(11) जहूर खाँ मेहर

1. राजस्थानी संस्कृति रा चितराम
2. अर्जुन आकी आँख
3. धर मंजला धर कोसाँ

(12.) गौरीशंकर हीराचन्द ओझा
(रोहिड़ा, सिरोही)

1. प्राचीन लिपिमाला
2. राजपूताने का इतिहास
3. जैम्स टॉड का जीवन चरित

(13.) चन्द्रधर शर्मा "गुलेरी"

1. उसने कहा था

(14.) मणिमधुकर

1. पग फेरो
2. सफेद मेमने
3. खोजती गेट
4. आलीजा धरा आज्यो

(15.) रेवतदान चारण : 1. नेहरु ने ओलमो
2. बरखा बीनणी

(इन्होंने सामन्ती शोषण के खिलाफ लिखा था)

(16.) सत्यप्रकाश जोशी : 1. राधा - युद्ध विरोधी काव्य (महाभारत का युद्ध रोकने के लिए)
2. बोल भारमली (महिला सशक्तिकरण)

राजस्थानी साहित्य के प्रकार

① ख्यात :

संस्कृत के ख्याति शब्द से बना है जिसका अर्थ "प्रसिद्धि या लोकप्रियता" होता है।
इनसे किसी राजवंश की उपलब्धि की जानकारी मिलती है।

उदाहरण : मुण्डियार री ख्यात
→ यह पुस्तक मारवाड़ के राठौड़ वंश के बारे में है।
→ इसमें मुगल - मारवाड़ वैवाहिक संबंधों का वर्णन है।

② वात :

वात का अर्थ "कहानी" होता है।
किसी ऐतिहासिक एवं पौराणिक पात्र की कहानियों को वात कहा जाता है जिसमें उस पात्र की ~~अर्थ~~ उपलब्धियों का वर्णन होता है।

उदाहरण : पद्मनाभ → वीरम देव सोनगरा री वात

(271)

(3.) **वचनिका :**

इन ग्रन्थों में किसी महापुरुष या किसी राजवंश की उपलब्धियों का वर्णन होता है।
इन ग्रन्थों में उपभ्रंश मिश्रित राजस्थानी लिखी जाती है।

उदाहरण : अचलदास खींची री वचनिका

(4.) **दवावैत :**

राजस्थानी के वे ग्रन्थ जिनमें उर्दू एवं फारसी शब्दावलियों का प्रयोग किया जाता है, दवावैत कहलाते हैं।
इसमें किसी महापुरुष की दोहों के रुप में प्रशंसा की जाती है।

(5.) **विगत :**

राजस्थानी भाषा में लिखे गये इतिहास के ग्रन्थ जिनमें आर्थिक, सामाजिक स्थिति का भी वर्णन होता है, विगत कहलाते हैं।

Naveen (271)

राजस्थान की प्रमुख बोलियाँ

मुख्य :

मारवाड़ी	दुढांडी	मेवाती	वागड़ी	मालवी
↓	↓			
मेवाडी	हाड़ौती			
शेखावाटी	चौरासी			
	खैराडी			
	नागरचोल			

① मारवाड़ी :

→ मारवाड़ में बोले जाने वाली

→ पश्चिमी राज० में बोली जाने वाली भाषा जो मुख्यत: जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर, पाली, बाड़मेर, नागौर सिरोही, जालौर आदि जिलों में बोली जाती है।

उदाहरण : जैन साहित्य
चारण साहित्य
मीरा बाई
राजिया रा सोरठा
वैली कृष्ण रुकमणी री

② दुढांड़ी :

→ जयपुर (उत्तरी भाग को छोड़कर) टोंक, लावा, किशनगढ़, अजमेर-मेरवाड़ा का पूर्वी क्षेत्र

उदाहरण : दादूजी व उनके शिष्यों की रचनाएँ

(3.) मेवाती :

→ अलवर व भरतपुर के मेवात क्षेत्र में बोली जाने वाली

उदाहरण : चरणदासी सम्प्रदाय
लालदासी सम्प्रदाय

(4.) वागड़ी :

→ डूँगरपुर, बांसवाड़ा में

उदाहरण : संत मावजी की रचनाऐं

(5.) मालवी :

→ M.P. के मालवा क्षेत्र की भाषा

→ यह मारवाड़ी + दुढ़ाड़ी दोनों का मिश्रण है।

उपबोलियाँ :

① मेवाड़ी

→ मेवाड़ विशेषकर उदयपुर के आस-पास में बोली जाने वाली जो कि मारवाड़ी की उपबोली है।

→ कुंभा ने अपने नाटक इस भाषा में लिये थे

② शेखावाटी :

→ सीकर, झुन्झुनु के क्षेत्रों में बोले जाने वाली जो मारवाड़ी की उपबोली है

→ इस पर ढुंढाड़ी का प्रभाव भी होता है।

(3.) गोडवाड़ी :

→ मारवाड़ी की उपबोली
→ पाली व नागौर में बोली जाने वाली

(4.) देवड़ावाटी :

→ सिरोही क्षेत्र में
→ मारवाड़ी की उपबोली

हाड़ौती :

→ दुढांड़ी की उपबोली
→ क्षेत्र : कोटा, बूँदी, बारां, झालावाड़

उदाहरण : सूर्यमल्ल मिश्रण की रचनाएँ

चौरासी :

→ दुढांड़ी की उपबोली
→ शाहपुरा (द.-पश्चिमी भाग) में बोली जाती है।

खैराड़ी

→ भीलवाड़ा के शाहपुरा क्षेत्र तथा उसके समीप बूंदी के कुछ क्षेत्रों में बोली जाती है।
→ यह मारवाड़ी की उपबोली भी है जिस पर दुढांड़ी, मेवाड़ी तथा हाड़ौती का प्रभाव भी आता है।

नागरचोल :

→ दुढांड़ी की उपबोली जो सवाई माधोपुर के पश्चिमी भाग में तथा टोंक के दक्षिणी व पूर्वी भाग में बोली जाती है।

तोरावाटी :

→ ढूंढाड़ी की उपबोली जो सीकर के नीम का थाना क्षेत्र में तथा अन्तःप्रवाही नदी कांतली के अपवाह क्षेत्र में बोली जाती है।

राजावाटी : } ढूंढाड़ी की उपबोली जो जयपुर के पूर्वी भाग में
काठेड़ी : } बोली जाती है।

नीमाड़ी } मालवी की उपबोली
रांगड़ी }

Naveen (275) (History)
End